CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

2-65

गद्यकुसुम-2

प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

त्यागरायनगर * मद्रास-17

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गद्यकुसुम-2

प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

मद्रास

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

हिन्दी प्रचार पुस्तकमाला, पुष्प-[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तीसरा संस्करण :
अगस्त, 1967
5

(सर्वाधिकार स्वरक्षित)

दाम रु. 2·50

O. No. 270
मुद्रक : हिन्दी प्रचार प्रेस,
त्यागरायनगर, मद्रास-17

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

प्रकाशकीय

सभा के प्रवेशिका परीक्षा की विद्यार्थियों की रुचि और आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर यह गद्य-संग्रह तैयार किया गया है। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखकों की रचनाओं का संग्रह तैयार करते वक्त भाषा-शैली की विविधता पर भी हमारा ध्यान रहा है। उपयोगी विषयों पर सरल भाषा और रोचक शैलियों में लिखे गये निबन्धों का संकलन इसमें हुआ है। देशप्रेम, समाज-सेवा, नागरिकता, चरित्र-निर्माण, साहित्य आदि विषयों में दिलचस्पी रखना आज के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। इस संग्रह के निबन्धों से विद्यार्थियों का विषय-ज्ञान के साथ ही भाषा-ज्ञान भी बढ़ेगा, ऐसी आशा है।

हिन्दी गद्य की प्रचलित शैलियों की झाँकी दिलानेवाले इस संग्रह का नाम 'गद्य-कुसुम'-भाग 2 रखा गया है। 'गद्य-कुसुम'-1 और 'गद्य-कुसुम'-3 क्रमशः "राष्ट्रभाषा" और "विशारद" परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होंगे।

इन 'कुसुमों' की सुरभि पाठकों के मन में प्रसन्नता का संचार करेगी, ऐसी आशा है।

—प्रकाशक

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विषय-सूची

			पृष्ठ-संख्या
1.	**प्रथम दर्शन**—डा० राजेन्द्रप्रसाद	...	1
2.	**जीवन-झाँकी**—श्री हरिभाऊ उपाध्याय	...	7
3.	**टालस्टाय फ़ार्म**—महात्मा गांधी	...	13
4.	**काशी नगरी**—श्री भगवतीशरण उपाध्याय	...	23
5.	**राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद**—श्री वाल्मीकि चौधरी	...	34
6.	**अमर लेखिका स्टो**—श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	...	41
7.	**विनोबा की पद-यात्रा**—श्रीमती निर्मला देशपांडे	...	49
8.	**पौधे हमसे अधिक बुद्धिमान**—श्री पी. लक्ष्मीकांत सिंहय्य	...	56
9.	**नागरिकों के मूल अधिकार**—(संकलित)	...	64
10.	**भारत एक है**—'दिनकर'	...	70
11.	**सिंदरी**—श्री जगदीशराज मलहोत्रा	...	78
12.	**चरित्र संगठन**—बाबू गुलाबराय	...	84
13.	**नमक का दारोगा**—श्री प्रेमचन्द	...	93
14.	**हमारी ताक़त और ज़िम्मेदारियाँ**—पं० जवाहरलाल नेहरू	...	105
15.	**एक कुत्ता और एक मैना**—श्री हज़ारी प्रसाद द्विवेदी	...	116
16.	**शेक्सपीयर के गाँव में**—श्री रामवृक्ष बेनीपुरी	...	124
17.	**बन्दी** (एकांकी)—श्री 'आरिगपूडि'	...	131
	कठिन-शब्दार्थ	...	154

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

1. प्रथम दर्शन

डा० राजेन्द्र प्रसाद

गांधीजी को पहले-पहल देखकर मेरे ऊपर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। चंपारन के उपद्रव के प्रति उनके कार्यों का परिचय थोड़ा-बहुत मिल चुका था। इसी संबन्ध में मोतिहारी पहुँच चुके थे। मैं भी अपने मित्र बाबू ब्रजकिशोर के अनुरोध से वहाँ पहुँच गया। गांधीजी वहाँ जाना चाहते थे, जहाँ गोरों ने अत्याचार मचा रखा था और उनकी नोच-खसोट के चिन्ह तब तक वहाँ थे। गांधीजी को कलक्टर का आदेश मिल चुका था कि वे ज़िले के बाहर हो जाएँ। पर क्या यह संभव था? वे आज्ञा-भंग के मुक़द्दमे की प्रतीक्षा करने लगे। मैं अपने अन्य मित्रों के साथ तीसरे पहर के तीन बजे के क़रीब जब पहुँचा, तब मामला अदालत में पेश हो चुका था और सुनवाई के बाद तीन-चार दिनों के लिए स्थगित हो गया था।

जब मैं बाबू गोरखप्रसाद के घर गया, तब देखा—गांधीजी एक साधारण गाढ़े का कुरता पहने कुछ लोगों के बीच बैठे थे। मेरा पहले का उनसे कोई परिचय नहीं था। बाबू साहब ने जब मेरा परिचय कराया, तब मुझसे हँसते हुए उन्होंने कहा, "आप आ गये? आपके घर पर तो मैं हो आया।"

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गांधीजी के मेरी अनुपस्थिति में मेरे घर जाने, नौकर के अशिष्ट व्यवहार करने और उनके लौट जाने की कहानी तो मैं पहले ही सुन चुका था, इसलिए कुछ लज्जित हुआ और बोला, "जी, क्षमा कीजिये। मैं इसके लिए बड़ा लज्जित हूँ।"

"इसमें लज्जा की क्या बात है? घृणा, शंका, भय, लज्जा ये सब तो मनुष्य को बाँधनेवाले पाश हैं। इन्हें तो तोड़ना ही होगा।"

मैं चुप था, निर्निमेष उनकी ओर देख रहा था।

"कितने दिनों से वकालत करते हैं?—उन्होंने अनायास पूछा।

"थोड़े ही दिनों से।"—मैंने कहा।

"मैंने आपकी बड़ाई सुनी है। मैं आपपर भरोसा करके ही यहाँ आया हूँ। क्या आप मेरे साथ जेल जाने को प्रस्तुत हैं?"

और वे ज़ोर से हँस दिये। प्रत्युत्तर की आशा किये बिना ही उन्होंने वे सब बातें मुझे बतला दीं, जो अदालत में हुई थीं। सपने में भी मैंने यह नहीं सोचा था कि इन 'महात्मा' के पास पहुँचते ही प्रसाद-स्वरूप मेरी भी जेल जाने की नौबत आ जाएगी। यह प्रश्न एक जटिल समस्या बनकर मेरे माथे में चक्कर लगा रहा था।

जेल जाने की बात अभी हममें से किसीने सोची भी नहीं थी। वह तो एक भयंकर स्थान समझा जाता था, एक

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अपमान का स्थान, लुच्चे-गुंडे, बदमाश, चोर-डाकू और ऐसे लोगों का वह यातना-गृह समझा जाता था। वहाँ ऐसे ही लोग निर्लज्जता और अपमान के साथ पहुँचाये जाते थे, जो मानवता से दूर घृणित कर्म करते हुए दानवता के कीचड़ में अपने को रौंद लेते थे और जहाँ पहुँचने के बाद भी लोग सैकड़ों और हज़ारों रुपये ख़र्च करके या तो उन काली दीवारों के भीतर आराम पाने की चेष्टा करते थे या ज़मानत पर छुट्टी पा लिया करते थे।

इन अनजान किसानों के लिए जहाँ यह मनुष्य—जो अभी दक्षिण आफ़्रिका से इतना काम करके लौट आया है—कष्ट सहने और समय पड़ने पर जेल भी जाने को तैयार है, ऐसी दशा में मेरा घर वापिस चले जाना भी क्या उचित है? बाल-बच्चों का भी तो ध्यान है। कोई संन्यासी थोड़े ही हैं? इस प्रश्न ने मेरे लिए सांप-छछून्दर की गति पैदा कर दी।

मेरा हृदय धड़क रहा था। मेरे सामने वह दृश्य उपस्थित हो गया, जब मैं पहले-पहल माननीय गोखले से मिला था। उन्होंने थोड़े ही दिन पहले 'सर्वेन्ट्स आफ़ इंडिया सोसाइटी' की स्थापना की थी। उनकी अभिलाषा थी कि देश के कुछ चुने हुए नवयुवक देशसेवा करने के हेतु उसमें सम्मिलित हों। उन्होंने हाईकोर्ट में महेश्वरलाल बैरिस्टर द्वारा सन्देशा कहलाकर मुझे बुलाया भी था। मैं इससे आश्चर्य-चकित और प्रभावित भी था, क्योंकि मुझे पहले कभी माननीय गोखले के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गोखलेजी ने कहा, "हो सकता है, तुम्हारी वकालत खूब चले, खूब रुपये कमाओ और मौज़ से जीवन व्यतीत हो, हाथी, घोड़ा, आलीशान कोठी, नौकर-चाकर और दिखावटी सामान, जो धनी आदमियों के हुआ करते हैं, तुम्हें प्रस्तुत हो, पर नौजवानों का देश के प्रति भी कुछ कर्तव्य है, देश उनसे भी कुछ चाहता है और जब तुम पढ़ने में अच्छे हो, होनहार हो, तब तुम्हारे लिए यह कर्तव्य और अधिक हो जाता है।"

फिर कुछ ठहरकर वे अपने विषय में कहने लगे, "एक समय था, जब मेरे सामने भी यही प्रश्न उपस्थित था। घर के लोग इस आशा में थे कि जब मैं कमाऊँगा, सब सुखी होंगे। क्योंकि मैं ग़रीब घर का आदमी था। किन्तु मैंने देशसेवा का व्रत लिया और घरवाले तो इतने असंतुष्ट हुए कि कुछ दिनों तक तो मुझसे संभाषण भी त्याग दिया। पर मैं क्या करता, लगन दूसरी थी, लाचार था। कुछ दिनों बाद जब वे समझ गये, तब मुझसे खूब प्रेम करने लगे। संभव है, यही दशा तुम्हारी भी हो। पर यह विश्वास रखो कि अन्त में तुम्हें पूजेंगे। फिर कौन जानता है, यदि तुम्हारी मृत्यु हो गयी, तब उसे वे सहन कर ही लेंगे।"

और इस प्रकार अपने अन्तिम वाक्य द्वारा उन्होंने मेरे हृदय को इस तरह कँपा दिया, जैसे तानपूरे का तार छू लेने से काँप उठता है।

मुझपर उनकी बातों का बड़ा प्रभाव हुआ। वे पुनः बोले, "ठीक इसी समय उत्तर देने की कोई आवश्यकता

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

नहीं है। अच्छी तरह विचार करके मुझसे एक दिन फिर मिलो। तब पक्की सम्मति देना।"

ठीक यही परिस्थिति आज मेरी गांधीजी के सामने हुई। बाबू रामनौमी तो वहीं बैठे थे। मुझसे कहने लगे, "गांधीजी ने रात-भर जागकर वायसराय तथा नेताओं के पास भेजने के लिए पत्र लिखे हैं और रात में ही अदालत में देने का अपना बयान भी तैयार कर लिया है। मुझसे भी पूछते थे कि मेरे क़ैद हो जाने के बाद आप क्या करेंगे।"

"तब आपने क्या कहा?", मैंने उत्सुकतापूर्वक प्रश्न किया।

रामनौमी बोले, "मैंने कह दिया कि हम लोग अपने-अपने घर चले जाएँगे।"

"तब?", मैंने प्रश्न किया।

"और इस काम को यों ही छोड़ देंगे?" तब गांधीजी ने गंभीर होकर पूछा।

इसपर धरणीधर बाबू ने कुछ सोचकर उत्तर दिया, "हम जाँच का काम जारी रखेंगे और जब हमपर भी सरकार की ओर से नोटिस हो जाएगी, तब दूसरे वकील जाँच का काम जारी रखेंगे। उनको भी यदि जेल जाना पड़ा, तो उनके पीछे तीसरी टोली उस काम को अपने हाथ में लेगी।"

यह सुनकर गांधीजीको संतोष तो हुआ, पर पूरा नहीं। रात-भर सोच-विचार करने के बाद, जब दूसरे दिन हम लोग गांधीजी के साथ कचहरी जा रहे थे, तब हमारे साथ कुछ दूसरी

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भावनाएँ थीं, दूसरी उमंगें थीं। जब गांधीजी ने हम लोगों से यह सुना कि उनके जेल जाने के बाद आवश्यकता पड़ने पर हम लोग भी जेल जाने को प्रस्तुत हैं, तब उनका चेहरा खिल उठा और वे बहुत प्रसन्न हुए।

जिस दिन गांधीजी पर मुक़द्दमा चला, वे अदालत में उपस्थित थे। हम लोग भी साथ थे। सहस्रों की संख्या में ग्रामीण जनता अपने 'उद्धारक' के दर्शन के लिए उपस्थित थी। लोगों का उत्साह और उमंग दर्शनीय थी। भीड़ इतनी अधिक इकट्ठी हो गयी थी कि अदालत के द्वार तक टूट गये। अदालत में गांधीजी ने बयान दे दिया। मुक़द्दमा समाप्त हो गया। तीन-चार दिनों के बाद उनकी रिहाई भी हो गयी और उन्हें निलहे गोरों के अत्याचार के विरुद्ध जाँच करने की आज्ञा मिल गयी।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

2. जीवन-झाँकी

श्री हरिभाऊ उपाध्याय

श्री जमनालालजी बजाज वैष्णव भक्त थे। वे बराबर समय पर मन्दिर में दर्शन करने जाते और अपनी नित्य-नैमित्तिक साधना करते। परन्तु उनके हृदय में एक पीड़ा बनी हुई थी कि नारायण तो सभी नरनारियों में विद्यमान है। फिर क्या कारण है कि मनुष्य-समाज का एक अंग (हरिजन) इस प्रकार लक्ष्मीनारायण के दर्शनों से वंचित रहे? उन्हें यह सोचकर घोर वेदना होती थी कि अपने ही भाई-बंधुओं के साथ हम परायों का-सा व्यवहार करते हैं। एक अपील में उन्होंने कहा था, "यह भाग्य की विडंबना ही है कि हम गौरव-पूर्ण वंश की विरासत रखते हुए भी आज अपने ही एक तिहाई बंधुओं के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं, जैसा कि हम शायद अपने घर के पालतू पशुओं के साथ भी नहीं करते। ये हमारे बुनकर, कुम्हार, भंगी और मेहतर, जो राष्ट्र के सच्चे सेवक हैं और राष्ट्र की संपत्ति के उत्पादक हैं, जो हमें स्वच्छ और स्वस्थ रहने में सच्ची मदद करते हैं और जो जीवन के कार्यों को योग्य बनाते हैं, अपने इन हितैषियों, भोले और निरीह छोटे भाइयों को हम सामाजिक और नागरिक अधिकारों से वंचित रखते हैं। इसमें थोड़ा भी आश्चर्य नहीं, यदि कर्म-विषयक दुर्दमनीय नियमों के अनुसार

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हमसे भी दुनिया परायों और अछूतों की तरह व्यवहार करने लगे।''

बापू के वे पक्के अनुयायी थे। जब से कांग्रेस ने अस्पृश्यता-निवारण संबंधी प्रस्ताव पास किया, तभी से इस दिशा में उन्होंने काम शुरू कर दिया था। उस समय के वातावरण के अनुरूप जमनालालजी ने हरिजन बस्तियों में प्रचारक रख दिये थे और हरिजन छात्रों को छात्रवृत्तियाँ देना शुरू कर दिया था। इसका सारा ख़र्च वे अपने पास से देते थे। पर इससे उनका दिल नहीं भरता था और वे सोचा करते थे कि कोई बड़ा और ठोस काम इस दिशा में किया जाए। उन्हें सूझा कि हरिजनों को सार्वजनिक कुओं से पानी लेने की छूट होनी चाहिए और मंदिरों में देवदर्शन की इजाज़त मिलनी चाहिए। उन्होंने अपने घर से सुधार करने का निश्चय किया। परन्तु मंदिर तथा उनकी वर्धा-स्थित एक धर्मशाला की व्यवस्था ट्रस्टियों के अधीन थी। इसलिए ऐसा कोई काम बिना ट्रस्टियों की मर्ज़ी के करना अव्यावहारिक था। दूसरे, जमनालालजी मत-स्वतंत्रता को शुरू से ही मानते आये थे। इसलिए उन्होंने मंदिर के तथा धर्मशाला के ट्रस्टियों को बतलाया, "इस समय देश को हरिजनों के साथ न्याय करने की ज़रूरत है। न्याय की कम से कम माँग आज यह है कि हम उन्हें गाँव के कुएँ से पानी भरने दें, उनके बच्चों को गाँव के स्कूलों में प्रारंभिक शिक्षा की वे ही सहूलियतें दें जो हमारे अपने बच्चों को मिली हैं, और उनके लिए ईश्वर के

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मंदिर का द्वार और लोगों की तरह ही उन्मुक्त कर दें। इसलिए अपना मंदिर और धर्मशाला के कुएँ हरिजनों के लिए खुल जाने चाहिए।" पर ट्रस्टी लोग इस तरह कहाँ माननेवाले थे? जमनालालजी सतत प्रयत्न करते रहे और उन्हें समय-समय पर समझाते रहे। अन्त में उनकी धर्मशाला के ट्रस्टी राज़ी हो गये कि धर्मशाला के कुएँ हरिजनों के पानी भरने के लिए खोल दिये जाएँ। इस निर्णय के अनुसार वर्धा की 'बच्छराज धर्मशाला' के कुएँ सन् 1927 ई० में मनुष्य मात्र के लिए खुले कर दिये गये। इस तरह यह कार्य देश में पहला ही था और लोगों ने इस काम के लिए जमनालालजी के प्रयत्नों की प्रशंसा की। जब उन कुओं का उपयोग हरिजन करने लगे, तब जमनालालजी ने अपनी मालिकी के अन्य कुएँ जो बगीचों, गाँवों और खेतों में थे, खुले कर दिये। इस काम में थोड़ी-थोड़ी अड़चनें जनता द्वारा, कर्मचारियों द्वारा आयीं, पर आहिस्ते-आहिस्ते वे सब दूर हो गयीं।

जब जमनालालजी इस काम में सफल हो गये, तब अपना मंदिर हरिजनों के लिए जल्दी खोलने का प्रयत्न करने लगे। किन्तु काम जितना सरल दिखता था, उससे कहीं अधिक कठिन था। क्योंकि मंदिर के ट्रस्टी कट्टर सनातनी थे और मानते थे कि इस तरह की कल्पना तक करने में पाप लगता है। ऐसे ट्रस्टियों को प्रेम से समझाना जमनालालजी-जैसों का ही काम था। वह समय-समय पर उनको यह समझाया करते थे कि

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देश का वायुमंडल अब हरिजनों के पक्ष में है और उनके साथ में जो अन्याय अब तक हुआ है, उसके निवारण करने का यही समय है। उन्होंने मंदिर के ट्रस्टियों के नाम अपनी एक अपील में कहा, "शताब्दियों से हिन्दुओं के लिए मंदिर समस्त धार्मिक और सामाजिक आदर्श के आश्रयस्थल रहे हैं। यह उनके लिए बहुत बड़ा कलंक है कि किसी भी प्राणी को हीन भाव से देखें या सोचें या उसे नारायण की दया के अनुपयुक्त समझें। हमारी गौरवपूर्ण परम्परा, जो कि हमें अपने ऋषियों से प्राप्त हुई है, निम्न श्रेणियों में जिनमें अछूत भी सम्मिलित हैं, उत्पन्न हुए किसी भी प्राणी को अपने से हीन न समझने के लिए प्रेरित करती है। यदि आप अपने मंदिर इन अछूत कहे जानेवाले लोगों के लिए खोल दें, तो आपके कठोर कर्तव्य का पालन हो जाएगा। अगर हमने समय की पुकार के साथ काम न किया, तो अंत में पश्चात्ताप ही बाक़ी रह जाएगा।"

इस तरह वर्षों तक नीति और युक्ति से समझाने पर वे लोग इस बात को तो मान गये कि मंदिर खुलना चाहिए, पर अभी समय नहीं है; पहले दूसरों को करने दो, फिर देखा जाएगा। किन्तु जमनालालजी का आग्रह था कि अगर आप इसको ठीक समझते हैं, तो आप ही इस काम को करने के लिए सबसे पहले आगे आएँ। एक बार तो ट्रस्टियों ने यहाँ तक कह दिया कि अगर आप चाहें, तो हम लोग ट्रस्टिशिप से त्याग-पत्र दे दें और आप नये ट्रस्टी बनाकर फिर यह काम कर

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सकते हैं। क्योंकि मंदिर आपका है और ट्रस्टी भी आपके ही बनाये हैं; आप जो चाहे कर सकते हैं। जमनालालजी ने कहा कि अगर इसी तरह करना होता, तो आज तक आप लोगों को समझाने में नहीं लगा रहता। मेरी तो यह इच्छा है कि आप सब ट्रस्टी मिलकर इजाज़त दें और मंदिर खोला जाए; क्योंकि यह काम व्यक्तिगत विचारों का नहीं है। इसमें सबके सहयोग की ज़रूरत है।

इधर देश का वातावरण दिन-दिन हरिजनों के पक्ष में होता जा रहा था और जमनालालजी कुएँ खुलवाने के आंदोलन में काफ़ी आगे बढ़ रहे थे। वर्धा ज़िले के कई गाँवों में उनके प्रयत्न से बहुत-से कुएँ खुल चुके थे। अपने कार्य में उन्हें पूरी निष्ठा थी। उन्हें यह पूरा विश्वास था कि इसी प्रकार समाज का कल्याण होगा। यह सत्य-बल ही अनेक कठिनाइयों के बावजूद उन्हें अपने मार्ग में सतत प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा देता रहता था। उनके इस सेवा-व्रत के संबंध में गाँधीजी के ये उद्‌गार ध्यान देने योग्य हैं:—

"हमें न्याय के लिए लड़ते हुए तपस्या के द्‌वारा अपने पंचों को पवित्र बनाने की ज़रूरत है। यही काम जमनालालजी कर रहे हैं। इस काम में आप यदि उनका अनुकरण नहीं कर सकते, तो अपने आशीर्वाद ही दें। क्योंकि एक समय आएगा जब पुराने ख़्याल के लोग भी यह स्वीकार करेंगे कि अपने कार्यों से हिन्दू धर्म की जमनालालजी ने वह सेवा की, जिनके लिए आगे आनेवाली पीढ़ी उनका आभार मानेगी।"

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अन्त को जमनालालजी के प्रयत्नों से मंदिर के ट्रस्टियों के दिल ज़रा पिघल गये और उन्होंने उन्हें मंदिर खोलने की परवानगी भी दे दी। मंदिर की ट्रस्ट-कमेटी ने वर्धा का 'लक्ष्मीनारायण मंदिर' हरिजनों के लिए खुला करने का प्रस्ताव पास किया।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

3. टालस्टाय फ़ार्म

महात्मा गांधी

[दक्षिण आफ़्रिका में रहते समय गांधीजी ने एक आश्रम स्थापित किया था, जिसका नाम था टालस्टाय फ़ार्म। उन्हीं दिनों दक्षिण आफ़्रिका में रहनेवाले प्रवासी भारतीयों को अपना अधिकार दिलाने के लिए वे सत्याग्रह का युद्ध कर रहे थे। वह आश्रम सत्याग्रहियों के लिए प्रशिक्षण-शिबिर था। इस आश्रम का वर्णन गांधीजी के ही शब्दों में नीचे दिया जाता है।]

ज़मीन 1000 एकड़ थी। उसके एक सिरे पर एक छोटी-सी टुकड़ी थी, जिसपर एक छोटा-सा मकान भी था। फल के कुछ पेड़ थे, जिनमें नारंगी, अप्रिकाट, प्लम आदि खूब पैदा होते थे—इतनी तादाद में कि मौसम में सत्याग्रहियों के पेट भर खाने पर भी बच रहते। एक छोटा-सा झरना भी था, जिससे स्वच्छ पानी मिल सकता था। रहने के स्थान से वह कोई 500 गज़ की दूरी पर होगा। पानी कावड़ों से लाना पड़ता, ख़ासा परिश्रम भी हो जाता।

इस स्थान पर हमने वह नियम रखा कि नौकरों के द्वारा किसी प्रकार का घर या मकान बाँधने का या खेती का काम भी न लिया जाए। इसलिए पाख़ाने साफ़ करने से लेकर खाना पकाने तक के सभी काम प्रत्येक कुटुंब को स्वयं ही करना पड़ता था। कुटुंबों को रखना तो था, पर पहले ही से यह नियम बना रखा था कि स्त्रियों और पुरुषों को अलग-अलग ही रखा जाए।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इसलिए मकान भी अलग-अलग और दूर-दूर ही बनाये गये। दस स्त्रियों और साठ पुरुषों के रहने योग्य मकान बनाने का फ़ौरन निश्चय किया गया। मि. कैलनबेक के रहने के लिए भी एक मकान बनाना था और उसके साथ ही साथ एक पाठशाला के लिए भी। इनके अलावा बढ़ईख़ाना, मोचीख़ाना आदि के लिए भी एक मकान बना लेना आवश्यक था।

यहाँ पर जो लोग रहने के लिए आनेवाले थे, वे गुजरात, मद्रास, आंध्र और उत्तर भारत के थे। धर्मानुसार वे हिन्दू, मुसलमान, फ़ारसी और ईसाई भी थे। लगभग 40 तरुण, दो-तीन बूढ़े, पाँच स्त्रियाँ और 25-30 बच्चे थे, जिनमें 4-5 बालाएँ थीं।

स्त्रियों में से जो ईसाई थीं उन्हें और दूसरों को भी मांसाहार की आदत थी। मि. कैलनबेक का और मेरा अभिप्राय था कि बड़ा अच्छा हो यदि मांसाहार को स्थान न दिया जाए। पर सवाल यह था कि ऐसे लोगों को कुछ समय के लिए भी मांस छोड़ने के लिए किस तरह कहा जाए, जिन्हें जन्म ही से मांस से कोई नफ़रत न हो। मांसाहार देने से ख़र्च बेहद बढ़ जाता। फिर जिन्हें गो-मांस खाने की आदत हो, उन्हें क्या वह दिया जाए? रसोई-घर कितने हों? मेरा धर्म क्या था? इन सब कुटुंबों को द्रव्य देकर मैं मांसाहार या गो-मांस का व्यवहार करने के लिए, अप्रत्यक्ष रूप से क्यों न हो, सहायता तो कर ही रहा था। अगर मैं यह नियम कर दूँ कि मांसाहारी को सहायता नहीं मिल सकती, तब तो मुझे शुद्ध निरामिषभोजी

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लोगों के बल पर ही सत्याग्रह चलाना पड़ेगा। पर यह हो भी कैसे सकता था? युद्ध तो तमाम भारतीयों के लिए था। मैं अपना धर्म स्पष्ट रूप से समझ गया। ईसाई या मुसलमान भाई यदि गो-माँस भी माँगते, तो भी उनको मुझे वह देना ही पड़ता। मैं उनको यहाँ आने से रोक नहीं सकता।

पर प्रेम का सहायक परमात्मा है। मैंने तो सरलता-पूर्वक ईसाई बहिनों के सामने अपनी संकटापन्न दशा रखी। मुसलमान माता-पिताओं ने तो मुझे यह छुट्टी दे रखी थी कि मैं केवल निरामिष पाकशाला रखूँ। बहनों के साथ मुझे बातचीत कर लेना अभी बाक़ी था। उनके पुत्र या पति तो जेलों में ही थे। वे भी मुझे सम्मति दे चुके थे। कई बार उनके साथ ऐसे प्रसंग हम लोगों के सामने उपस्थित हुए थे। बहनों के साथ इतना निकट संबंध होने का यह पहला ही अवसर था। उनके सामने मैंने मकान संबंधी असुविधा, धनाभाव और अपने व्यक्तिगत विचार, इन तीनों बातों को रख दिया। साथ ही यह कहकर मैंने उन्हें निर्भय भी कर दिया था कि यदि वे चाहेंगी, तो मैं उन्हें गो-मांस भी दे दूँगा। बहनों ने प्रेम-भाव से यह स्वीकार कर लिया कि वे मांस नहीं मँगाएँगी!

खाना पकाने का काम बहनों को सौंप दिया गया। उनकी सहायता के लिए हममें से एक दो पुरुष भी रख दिये गये, जिनमें मैं तो अवश्य ही था। मेरी उपस्थिति छोटे-छोटे मतभेद के मामलों को यों ही भगा दिया करती थी। यह भी तय हुआ कि भोजन बिलकुल सादा हो। भोजन करने का

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

समय भी निश्चित कर दिया गया। इसके लिए पाकशाला एक ही रखी गयी। सब एक साथ ही भोजन करते। सब अपने-अपने बर्तन भी साफ़ कर लिया करते। सार्वजनिक बर्तन साफ़ करने के लिए बारियाँ मुकर्रर कर दी गयी थीं। मुझे यहाँ पर यह कह देना चाहिए कि टालस्टाय फ़ार्म बहुत दिन तक चलता रहा, पर वहाँ न तो कभी भाइयों ने मांसाहार के लिए इच्छा ज़ाहिर की और न बहनों ने। शराब, तंबाकू आदि तो पहले से बंद थे।

मैं पहले लिख चुका हूँ कि हमारा यह भी आग्रह था कि मकान बाँधने का काम हमीं-हम कर लें। राज़ तो स्वयं कैलनबेक ही थे। उन्होंने एक और यूरोपियन साथी ढूंढ़ लिया। एक गुजराती बढ़ई ने मुफ़्त सहायता देना स्वीकार किया और वही दूसरे एक बढ़ई को भी कम मज़दूरी पर तय कर ले आया। शेष मज़दूरों का काम हम लोगों ने खुद ही कर लिया। हम लोगों में जो मज़बूत और फुर्तीले बदनवाले थे, उन्होंने तो हद कर दी।

बिहारी नामक एक बढ़िया सत्याग्रही था। उसने बढ़ई का आधा काम अपने ज़िम्मे ले लिया। स्वच्छता रखना, शहर में जाकर वहाँ से सब सामान लाना आदि काम सिंह के समान बहादुर तंबि नायुडु ने अपने ज़िम्मे ले लिया।

इस टुकड़ी में एक भाई प्रागजी देसाई थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी धूप-जाड़ा नहीं सहा था। और यहाँ तो जाड़ा था, धूप थी और बारिश का मौसम था। हमने अपना

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रीगणेश तो तंबू में रहकर किया था। मकान बनकर तैयार हों तब उनमें सोएँ। क़रीब दो महीनों के अन्दर मकान तैयार हो गये। मकान टीन के थे, इसलिए उनको बनाने में कोई देरी नहीं लगी। आवश्यक आकार-प्रकार की लकड़ी तैयार मिल सकती थी। केवल नाप-नूपकर टुकड़े मात्र करना पड़ता। दरवाज़े, खिड़कियाँ आदि ज़्यादा नहीं बनाने थे, इसलिए इतने थोड़े समय में सभी मकान तैयार हो गये। पर इस काम-काज ने भाई प्रागजी की खूब ख़बर ले डाली। जेल की बनिस्बत फ़ार्म का काम ज़रूर ही अधिक सख्त था। एक दिन तो परिश्रम और बुख़ार के कारण वह बेहोश तक हो गये। पर वह यों इतनी जल्दी हारनेवाले आदमी न थे। यहाँ उन्होंने अपने शरीर को पूरी तरह मेहनत पर चढ़ा दिया; अंत में इतनी शक्ति प्राप्त कर ली कि वह सबके साथ-साथ काम करने लग गये।

यही हाल जोसफ़ रायप्पन का था। वह तो बैरिस्टर थे, पर उन्हें इस बात का अहंकार नहीं था। वह अधिक कठिन परिश्रम नहीं कर सकते थे। ट्रेन से अपना असबाब उतारकर उसे बाहर गाड़ी पर रख देना भी उनके लिए कठिन था। परन्तु यहाँ तो वह भी मेहनत पर चढ़ गये। उन्होंने वह सब यथाशक्ति कर लिया। टालस्टाय फ़ार्म पर कमज़ोर आदमी सशक्त हो गये और सभी परिश्रम के आदमी हो गये।

हाँ, तो सैर की बात! जिनको सैर करने के लिए जोहान्सबर्ग जाने की इच्छा होती, वे सप्ताह में एक या दो बार

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जाते। पर उसी दिन लौट आते। आश्रम जोहान्सबर्ग से 21 मील था। पैदल जाने के इस नियम से सैकड़ों रुपये बच गये और पैदल जानेवालों को भी लाभ हुआ। कितनों ही को तो चलने का नवीन अभ्यास हो गया। नियम यह था कि इस तरह जानेवालों को रात के दो बजे उठकर निकल पड़ना चाहिए। सब छः से सात घंटों के अंदर जोहान्सबर्ग पहुँच जाते। कम से कम समय में पहुँचनेवाले को क़रीब चार घंटे और अठारह मिनट लगते।

पाठक यह ख़याल न कर लें कि ये नियम हद से ज़्यादा कठोर थे। सभी बड़े प्रेमपूर्वक इनका पालन करते थे। बलात्कार से तो, मैं एक भी आदमी को नहीं रोक सकता था। नौजवान तो, क्या सफ़र में, और क्या आश्रम में—सभी काम हँसते-हँसते और किलकते हुए कर डालते। मज़दूरी करते समय इतना ऊधम मचाते कि उन्हें रोकते-रोकते मुश्किल हो जाती। आश्रम पर तो नियम बना लिया था कि बच्चों से उतना ही काम लिया जाए, जितना उन्हें खुश रखते हुए लिया जा सके। पर मज़ा यह कि इसके कारण कभी कम काम नहीं हुआ।

पाख़ानों की कथा समझ लेने योग्य है। आश्रम एक बहुत बड़ी बस्ती हो गयी थी, फिर भी कहीं किसीको कूड़ा-कचरा, मैला या जूठन ढूंढ़े नहीं मिल सकती थी। सभी कूड़ा-कचरा एक गड्ढे में डालकर ऊपर से मिट्टी डाल दी जाती। रास्ते में कोई पानी तक नहीं डालता था। सब पानी बरतनों

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

में एकत्र कर लिया जाता और पेड़ों में डाल दिया जाता। जूठन और साग के कचरे से सुन्दर खाद बन जाती। रहने के मकान के नज़दीक ज़मीन में एक चौरस टुकड़ा डेढ़ फुट गहरा खोद रखा था। उसीमें सब मैला गाड़ दिया जाता और ऊपर से खोदी हुई मिट्टी दबा दी जाती। जरा भी दुर्गंध नहीं आती थी। मक्खी तक वहाँ नहीं भिनभिनाती थी। मतलब यह कि किसीको यह ख़याल तक नहीं होता था कि वहाँ मैला गड़ा हुआ है। अलावा इसके खेत को भी सुन्दर खाद मिलती। अगर हम मैल का सदुपयोग करना सीख लें, तो लाखों रुपयों की खाद बचा लेंगे और स्वयं अनेक रोगों से बच जाएँगे।

अब हमारा काम यह था कि सत्याग्रही कुटुंबों को उद्यमी रखें, पैसे बचावें और अन्ततः हम स्वाश्रयी बन जाएँ। हमने सोचा कि अगर हम इतना कर गुज़रें, तो चाहे जितने समय तक लड़ सकेंगे। जूतों का ख़र्च भी तो था ही। बंद जूते पहनने से गरमी में तो बड़ी हानि होती है। सारे पैर में पसीना हो आता है और वह नाजुक हो जाता है। हमारे-जैसे आबो-हवावाले देशों में रहनेवालों को तो मोज़ों की आवश्यता ही नहीं है। हाँ, कंकड़, पत्थर, काँटा आदि से पैर की रक्षा करने के लिए हमने एक हद तक जूते को आवश्यक माना था। इसलिए हमने कंटक-रक्षक, अर्थात् चप्पल बनाने का धंधा सीखने का निश्चय किया। दक्षिण आफ़्रीका में ट्रेपिस्ट नामक रोमन कैथलिक पादरियों का एक मठ है। वहाँ पर इस तरह के

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उद्योग चलते हैं। उनमें से एक मठ में जाकर कैलनबक ने चप्पल बनाना सीख लिया, और मुझे तथा साथियों को भी सिखा दिया। इस तरह कितने ही युवक चप्पल बनाना सीख गये और हम अपने मित्र-वर्ग में उनको बेचने भी लग गये। कहने की आवश्यकता नहीं कि मेरे कई चेले इस कला में मुझसे बहुत आगे बढ़ गये।

बालक-बालिकाओं और युवकों के लिए पाठशाला तो अवश्य ही होनी चाहिए न? यह काम सबसे कठिन मालूम हुआ और अब तक पूर्णता को नहीं पहुँचा था। शिक्षा का भार ख़ासकर मि० कैलनबेक और मुझपर था। पाठशाला का समय दोपहर के बाद ही रखा जा सकता था। मज़दूरी करते-करते हम दोनों खूब थक जाते। विद्यार्थी भी ज़रूर थक जाते। अर्थात् बड़ी देर तक मारे नींद के वे भी झोंके खाते और हम भी आँखों पर पानी लगाते, बच्चों के साथ हँसी-खेल करते और उनका तथा अपना भी आलस्य भगाते। पर कई बार यह सब प्रयत्न निष्फल होता। शरीर को आराम देना ही पड़ता। किन्तु यह तो पहला और सबसे छोटा विघ्न हुआ, क्योंकि ऊँघते रहने पर भी वर्ग को तो शुरू ही रखते। किन्तु सबसे बड़ी कठिनाई तो यह थी कि तमिल, तेलुगु और गुजराती इन तीन भाषाओं के बोलनेवालों को एक साथ क्या और किस तरह पढ़ाया जाए। मातृभाषा के द्वारा शिक्षा देने का लोभ तो हमें अवश्य ही रहता था। तमिल तो मैं जानता भी था, पर तेलुगु तो क़सम खाने को भी नहीं। इस हालत में अकेला एक शिक्षक क्या-क्या कर

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सकता था? युवकों में से कुछ से शिक्षा का काम लेना शुरू किया। पर वह सफल नहीं हुआ। भाई प्रागजी का उपयोग अवश्य ही होता था। युवकों में से कई नटखट थे, और कुछ आलसी। किताबों से उनकी कभी बनती ही नहीं थी। भला, ऐसे विद्यार्थी पाठकों के पास क्योंकर जाएँ? फिर मेरा काम भी अनियमित रहता था। आवश्यकता पड़ने पर मुझे जोहान्सबर्ग जाना ही पड़ता था। यही हाल मि० कैलनबेक का था। दूसरी कठिनाई धार्मिक शिक्षा के विषय में पड़ती। पारसी लोगों को 'अवेस्ता' पढ़ने की इच्छा होती। एक खोजा बालक था। उसके पास अपने पंथ-संबन्धी एक छोटी-सी किताब थी। उसे पढ़ाने का भार उसके पिता ने मुझपर डाल रखा था। मुसलमान और फ़ारसियों के लिए तो मैंने कुछ किताबें एकत्र कीं। हिन्दू-धर्म के तत्व भी, जहाँ तक मैं उन्हें समझता था, मैंने लिख रखे थे—यह याद नहीं कि मेरे बच्चों के लिए या फ़ार्म में! अगर वे इस समय मेरे पास होते, तो मैं अपनी गति-प्रगति जानने के लिए यहाँ लिख देता। पर यों तो मैंने अपने जीवन में ऐसी कितनी ही वस्तुएँ फेंक दी हैं या जला डाली हैं। ज्यों-ज्यों मुझे इनके संग्रह करने की ज़रूरत कम मालूम होती गयी और साथ ही साथ ज्यों-ज्यों मेरा व्यवसाय बढ़ता गया, त्यों-त्यों उनका नाश ही करता गया। पर इसके लिए मुझे किसी प्रकार का पश्चात्ताप भी नहीं होता। यदि मैं ऐसा न करता, तो उनका संग्रह मेरे लिए एक भारी बोझा और ख़र्चीली चीज़ हो जाता। उनको संगृहीत करने के साधन मुझे उत्पन्न

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करने पड़ते। और यह तो मेरी अपरिग्रही आत्मा के लिए असह्य हो जाता।

पर यह शिक्षा-प्रयोग व्यर्थ नहीं साबित हुआ। लड़कों में कभी असहिष्णुता नहीं दिखाई दी। एक दूसरे के धर्म और रीति-नीति का वे आदर करना सीख गये और सभ्यता सीख गये। उद्‌यमी भी बने। आज भी उन बालकों में से जितनों को मैं जानता हूँ उनके कार्यों को देखते हुए मुझे यही मालूम होता है कि टालस्टाय फ़ार्म पर उन्होंने जो कुछ सीखा था, वह व्यर्थ नहीं गया। अधूरा सही, पर था वह विचारमय और धार्मिक प्रयोग। टालस्टाय फ़ार्म की अत्यंत मधुर स्मृतियों में से शिक्षा की स्मृति किसी प्रकार कम मधुर नहीं है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

4. काशी नगरी

श्री भगवतशरण उपाध्याय

पतितपावनी गंगा के तट पर बसी काशी बड़ी पुरानी नगरी है। इतनी प्राचीन नगरी संसार में बहुत नहीं हैं। आज से हज़ारों बरस पहले नाटे क़द के साँवले लोगों ने उस नगरी की नींव डाली। तभी वहाँ कपड़े और चाँदी का व्यापार शुरू हुआ।

वे नाटे क़द के साँवले लोग शांति और प्रेम के पुजारी थे। किसीसे लड़ते-झगड़ते नहीं थे। अपने खेत आप जोतते थे, माल बेचते-ख़रीदते थे। छोटी-छोटी नावों में माल भर-भरकर गंगा की राह दूर तक वे चले जाते, बैल-गाड़ियों में माल लादकर देश-देश की यात्रा करते थे।

एक दिन दूर पश्चिम से आकर ऊँचे क़द के गोरे लोगों ने उनकी नगरी छीन ली। ये ऊँचे लोग घोड़ों पर चढ़कर आये थे। इनके पास तीर-कमान थे, भाले-बरछे थे, फरसे और ढाल थे, बचाव के लिए टोप और कवच थे। बड़े लड़ाके थे वे। लड़ाई ही उनका पेशा था। दूर देशों से वे लड़ते ही आये थे। उनके न घर-द्वार था, न धन-दौलत थी। घोड़े की पीठ पर उनका घर-द्वार था, लड़ने के हथियार ही उनकी धन-दौलत थे। वे भला, हारते कैसे? उनके पास हारने को था ही क्या? काशी उन्होंने अनायास जीत ली। परकोटों को तोड़कर वे

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नगरी के भीतर घुस गये और नगर के मालिक बन गये। वे अपने को 'आर्य' कहते थे—श्रेष्ठ, महान!

आर्यों की अपनी जातियाँ थीं, अपने कुल-घराने थे। एक-एक जाति का एक-एक राजा होता था। उनका एक राजघराना तब काशी में भी आ जमा। आर्य तब इस देश को चारों ओर से जीतते जा रहे थे। उन्होंने पच्छिम में अनेक राज्य क़ायम किये। काशी के पास ही अयोध्या में भी तभी उनका एक राजकुल बसा। उसे राजा इक्ष्वाकु का कुल कहते थे, सूर्यवंश, जिसके पुरखे सूर्य की सन्तान माने जाते थे। काशी में चन्द्रवंश, की प्रतिष्ठा हुई। सैकड़ों बरस उस नगर पर भरत राजकुल के चन्द्रवंशी राजा राज करते रहे।

काशी में आर्यों के आने के बाद नयी चहल-पहल शुरू हुई। बाबा विश्वनाथ (शिव) की पूजा तो होती ही रही, साथ ही यज्ञ-हवन भी होने लगे; भाँति-भाँति के जानवर भी बलि दिये जाने लगे। नये प्रकार की पूजा शुरू करनेवाले उस नगर के नये राजा थे बृहद्रथ कुल के।

काशी तब आर्यों के पूरबी नगरों में से थी, पूरब में उनकी राज की सीमा। उसके पूरब का देश अपवित्र माना जाता था। आर्य लोग मंतर और झाड़-फूँक से अपने रोग-व्याधि उसी पूरबी देश की ओर भगाते थे।

आर्य लोगों के राजा कन्याओं के विवाह के लिए स्वयंवर किया करते थे। अनेक राजा बन-ठनकर आते और राज-कन्या जिसे चाहती उसे चुन लेती और उसीसे उसका ब्याह

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हो जाता। यही स्वयंवर था। क्योंकि इसमें लड़की अपना बर अपने आप चुनती थी। कभी-कभी स्वयंवर में वीरता परखने का भी इंतज़ाम होता था। जैसे रथ-दौड़, घुड़दौड़ होती और जो अपना रथ या घोड़ा सबसे आगे निकाल ले जाता, वही लड़की को ब्याहता; जैसे बड़े धनुष की डोरी चढ़ानी होती, ऊपर नाचती मछली को नीचे तेल में देखकर बाण से बेधना होता। इसी प्रकार के एक स्वयंवर में पांडव-कौरवों के पितामह भीष्म ने काशी नगरी की तीन लड़कियाँ जीती थीं।

महाभारत की लड़ाई के पहले मगध में राजा जरासन्ध ने बड़ा राज क़ायम किया। बड़े राज को साम्राज्य कहते थे। भारत का यह पहला साम्राज्य था। काशी भी उसी साम्राज्य में समा गयी। महाभारत के नरसंहार में फिर जरासन्ध और उसका पुत्र सहदेव दोनों जूझ गये। कुछ काल बाद जब गंगा की बाढ़ ने पांडवों की राजधानी हस्थिनापुर को डुबा दिया, तब पांडव इलाहाबाद ज़िले में जमुना के तीर कौशाम्बी में नयी राजधानी बनाकर बस गये। उनका राज वत्स कहलाया और काशी पर मगध की जगह अब वत्स का अधिकार हुआ।

फिर ब्रह्मदत्त नाम के राजकुल का काशी पर कब्ज़ा हुआ। उस कुल के राजा बड़े पंडित हुए। असल में उस समय ज्ञान और पंडिताई ब्राह्मणों के हाथ में आ गयी थी। ब्राह्मण पंडित ज़्यादातर पुरोहिताई करते थे; पर ज्ञान का विचार क्षत्रिय राजा लोग करने लगे थे। ऐसा विचारवान पंडित

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पंजाब में केकय राजकुल में उसी काल राजा अश्वपति था। तभी गंगा-जमुना के दोआब में राज करनेवाले पांचालों में राजा प्रवहण जैवलि ने भी अपने ज्ञान का जादू चलाया। तभी जनकपुर मिथिला में विदेहों का राजा जनक हुआ, जिसके दरबार में याज्ञवल्क्य के-से ज्ञानी महर्षि और गार्गी-जैसी विदुषी नारियाँ शास्त्रार्थ करती थीं; तभी काशी नगरी का राजा अजातशत्रु हुआ, जो आत्मा और परमात्मा के ज्ञान में अनुपम था। ब्रह्म और जीवन के संबंध पर, जन्म और मरण पर, लोक-परलोक पर तब देश में विचार हो रहे थे। इन विचारों को उपनिषद् कहते हैं, इसीसे यह काल भी उपनिषद्काल कहलाता है। तभी काशी का भी उपनिषद्काल था।

ज़माना अब बदल गया था। जैसे ब्राह्मण की जगह क्षत्रिय महान माने गये, वैसे ही कर्मकांड, पुरोहिताई और पशुबलि की जगह अमर आत्मा और जन्म-मरण पर विचार होने लगे। अहिंसा का बोलबाला हुआ। बड़े-बड़े राजकुमार अपना भोग-विलास, राजपाट छोड़, सत्य की खोज में संन्यासी हो गये। वैशाली-मिथिला के लिच्छिवियों में इसी प्रकार के साधु वर्धमान महावीर हुए, कपिलवस्तु के शाक्यों में गौतम बुद्ध। उनसे तीन-सौ साल पहले काशी का राजा अश्वसेन हुआ। पार्श्व उसीका बेटा था, बड़ा विचारवान और ज्ञानी। उसने राजपाट छोड़ जनता के कल्याण के लिए चोरी, झूठ, हिंसा और धन के ख़िलाफ़ प्रचार किया। उसीके विचारों का प्रचार कर महावीर ने जैनधर्म की बुनियाद डाली।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उन दिनों भारत में चार राज्य प्रबल हो रहे थे, जो एक-दूसरे को जीतने के लिए आपस में बराबर लड़ते रहते थे। वे थे मगध (दक्खिन बिहार), कोशल (अवध), वत्स और उज्जयिनी। कभी काशी वत्सों के हाथ में जाती, कभी मगध के और कभी कोशल के। महावीर-बुद्ध से कुछ काल पहले, पार्श्व से कुछ ही बाद कोशल-श्रावस्ती के राजा कंस ने काशी को जीतकर अपने राज में मिला लिया। उसी कुल के राजा महाकोशल ने तब अपनी बेटी कोशलदेवी का मगध के राजा बिंबिसार से ब्याह कर 'चूड़ास्नान' (दहेज) के रूप में काशी की सालाना आमदनी एक लाख हर साल अपनी बेटी-दामाद को देना शुरू किया और इस तरह काशी मगध के हिस्से में जा पड़ी। कहाँ तो काशी पवित्र और मगध अपवित्र कहलाता था, अब पवित्र काशी पर अपवित्र मगध का चंगुल पड़ा।

पर काशी के भाग्य का निपटारा यहीं नहीं हुआ। राजाओं की छीना-झपटी में आज वह एक के हाथ में थी, कल दूसरे के। राज के लोभ से मगध के राजा बिंबिसार के बेटे अजातशत्रु ने अपने पिता को भूखों मारकर गद्दी ले ली। तब विधवा बहन कोशलदेवी के दुख से दुखी उसके भाई कोशल के राजा प्रसेनजित ने काशी की आमदनी अजातशत्रु को देनी बंद कर दी। फिर तो मगध और कोशल में समर छिड़ गया। कभी काशी कोशल के हाथ में लगी, कभी मगध के हाथ। अन्त में अजातशत्रु जीत गया और काशी उसके बढ़ते हुए साम्राज्य में समा गयी। कुछ काल बाद मगध की राजधानी

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

राजगृह से उठकर गंगा और सोन के तीर पाटलिपुत्र (पटना) पर बसी, तब काशी का भाग्य फिरा।

गौतम तप के बाद गया में ज्ञान प्राप्त कर काशी के पास हिरनों के जंगल सारनाथ में आये। वहाँ तप के समय के उनके पाँच साधु-साथी थे, जो बुद्ध के तप छोड़ देने से नाराज़ होकर सारनाथ चले आये थे। उन्हीं को सबसे पहले अपने ज्ञान का उपदेश करने के विचार से बुद्ध पहले सारनाथ आये और उन्होंने अपने पहले उपदेश वहीं काशी के पास दिये। पहली बार वहाँ उन्होंने अपने धर्म के चक्के को घुमाया। उसी चक्के का रूप हमारे झंडे पर बना है। उसी सारनाथ में अशोक ने अपने स्तूप और खंभे खड़े किये। खंभे के सिंह भी हमारे झंडे के गौरव हैं। तब से देश-विदेश से बौद्ध धर्म के पंडित बराबर सारनाथ (काशी) आते रहे हैं।

मगध के राजकुल बदले। शिशुनागों के बाद नंद आये, नंदों के बाद मौर्य, मौर्यों के बाद शुंग और शुंगों के बाद कण्व। यानी क्षत्रियों के बाद उनका नाश करनेवाले शूद्र, फिर क्षत्रिय, तब ब्राह्मण, पर काशी की काया मगध से बँधी रही।

नंदों के शूद्र-शासन से काशी की गति बिगड़ चली, पर ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने उसे सहारा दिया। पर मौर्यों के अधिकार में आकर तो, उसे वह देखना पड़ा जो उसने कभी न देखा था; अशोक ने अपने अहिंसा के उत्साह में पशु-वध बंद कर दिया, वह था तो ठीक ही; पर उससे ब्राह्मणों की पुरोहिताई बंद हो गयी, यज्ञ-हवन बंद हो गये और

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ब्राह्मणों और पुराने विचारों की हिन्दू जनता में बड़ा असन्तोष फैला।

ब्राह्मणों के नेता और अशोक के कुल के राजा बृहद्रथ के सेनापति और पुरोहित पुष्यमित्र शुंग ने अपने राजा को मारकर मगध की गद्दी पर अधिकार कर लिया। तभी ब्राह्मणों के पक्ष में मनुस्मृति नाम का धर्मशास्त्र बना और संस्कृत भाषा और पुरानी पुरोहिताई का फिर एक बार बोलबाला हुआ। यज्ञ-कर्मों का फिर काशी केन्द्र हुई। बौद्धों की बग़ावत और देश के दुश्मनों से उनके मिल जाने से पुष्यमित्र ने उनके मठ और विहार जला डाले, तो काशी की महिमा बढ़ी।

कुछ काल पहले काशी की ही राह चलकर विदेशी ग्रीक-यवनों की सेना ने पाटलिपुत्र लूटने के पहले काशी को भी लूटा। फिर कुषाणों के राजा कनिष्क का इस महान नगरी पर अधिकार हुआ।

उस विदेशी चंगुल से काशी को छुड़ाया पद्मावती के भारशिव नागों ने। काशी का जितना महत्व उस काल बढ़ा, उतना कभी न बढ़ा। नाग-क्षत्रिय शिव के पुजारी थे और अपनी पीठ पर वे शिवलिंग धारण करते थे। इसीसे वे कहलाते भी 'भारशिव नाग' थे। उनके राजाओं ने बार-बार विदेशी कुषाणों से लोहा लिया; बार-बार अश्वमेध कर उन्हें हराया और जब-जब उन्होंने अश्वमेध किया, काशी की गंगा में ही उन्होंने स्नान भी किया। इस प्रकार उन्होंने काशी के गंगा-तट पर दस अश्वमेध किये, जिससे वहाँ के सबसे

ग. कु. II—3

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

प्रसिद्ध घाट का नाम ही 'दशाश्वमेध घाट' पड़ गया, जो आज तक चलता है।

नागों के बाद गुप्तों का साम्राज्य खड़ा हुआ। हूणों ने उसे तोड़ दिया। पर गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त ने उनसे मोर्चा लिया। काशी के पास ही उस राजा के खड़े किये पत्थर के खंभे पर खुदा है—"हूणैर्यस्य समागतस्य समरे दोर्भ्यां धरा कम्पिता, भीमावर्तकरस्य...."—स्कन्दगुप्त की भुजाओं के हूणों से सहसा टकरा जाने से धरती काँप उठी, भयानक आवर्त (पानी में घूमनेवाला भँवर) बन गया। इससे उस देशभक्त के देशप्रेम का पता चलता है। काशी के अनेक नागरिक उस युद्ध में लड़े होंगे।

गुप्तों के बाद भारत की राजलक्ष्मी पाटलिपुत्र से उठकर कन्नौज चली गयी। हर्षवर्धन का तब काशी पर अधिकार हुआ। पर कुछ ही काल बाद कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य ने काशी की दिग्विजय की। शंकर और मंडनमिश्र का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ यहीं हुआ था। कहते हैं कि मंडनमिश्र के आसपास ज्ञान का इतना विस्तार था कि पिंजरे में रहनेवाली उनकी शुक-सारिकाएँ भी संस्कृत बोलतीं और वेद-मंत्र पढ़ती थीं।

धीरे-धीरे कन्नौज के राजा गुर्जर-प्रतीहार हुए। तब काशी बंगाल के पालों के हाथ से निकलकर उनके अधिकार में चली गयी। और उनके बाद ही जब त्रिपुरी का कलचुरी राजा गांगेयदेव काशी का स्वामी था, तभी महमूद गजनवी के पंजाब के शासक नियाल्तगीन ने उसपर हमला कर उसे लूटा। काशी

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पर इस्लाम का वह पहला हमला था। जब तक त्रिपुरी का गांगेयदेव उस नगरी की रक्षा के लिए तैयार हुआ, तब तक नियाल्तगीन नगर को लूटकर कुछ ही घंटों में चलता बना।

जब कन्नौज के गाहरवार उत्तर भारत के राजा हुए, तब अपने पूर्वी इलाक़ों की रक्षा के लिए उन्होंने काशी को अपनी दूसरी राजधानी बनाया। उस कुल का आख़िरी राजा जयचन्द था। शहाबुद्दीन गोरी ने उसे परास्त कर काशी को बुरी तरह लूटा। काशी के मंदिर में बड़ा धन भरा था, गोरी वह सब उठा ले गया। ऊँचे भवनों के कलस-कंगूरे उसने तोड़ दिये। उसीके सेनापति बख़्तयार ने जब बंगाल जीता, तब उसकी कुछ चोटें काशी को भी राह में झेलनी पड़ी थीं।

तब से दिल्ली में मुसलमानी सलतनत क़ायम हुई। काशी उसी सलतनत के क़ब्ज़े में आयी और जब दूर के इलाक़ों पर उसकी पकड़ कमज़ोर हुई, तब जौनपुर के बादशाहों ने उसपर अधिकार कर लिया। बाबर ने दिल्ली पर अधिकार कर काशी ले ली, पर उसके बेटे हुमायूँ को देश से बाहर भगाकर शेरशाह अफ़गान ने काशी को भोगा। शेरशाह और अकबर दोनों के शासन में काशी में अमन-चैन रहा और उस नगरी ने सुख की साँस ली।

कुछ ही काल पहले काशी का जुलाहा कबीर रामानन्द का चेला हुआ था। रामानन्द के चेले हिन्दू और मुसलमान दोनों थे। दोनों धर्मों की बुराइयाँ कबीर ने बड़ी हिम्मत से

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिल खोलकर रख दीं, दोनों की अच्छाइयों का प्रचार किया। उसका जीवन इतना पवित्र, इतना उदार था कि मरने पर यह निश्चय करना कठिन हो गया कि वह हिन्दू था या मुसलमान तथा उसका दाहकर्म किया जाए या उसे दफ़नाया जाए।

अकबर के साम्राज्य में सबसे महान साधु तुलसीदास थे। उन्होंने अपनी रामायण (रामचरित मानस) काशी के ही असी घाट पर लिखी। देश के कोने-कोने में उसका प्रचार हुआ। जन-जन का मन उसके स्पर्श से पवित्र हुआ।

शाहजहाँ ने अकबर का पोता होकर भी काशी में मंदिरों का बनाना रोक दिया, पर वहाँ के महान पंडित जगन्नाथ का बड़ा सम्मान किया। इसी जगन्नाथ ने मुसलमान हो जाने पर अपनी शुद्धि के लिए पतितपावनी गंगा की स्तुति में 'गंगालहरी' लिखी, जो संस्कृत साहित्य का मधुर काव्य है।

शाहजहाँ के विजयी बेटे औरंगज़ेब ने काशी पर कुदृष्टि की, उसके मंदिर तोड़ दिये, नगर को बुरी तरह लूटा। बाबा विश्वनाथ का मंदिर मसजिद बन गया। उसकी क़ैद से भागकर शिवाजी ने साधु के रूप में काशी में दो दिन शरण ली। कुछ काल काशी पर मरहठों का भी अधिकार रहा और उसके मंदिरों के भाग फिर एक बार जगे।

मुग़लों के सम्राट शाहआलम ने जब बंगाल की दीवानी अंग्रेज़ों को सौंप दी, तब काशी कम्पनी के हाथ लगी। काशी के राजा चेतसिंह ने कम्पनी के गवर्नर जनरल हेस्टिंग्स को उसकी

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मनमानी से चिढ़कर नगर से बाहर भगा दिया। पर हेस्टिंग्स और अंग्रेज़ों का अधिकार नगर पर फिर हो गया।

सन् अठारह सौ सत्तावन की आज़ादी की लड़ाई में काशी के नागरिकों ने भी अपने हाथ के करतब दिखाये और एक दिन इसी काशी नगरी में माननीय गोखले ने कांग्रेस की विशाल महासभा का संचालन किया। आज़ादी की लड़ाई में काशी ने बार-बार बलिदान किये।

इस प्रकार काशी की नगरी ने बदलते ज़माने देखे, हमलों की धमक सुनी, तलवारों की चमक देखी। पर शस्त्र की झंकार के साथ-साथ ज्ञान की उसकी गूँज जो उठी, उसने तो दिशाओं को भर दिया। हज़ारों साल पुरानी काशी आज भी 'तीनों लोकों में न्यारी' है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

5. राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद

श्री वाल्मीकि चौधरी

सरलता और सादगी के अवतार राजेन्द्र बाबू की गिनती विश्व के इने-गिने महापुरुषों में की जाती है। उनके दैनिक कार्य-क्रम पर यदि हम दृष्टि डालें, तो पता चलेगा कि सचमुच जितने वे सरल, सीधे और मिलनसार हैं, उतने ही दया के सागर और अपने कर्तव्य-पथ पर दृढ़संकल्पी भी। भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अनन्त पुजारी और सत्य-अहिंसा के व्रतधारी राजेन्द्र बाबू के अनुरूप ही उनका दैनिक कार्यक्रम है। हमारा देश ऋषियों-महर्षियों और संतों का अवतार-स्थान रहा है, जिसकी शृंखला राजेन्द्र बाबू के जीवन तक चली आयी है।

बचपन से ही उन्हें ब्राह्म मुहूर्त में जगने की आदत रही, जिसे आज तक नियमित रूप से निबाहते आ रहे हैं। प्रातः चार बजे के बाद कभी उन्हें बिछावन पर सोये नहीं पा सकते। चार बजते-बजते राजेन्द्र बाबू हरिस्मरण करते जग जाते हैं। जिस तरह गांधीजी का प्रिय 'हे राम' था, उसी तरह राजेन्द्र बाबू का प्रिय 'राम' ही है। नित्य क्रियाकर्म से निवृत्त हो, वे कुछ लिखने-लिखाने या पढ़ने बैठ जाते हैं। स्नान के पूर्व प्रायः एक घंटा प्रतिदिन लिखाने का कार्य करते हैं। उसी समय नियमित रूप से गांधी विचार का प्रतीक, स्वराज्य का वाहक, शरीर-श्रम द्वारा 'वस्त्रस्वावलंबन' की भावना से

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सूत्रयज्ञ में लगते हुए इस युग में गाँधीजी का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनमें ऐसी वृत्ति तब से लगी है, जब से गांधीजी के साथ उनका संपर्क हुआ और जो भी उनकी छत्रछाया में रहा, उन्हें वह वृत्ति मिली तथा उसे वे मन-वचन से शरीर का संबल मानते हुए अपनाये हुए हैं।

अध्ययन के पश्चात् वैद्य तथा डाक्टरों के मतानुसार स्नान के पूर्व सरसों के तेल की मालिश कराते हैं। तेल लगवाते समय अख़बार भी पढ़ते रहते हैं। इसके बाद राजेन्द्र बाबू को आप स्नानागार में पाएँगे। जाड़े में गुनगुने गरम पानी से स्नान करते हैं तथा गर्मी में ठंडे पानी से।

इसके बाद राजेन्द्र बाबू सूत के बने चप्पल या काठ के खड़ाऊ पर पूजागृह में प्रवेश करते हैं। जिस समय वह स्नान-गृह से निकलकर पूजागृह की ओर खड़ाऊँ या सूत के चप्पल पर चलते हैं और बादामी रंग की ऊनी चादर ओढ़े रहते हैं, उस समय उनकी चाल, उनकी आकृति, उनका तेज तथा गाम्भीर्य देखते ही बनता है। कोई अनजान आदमी उन्हें देखे, तो यही कह उठेगा कि यह ऋषि किसी भावावेश में तप के लिए जा रहा है, जहाँ उनको कोई अनुभूति और ज्योति मिलेगी। और शायद उसी अनुभूति और ज्योति के बल पर उन्होंने राज्य की इतनी बड़ी सेवा की है, अपने को यहाँ तक पहुँचा दिया है। कहाँ जीरादेई और कहाँ इतने विशाल देश तथा जन-समुदाय का नायकत्व! लगभग 45 मिनट तक पूजा-पाठ में समय बिताते हैं। उनका पूजागृह राम, कृष्ण, शिव आदि

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इष्टदेवों की मूर्तियों एवं चित्रों से सुसज्जित है। सामने के चित्र में सूर्य भगवान उगते दिखाई पड़ते हैं। आसन पर बैठकर राजेन्द्र बाबू एकाग्र चित्त से ध्यानस्थ हो गायत्री-मंत्र का जप करते हैं और माला फेरते हैं। स्वयं चन्दन या टीका भाल पर नहीं लगाते, पर अपने इष्टदेवों पर धूप, दीप, मालाएँ, आरती ज़रूर चढ़ाते हैं।

इसके पश्चात् अपने परिवार के साथ नियमानुसार प्रार्थना के लिए बैठ जाते हैं और गांधी-विचार तथा आचरण के आश्रमी जीवन की साधना को लेकर रामधुन के साथ प्रार्थना करते हैं। इस प्रार्थना में 'बापू का हुआ अवतार, भारत का कर गये उद्धार' जैसा भजन मैंने वहीं और उन्हींके उल्लास और वेदनापूर्ण कंठ से सुना है। यों तो लोग जानते हैं कि राजेन्द्र बाबू को गांधीजी के प्रति कितनी श्रद्धा और भक्ति है, जिनका स्मरण कर वे बराबर विह्वल हो उठते हैं।

सीधा-सादा भोजन—इसके बाद नाश्ता आता है। नाश्ते की सामग्रियों में भूंजे की ही विशेषता रहती है। दूध के साथ थोड़ा मौसिमी फल भी रहता है। राजेन्द्र बाबू की तरह यह भूँजा अपने देश-प्रदेश का प्रतिनिधित्व करता है। नाश्ते के समय भी बचे हुए अख़बार को पढ़ लेते हैं। इसके समाप्त होते-होते ही टोपी और कोट उनके साथ दफ़्तर जाने के लिए तैयार खड़े इंतज़ार करते नज़र आते हैं। राजेन्द्र बाबू को हर सोमवार को साढ़े नौ बजे प्रधान मंत्रीजी से राजकाज के संबंध में सलाह-मशविरा तथा अन्य बातें करनी पड़ती हैं। हर

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शनिवार को क़रीब इतने ही बजे उपराष्ट्रपति से देश की समस्याओं पर तथा दर्शन-शास्त्र पर चर्चा करते हैं।

इसी प्रकार सप्ताह के शेष पाँच दिन भी अपने मंत्रिमंडल के अन्य सदस्यों से बारी-बारी से मिलने का क्रम पूर्व-निश्चित रहता है। इस तरह राजकाज के सिद्धान्तों में राजेन्द्र बाबू के विचार वे लोग जान जाया करते हैं। बारह से एक बजे तक अपने निजी सचिवों के साथ दफ़्तर-संबंधी काग़ज़ों को देखते-सुनते और उनपर हस्ताक्षर करते हुए, दोपहर के भोजन के लिए दफ़्तर छोड़कर ऊपर के अपने कक्ष में चले जाते हैं। भोजन अपने ढंग का करते हैं। जिस तरह उनका जीवन सादगी और सरलता का रूप है, उसीके अनुरूप उनका भोजन भी है। एक मध्यम वर्गीय परिवार के भोजन की कल्पना कर लीजिये, ठीक उसी तरह राष्ट्रपतिजी का भी भोजन होता है।

अहिंसा के अटल उपासक—राजेन्द्र बाबू में सबसे बड़ी खूबी जो रही है, वह यह कि वे किसीपर किसी तरह का बल-प्रयोग नहीं करते। अहिंसात्मक ढंग से लोगों की प्रवृत्ति और स्वभाव को धीरे-धीरे बदलने का प्रयोग करते हैं और प्रतीक्षा करते हैं अपने प्रयोग की सफलता की। वे इस बात का ध्यान हमेशा रखते आये हैं कि वे इस देश के प्रथम राष्ट्रपति हैं और जैसी भी परिपाटी वे चलाएँगे, वह सदा के लिए बनी रहेगी। वे जानते हैं कि देश का अपना विधान है, अपनी संस्कृति है और अपना ही नियम है, जिनको सुचारु रूप से प्रतिष्ठित करने-कराने का भी गुरुतर भार उन्हींपर है। इस गुरुतर भार को आप

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

खूबी के साथ निबाहते आ रहे हैं। भारतीय ढंग से तैयार किया हुआ भोजन अपने साथ अपने यहाँ आगत मेहमानों को भी कराते हैं। भारतीय ढंग के भोजन की तो विदेशी मेहमान भी मुक्तकंठ से प्रशंसा करने लगे हैं। इस तरह भोजन के बाद राजेन्द्र बाबू आम तौर से विश्राम ही करते हैं। नहीं तो ऐसे मेहमानों के साथ भोजन करते हैं, जिनसे कुछ बातें करना चाहते हैं। उन्होंने शरीर और स्वास्थ्य का उतना ख़याल कभी नहीं किया है, जितना देश और लोगों की भावनाओं का आदर किया है। इस तरह खाते-पीते दो-ढाई बज जाते हैं।

व्यवस्थित कार्यक्रम—तीसरे पहर को राजेन्द्र बाबू आम सार्वजनिक लोगों के लिए दो-ढाई घंटे का समय रखते हैं। उनसे वही व्यक्ति मिल सकता है, जो पहले समय निर्धारित कराया रहता है। उनसे कोई भी आदमी मिल सकता है। पर, ऐसे काम-काजों में लगे महापुरुष के समय की बहुत बड़ी क़ीमत होती है और उनके एक-एक क्षण का देश के महान एवं गंभीर कार्यों में उपयोग होता है। इसलिए समय और मिलनेवालों पर नियंत्रण होता है। इसका मतलब यह नहीं कि उनसे मिलना आम लोगों के लिए कठिन है। वे सभी तरह के लोगों से और सभी तरह के विचारवालों से मिलते हैं।

राजेन्द्र बाबू के पास इतना समय नहीं कि वे मनपसन्द पुस्तकें पढ़ लिया करें। प्रान्त के प्रधान उनकी जानकारी के लिए अपने-अपने राज्य के संबंध में सारी घटनाओं, दुर्घटनाओं, अपने प्रांतों की राजनैतिक हलचलों, प्रांत के भिन्न-भिन्न शासन-

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कार्यों की जानकारी नियमित रूप से हर पन्द्रह दिनों में भेजते रहते हैं। इसी तरह भारत के राजदूतों की अपनी-अपनी लंबी डायरी आया करती है, जिससे हमारे देश के प्रधान को उन देशों के कारनामों, हरकतों, उनके यहाँ आये व्यक्तियों और उनके द्वारा दी गयी दावतों के रूप में देश की पूरी जानकारी रहती है। इस तरह हमारे देश के प्रधान के पास काम का काफ़ी बोझ रहता है।

शाम को सात से आठ बजे तक राजेन्द्र बाबू उन काग़ज़ों और पत्रों को पढ़ जाते हैं, जिन्हें स्टेनोग्राफ़र टाइप करके उनके पास लाता है। फिर उनपर हस्ताक्षर करते हैं और तब वे बाहर जाते हैं। बिना पढ़े किसी भी काग़ज़ पर हस्ताक्षर नहीं करते। कितनी ही जल्दबाज़ी क्यों न हो, ऐसा कभी भी नहीं करते कि नहीं पढ़े जाने की वजह से हस्ताक्षर के बग़ैर कोई कागज़ रह गया हो और डाक से नहीं गया हो। इस उम्र में भी उनकी काम करने की पद्धति और तेज़ी में तनिक भी कमी नहीं आयी है। जो भी उनके काम के संपर्क में आया होगा, वह भली-भाँति जान गया होगा कि राजेन्द्र बाबू कितने परिश्रमी हैं।

रात्रि के आठ बजे दफ़्तर से उठते और शयन-कक्ष में आते हैं। उसी समय बिहार तथा मद्रास के कुछ प्रमुख अख़बार उनके पास पहुँच जाते हैं और उन्हें नियमपूर्वक देखते हैं। इसी बीच रात्रिकाल का अल्प भोजन किया करते हैं, जिसमें केवल दूध ही रहा करता है तथा कभी-कभी एक-आध

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फुलका। इतने में रात के नौ बजते हैं। रेडियो से खबरें सुनते हैं, जिसके समाप्त होते-होते बिस्तर पर लेट जाते हैं और तुरन्त गहरी नींद में सो जाते हैं। राजेन्द्र बाबू को नींद पर भी ज़बरदस्त क़ाबू है। सोने और उठने का अन्तर कम ही क्यों न हो, पर अपने मन में नियत किये हुए समय पर ही उठ जाते हैं।

इस तरह उनके दैनिक कार्यक्रम और समय का अधिक भाग काग़ज़-पत्रों के पढ़ने, राजकाज में लगे लोगों से मिलने, उलझन-भरी समस्याओं को सुलझाने तथा आम लोगों से मिलने में ही व्यतीत होता है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6. अमर लेखिका स्टो

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

पाँच बच्चों की एक माँ ने, जब उसके छठा बच्चा हुआ था अपनी भाभी को एक पत्र लिखा था, "भाभी, जब तक बच्चा रात को मेरे पास सोता है, तब तक मैं कोई काम नहीं कर सकती, पर मैं करूँगी ज़रूर। अगर ज़िन्दा रही तो दासत्व प्रथा के ख़िलाफ़ ज़रूर लिखूँगी।"

अमरीका में उन दिनों गुलामी की प्रथा ज़ोरों पर थी। बेचारे नीग्रो लोगों को नरकतुल्य यातनाएँ सहनी पड़ती थीं। जानवरों की तरह उनकी ख़रीद और बिक्री की जाती थी। माँ बच्चों से अलग की जाती थी, पति पत्नी से, पिता पुत्र-पुत्रियों से। गुलामों की इस दुर्दशा को देखकर श्रीमती हैरियट एलीज़बेथ स्टो का दिल पिघल गया और उन्होंने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली कि इस दासत्व-प्रथा पर अवश्य लिखूँगी।

एक बार श्रीमती स्टो नें लिखा था, "अगर मेरे समुद्र में डूबने के साथ-साथ गुलामी की प्रथा के तमाम पाप और अत्याचार भी डूब जाएँ, तो मैं समुद्र में डूबकर प्राण देने को भी तैयार हो जाऊँगी।"

रविवार का दिन था। श्रीमती स्टो गिरजाघर गयी हुई थीं और वह धर्मोपदेश सुन रही थीं कि एक साथ उनके मन में पुस्तक प्रारंभ कर देने की प्रेरणा उत्पन्न हुई और उन्होंने पहला

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अध्याय वहीं पर बैठे-बैठे लिख डाला। फिर उन्होंने वह अध्याय अपने बच्चों को सुनाया। सुनकर बच्चों की आँखों से आँसू टप-टप गिरने लगे। इतने में श्रीमती स्टो के पतिदेव भी आ गये। बच्चों को रोते हुए देखकर वे आश्चर्यचकित रह गये। समझ में नहीं आया कि माजरा क्या है। तब श्रीमती स्टो ने वह अध्याय पति को भी सुनाया और वे भी रोने लगे। इस प्रकार प्रारंभ हुआ उस महत्वपूर्ण ग्रंथ का, जिसने आगे चलकर संसार में अक्षय कीर्ति प्राप्त की, जिसका अनुवाद शीघ्र ही संसार की तेईस भाषाओं में हो गया और जिसकी लाखों कापियाँ जनता के हाथों तक पहुँच गयीं। इस पुस्तक का नाम है 'अंकल टाम्स केबिन' अर्थात्—'टाम काका की कुटिया।'

इस पुस्तक ने हज़ारों-लाखों आदमियों को रुलाया और हज़ारों आदमियों को गुलामी की प्रथा का घोर विरोधी बना दिया। औरतें बर्तन साफ़ करते समय आपस में बातचीत करतीं, "बहन, तुमने 'टाम काका की कुटिया' पढ़ी है? बड़ी हृदयबेधक है।" मज़दूर बोझा ढोते समय कहते, "बड़ी भयंकर पुस्तक है! पढ़कर तबीयत दहल जाती है।" क्या सड़क पर, क्या बाजार में और क्या होटलों में, सर्वत्र इसीकी चर्चा थी। इस किताब ने लोगों के हृदय में आग-सी लगा दी। वे दक्षिणी रियासतों से, जहाँ गुलामी की प्रथा प्रचलित थी, घोर घृणा करने लगे।

दरअसल इस एक पुस्तक ने गुलामी-प्रथा के उच्छेद के लिए जो कार्य किया, वह किसी पुस्तक ने अभी तक नहीं किया

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

था। उत्तरी और दक्षिणी रियासतों में इसने युद्ध करा दिया और गुलामी प्रथा को जड़-मूल से नष्ट ही करा दिया। सन् 1863 ई० में जब श्रीमती स्टो अमेरिका के पार्लिमेंट-भवन में गयीं और उनका परिचय प्रेसिडेंट लिंकन से कराया गया, तो लिंकन ने, जो क़द के काफ़ी ऊँचे थे, श्रीमती स्टो से हाथ मिलाते हुए कहा, "क्या इसी छोटी-सी महिला ने वह महान युद्ध करा दिया ?"

हैरियट एलीज़बेथ का जन्म 14 जून सन् 1811 को संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के लिचफ़ील्ड नामक स्थान में हुआ था। ये अपने माता-पिता की सातवीं सन्तान थीं। हैरियट को अधिक दिनों तक मातृस्नेह प्राप्त नहीं हुआ। जब ये कुल चार वर्ष की थीं, इनकी पूज्य माता का स्वर्गवास हो गया। इसलिए इनके लालन-पालन का भार पड़ा इनकी बहन कैथराइन पर, जो उस समय पंद्रह वर्ष की थीं। कैथराइन सुशिक्षित थीं और उन्होंने एक स्कूल को क़ायम कर रखा था। हैरियट को उन्होंने अपने स्कूल में ही पढ़ाया और आगे चलकर इसी स्कूल में यह छोटी बहन भी अध्यापिका बन गयी।

सन् 1823 में हैरियट के पिता एक धार्मिक विद्यालय के प्रधान बनकर सिनसिनाटी नामक नगर को गये और उनके साथ वे दोनों बहनें भी गयीं। बड़ी बहन का विचार एक कन्या-महाविद्यालय क़ायम करने का था और हैरियट अपनी बहन की सहायिका के रूप में वहाँ गयी थीं। विद्यालय के साहित्यिक जीवन में हैरियट खूब भाग लेती थीं। स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छोटे-छोटे लेख भी लिखती थीं। दो-चार कहानियाँ और स्केच भी उन्होंने लिखे थे और अपनी जीजी की मदद से भूगोल की एक किताब भी बना डाली थी।

पिताजी के धार्मिक विद्यालय में एक अध्यापक थे, जिनका नाम था कैलबिन एलिस स्टो। 6 जनवरी सन् 1836 को हैरियट का विवाह मि० स्टो के साथ हुआ और तब से वे श्रीमती स्टो के नाम से प्रख्यात हुईं। दुर्भाग्यवश मि० स्टो का स्वास्थ्य खराब रहा करता था और आमदनी भी उनकी थोड़ी ही थी। इसलिए श्रीमती स्टो को बहुत चिन्ताग्रस्त रहना पड़ता था और कभी-कभी ख़ाने-पीने का भी कष्ट हो जाता था। इसी कारण पतिव्रता स्टो को लेख लिखकर कुछ कमाना पड़ता था। इस प्रकार अपने पति की आर्थिक सहायता भी वे करती थीं।

सन् 1843 ई० में 'मे फ़्लवर' नाम से उनकी कहानियों और स्केचों का संग्रह प्रकाशित हुआ। सन् 1862 में उनकी अमर पुस्तक 'टाम काका की कुटिया' छपकर जनता के सम्मुख आयी। किन-किन कठिनाइयों में श्रीमति स्टो को अपना साहित्यिक कार्य करना पड़ा था, इसका अन्दाज़ निम्नलिखित बातों से लग सकता है।

उन्हें घर-गृहस्थी का सारा काम—बर्तन साफ़ करना, कपड़े धोना, कपड़े सीना, भोजन बनाना, सामान ठीक-ठिकाने रखना इत्यादि खुद ही करना पड़ता था। खुद ही वे किवाड़ों पर रंग करती थीं; तकिये, गिलाफ़, रजाई सीती थीं।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और तो और, पति के जूतों की भी सिलाई वे खुद ही कर लेती थीं। एक बार वे अपने लिए कोई कपड़ा काट रही थीं कि उनकी एक पड़ोसिन ने कहा, "कोई नमूना भी तुम्हारे सामने है कि यों ही कपड़ा काटती जाती हो?" श्रीमती स्टो ने उत्तर दिया, "बहन, मेरा ख़याल है कि अपनी शकल तो मैं जानती ही हूँ।"

पतिदेव हिब्रू, ग्रीक, लैटिन तथा अरबी के ग्रंथ पढ़ा करते थे और विद्यालय में बाइबिल पढ़ाया करते थे। अपनी पत्नी से प्रसन्न होकर एक बार उन्होंने कहा था, "तुम्हारी-जैसी स्त्री दुनिया में थोड़े ही मिल सकती है! भला, कौन औरत ऐसी होगी, जो इतनी परिश्रमशील हो और इतनी किफ़ायतदार, जिनकी भाषण-शक्ति इतनी प्रबल हो, पर जो कभी डाँट-फटकार न बतलावे, जिसमें इतनी माधुर्य हो और साथ ही इतनी दृढ़ता!"

इसका उत्तर श्रीमती स्टो ने बड़ी मधुरतापूर्वक दिया, "अगर तुम पहले से मेरे प्रिय न होते, तो ज़रूर ही तुम्हारे गुणों पर मुग्ध होकर मैं तुम्हारे प्रेम में फँस गयी होती।"

श्रीमती स्टो में मातृत्व काफ़ी था। बच्चों की सेवा-शुश्रूषा करते हुए अपने जीवन को खपा देने में वे अपना गौरव मानती थीं। स्कूल के दिनों की अपनी एक सहेली को उन्होंने चिट्ठी में लिखा था, "बहन, मुझे तो अपने छः बच्चों की देखभाल और उनका पालन-पोषन करने में बड़ा आनन्द आता है। इच्छा होती है कि इसी प्रिय कार्य को करते-करते बूढ़ी

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हो जाऊँ, अपना जीवन बिता दूँ। मैं चाहती हूँ कि कभी तुम यहाँ आकर इन बच्चों के बीच में मुझे देखो। मेरी सारी चिंताओं और विचारों के वे केन्द्र हैं और यदि वे कहीं दूसरी जगह चले जाएँ, तो मेरे जीवन के लिए रह ही क्या जाए? ये बच्चे ही मेरे कार्यक्षेत्र हैं और डरती-कांपती हुई इन्हींकी मैं सेवा किया करती हूँ।"

सन् 1859 में सिनसिनाटी नगर में हैज़े का प्रकोप हुआ और एक दिन में ही 150 आदमियों की मृत्यु हो गयी, जिनमें एक बच्चा श्रीमती स्टो का भी था। पतिदेव स्वास्थ्य-सुधार के लिए कहीं दूर गये हुए थे और वे बेचारी अकेली ही बच्चों की देखभाल कर रही थीं। वात्सल्यमयी माता के उस दुख का अनुमान ही किया जा सकता है। जिन दिनों श्रीमती स्टो पुत्रशोक के वज्राघात से पीड़ित थीं और जिन दिनों उनकी गोद का बच्चा दूध पीता था, उन्हीं दिनों मातृ-हृदय की असीम करुणा से प्रेरित होकर उन्होंने उस अमर पुस्तक की रचना की थी। पुस्तक के फ़ारम जब छप-छपकर आते थे, तो वे उन्हें अपने पति और बच्चों को सुनाती थीं। सब बैठकर एक साथ पवित्र आँसू बहाते थे। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि 'टाम काका की कुटिया' ने आगे चलकर असंख्य पाठक-पाठिकाओं को रुलाया। पुस्तक की सफलता का अन्दाज़ इसीसे लगाया जा सकता है कि पुस्तक के छपते ही उसकी तीन लाख प्रतियाँ एक साथ बिक गयीं और आठ प्रेस इसी अकेली पुस्तक के छापने में लगे हुए थे!

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अमेरिका के प्रसिद्ध लेखकों और कवियों ने श्रीमती स्टो के पास बधाई की चिट्ठियाँ भेजीं। इंग्लैंड के सुप्रसिद्ध लेखक डिकिन्स, मेकाले, किंग्सले, लार्ड कार्लाइल इत्यादि ने उनका अभिनन्दन किया। इंग्लैंड में पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि एक साल में इसकी डेढ़ लाख प्रतियाँ बिक गयी थीं। पेरिस में इसके आधार पर एक ड्रामा लिखा गया और खेला गया। यह आठ अंकों में समाप्त हुआ था और जनता इसे रात के डेढ़ बजे तक देखती रही और रोती रही।

फ्रेंच, जर्मन, रशियन, जापानी, चीनी, हिन्दी इत्यादि भाषाओं में इस उपन्यास के अनुवाद हुए। पुस्तक के प्रकाशित होने के चार महीने बाद श्रीमती स्टो को 10 हज़ार डालर (तीस हज़ार रुपये) का एक चेक मिला और तब उन्होंने अपने पति को लेकर पहली बार यूरोप की यात्रा की। यूरोप से लौटकर उन्होंने एक दूसरी पुस्तक लिखी 'टाम काका की कुटिया की कुंजी।' इस ग्रंथ में उन्होंने अकाट्य प्रमाणों द्वारा अपनी कहानी की सत्यता सिद्ध की थी। श्रीमती स्टो ने और भी कई ग्रंथ लिखे, जिनमें मुख्य ये हैं—श्रीमती ड्रेड, ए टेल आफ़ दि डिसमल स्वैम्प, दि मिनिस्टर्स वूइंग।

श्रीमती स्टो ने धार्मिक कविताओं का एक संग्रह भी प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त वे 'अट्लांटिक मंडली', 'इण्डिपेण्डेण्ट', 'क्रिश्चियन यूनियन' इत्यादि पत्रों में लेख भी लिखा करती थीं। उनके भाई इन पत्रों में सहायक संपादक का कार्य करते थे और इन दोनों भाई-बहनों की साहित्य-सेवा

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वास्तव में आदर्श थी। सन् 1863 में पतिदेव ने अपने अध्यापन कार्य से छुट्टी ले ली। श्रीमती स्टो का एक पुत्र कैप्टन फेडरिक बीचर स्टो युद्ध में वीरतापूर्वक लड़ा था और बहुत घायल हो गया। स्नेहमयी माता ने अपने पुत्र के स्वास्थ्य-लाभ के लिए फ़्लोरिड़ा में एक कोठी ख़रीदी और वहाँ उसके साथ रहीं। सन् 1886 में श्रीमती स्टो के पति का देहान्त हो गया। इसके बाद दस वर्ष तक वे जीवित रहीं, पर अब इस सती-साध्वी विधवा का जीवन सर्वथा एकान्तमय था। पहली जुलाई सन् 1896 को 85 वर्ष की उम्र में वे स्वर्ग सिधारीं। अंडोवर नामक स्थान में पति की समाधि के पास ही उनकी समाधि बनी हुई है।

वह दिन हमें अच्छी तरह याद है, जब रेल में बैठे-बैठे हमने 'टाम काका की कुटिया' पढ़ी थी और पुस्तक से मुँह ढंककर आँसू बहाये थे, जिससे साथ के यात्री रोने का कारण न पूछ बैठें। यदि जीवन में कभी अमरीका-यात्रा का अवसर मिला, तो दो श्मशानों की तीर्थ-यात्रा हम अवश्य करना चाहते हैं, एक तो एमर्सन की समाधि और दूसरा, इस आदर्श दम्पति श्रीमान और श्रीमती स्टो की समाधियाँ।

वह सौभाग्यपूर्ण दिन कब आएगा, जब हमारी मातृभाषा में भी श्रीमती हैरियट एलीज़बेथ स्टो-जैसी लेखिकाएँ उत्पन्न होंगी?

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

7. विनोबा की पद-यात्रा

श्रीमती निर्मला देशपांडे

रात बीतने को थी, लेकिन सुबह नहीं हो पायी थी। सुबह की प्रार्थना में ईशावास्योपनिषद् का पाठ हो रहा था। तीर की गति से आगे बढ़ते हुए बापू के आत्मज को देखकर लगा, जैसे नोखाली की अधूरी यात्रा पूरी की जा रही हो।

नित्यक्रम के अनुसार प्रातःकाल चार बजते ही सेवापुरी-आश्रम से हमारी यात्रा आरंभ हुई। चौदह मील की दूरी पर 'भदोही' में हमारा पहला पड़ाव था। विनोबाजी के चलने की गति बहुत ही तेज़ है और मेरी आराम की ज़िन्दगी का श्रम से परिचय केवल पुस्तकों से ही है। कल्पना और विचारों की दुनिया में भले ही मैं श्रमनिष्ठ और कष्टसहिष्णु होऊँ, फिर भी वास्तविक जगत में मेरी स्थिति विपरीत थी। लेकिन सोचा, इन दो दुनिया की दूरी मिटाने के लिए ही तो मैं यहाँ आयी हूँ।

हमारे यात्री-दल में कुछ पुराने अनुभवी पथिक और कुछ मुझ-जैसे नौसिखुए थे। युनेस्को में काम करनेवाली दक्षिण अमरिका की एक बहन, एक फ्रेंच पत्रकार महिला और सेवाग्राम की विद्या बहन मेरे समान ही नयी बहनें थीं। इसलिए पड़ाव पर पहुँचते ही हमें किसीकी भी हालत कुछ करने लायक़ न रही। किन्तु दूसरी तरफ यात्री-दल के मृदु और गौतम-जैसे

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छोटे बच्चे फ़ौरन काम में जुट पड़े। विनोबाजी के लोकनागरी लिपि के टाइपराइटर पर दोनों मज़े में हाथ चला देते हैं।

नित्यकर्म के अनुसार शाम को कताई, प्रार्थना और प्रवचन का कार्यक्रम आरंभ हुआ। कताई के बारे में विनोबाजी ने कहा, "बच्चा बोलने से नहीं, देखने से समझ जाता है। इसलिए बापू हम बच्चों को सबक़ लिखाने के लिए हर रोज़ सूत कातते थे। गांधीजी को याद करने से ही हम अपना जीवन सुखी बना सकते हैं।"

'चारों ओर रिश्वत, काला बाज़ार आदि चल रहा है, सारे समाज का नैतिक स्तर गिर गया है।'—आजकल हर जगह यही बात सुनाई दे रही है। विनोबाजी के पास आनेवाले अधिकांश लोग उन्हें यही बताया करते हैं; लेकिन विनोबाजी तो कहते हैं, "मैंने पवनार से बनारस तक हज़ार मील की यात्रा की, लेकिन मुझे तो आज तक भी एक दुर्जन नहीं मिला।"

मुझे महाभारत का एक क़िस्सा याद आ गया। एक सभा हो रही थी। उसमें धर्मराज को एक भी दुर्जन नहीं मिला और उसी सभा में दुर्योधन को एक भी सज्जन नहीं मिला। मेरे मन में सवाल उठा—'तो क्या इसका मतलब यह है कि हम सारे दुर्योधन बन गये हैं और इसलिए चारों ओर हमें दुर्जन ही दुर्जन दिखाई दे रहे हैं?' लेकिन सवाल उठते ही मैंने विनोबाजी का जवाब सुना, "मानव का हृदय शुद्ध है, लेकिन आज की समाज-रचना बिगड़ी हुई है। पैसे का महत्व बढ़ गया है। हर कोई कांचन के मृगजल को देखकर उसके पीछे

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दौड़ रहा है। लेकिन यदि मनुष्य को सत्य वस्तु का भान कराया जाए और उसे अपने अन्दर की छिपी हुई अच्छाई को बाहर लाने का मौक़ा दिया जाए, तो अच्छाई फ़ौरन प्रकट होगी। भूदान-यज्ञ के द्वारा यही कार्य हो रहा है।"

इसके बाद विनोबाजी ने एक हृदयस्पर्शी घटना सुनायी—"एक ग़रीब किसान, जिसके पास कुल डेढ़ बीघा ज़मीन थी, मेरे पास आया और दान देने लगा। मैंने कहा, 'तुम खुद ग़रीब हो, दान मत दो', तो वह रो पड़ा। उससे दान दिये बग़ैर रहा नहीं जाता था। इतना महान यज्ञ शुरू हुआ है और उसमें अपनी आहुति अर्पण किये बग़ैर चले जाना, उसका भारतीय हृदय, भला, कैसे मान सकता था? वह ग़रीब है तो क्या हुआ? क्या उसे सुदामा का तंडुल अर्पण करने का भी हक़ नहीं था? आख़िर उसकी भक्ति देखकर मैंने उसका दान-पत्र ले लिया। तब वह खुश हुआ। ऐसे कई क़िस्से हुए हैं। उनका स्मरण ही दिल को पवित्र बना देता है।........" आख़िरी वाक्य बोलते समय विनोबाजी की आवाज़ में कुछ कम्पन-सा हुआ, उनकी आँखें सजल हो गयीं। कुछ रुककर उन्होंने फिर ग्रामीणों से कहना शुरू किया, "भारत में दो धाराएँ निरन्तर बहती रही हैं। जहाँ गंगा और यमुना की जल-धाराएँ हैं, वहाँ प्राचीन काल से लेकर आज तक ज्ञान-धारा और दान-धारा भी निरन्तर बहती रही हैं। दान-धारा में स्नान करके अपना जीवन पुनीत बनाओ।"—यही संदेश देने के लिए तो उनकी यात्रा चल रही है। दान-धारा के साथ-साथ वे ज्ञान-धारा की भी

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

महिमा बताते हैं। "हर रोज़ ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। आप अपढ़ हैं, तो कुछ श्रवण करना चाहिए, लेकिन ज्ञान हासिल किये बग़ैर एक भी दिन नहीं जाना चाहिए। जिस दिन हमने ज्ञान की बात नहीं सुनी, वह दिन हमने खो दिया।"

एक दिन मैं बैठी-बैठी दैनिक कार्यक्रम के बारे में सोच रही थी। वैसे तो बैठने का अवसर कहाँ, फिर भी जब कभी एकांत का अवसर मिलता, तो पिछले जीवनक्रम का सारा नक़्शा सामने आ जाता। आज की शिक्षा-प्रणाली पर कुछ सोचने लगी थी।

आज की शिक्षा-प्रणाली में जो सबसे बड़ी ख़राबी है, उसे अब मैं तीव्रता से महसूस कर रही हूँ। पिछले 18 वर्षों के मेरे अध्ययनकाल में मुझे न कभी जंगल से लकड़ी लानी पड़ी थी, न कभी गायें चरानी पड़ी थीं। इसलिए मेरा शरीर किसी भी प्रचार के परिश्रम के लिए सर्वथा असमर्थ बन गया था। यात्रा में शरीक़ होने पर पहले ही दिन मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया। पिछले 18 वर्षों के दरमियान मैं किसी भी विषय में प्रवीण न हो सकी, यह बात तो थी ही, लेकिन उधर वर्धा के महिलाश्रम की नर्मदा बेन मुझ-जैसी ही नौसिखुआ होते हुए भी बड़ी फुर्ती से विनोबाजी के साथ चल रही थीं।

मैं अयोग्य साबित हो चुकी थी, इसलिए दूसरे ही दिन मुझे सामान ले जानेवाली जीप में बैठकर अगले पड़ाव पर जाना पड़ा। सबका ध्यान खींचने के लिए बीमारी-जैसा दूसरा साधन कोई नहीं हो सकता। विनोबाजी से लेकर हर कोई मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछते थे। फ़ौरन इलाज भी शुरू हो गया।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विनोबाजी ने पूछा, "बेटा, अब तेरा स्वास्थ्य कैसा है?" यह सुनते ही मुझमें काफ़ी ताक़त आ गयी। और बाद में जब किसीने मुझे सुनाया कि विनोबाजी तुम्हारे बारे में कह रहे थे कि उसका शरीर कमज़ोर होते हुए भी मन के बल पर वह सब काम कर रही है, तब तो मुझमें चलने की ही नहीं, दौड़ने की भी शक्ति आ गयी।

हमारा निवास-स्थान हमेशा सारे गाँव का आकर्षण-स्थल बन जाता है। सरकारी अफ़सर, भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ता, गाँव के बड़े-बड़े लोग आदि सब सेवा के लिए उपस्थित रहते हैं और गाँव की जीर्ण पाठशाला में रहते हुए भी लगता है कि हम किसी आलीशान महल में रह रहे हैं। विनोबाजी तो हमेशा कहते हैं, "मैं तो दुनिया के सब बादशाहों से बड़ा बादशाह हूँ। दूसरे बादशाहों के ज़्यादा से ज़्यादा पचास महल होंगे, लेकिन मुझे तो हर रोज़ नया महल मिलता है।" और हम भी विनोबाजी के सहयात्री होने के कारण बादशाह के खानदानवाले बन जाते हैं। संत के दर्शन के लिए आनेवाले लोग हमारे भी 'दर्शन' करते हैं।

हमारे यात्री-दल में जो फ़्रेंच महिला थीं, वह भारतीय पोशाक धारण करती थीं। भारतीय जीवन के साथ बिलकुल हिल-मिल जाने की उनकी कोशिश को देखते हुए मुझे सूट-बूट पहननेवाले यहाँ के बाबू लोगों की याद आती है। ज़रा-सी अंग्रेज़ी पढ़कर हमारे लोग अंग्रेज़ों की नक़ल करने की कोशिश करते हैं और इधर यूरोप के भाई-बहन यहाँ आकर भारतीय

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बनने की कोशिश करते हैं। वह फ्रेंच बहन हमारे साथ ही पैदल चलती थीं, ज़मीन पर पलथी मारकर बैठती थीं, हाथ से (बिना छुरी-काँटे के) खाना खाती थीं। वह भूदान का कार्य देखने आयी थीं। लोग प्राणों से भी प्रिय ज़मीन के दान में कैसे योग देते हैं, यह उनके लिए एक भारी समस्या बन गयी थी। भूदान-यज्ञ के द्वारा अहिंसक समाज-रचना हो सकती है, यह बात तो उन्हें असंभव-सी लगती थी। उन्होंने अब तक देखा था कि युद्ध के नाम से मानव की पाशविक प्रवृत्तियाँ किस भयानक रूप से प्रकट होती हैं। इसलिए मानव अपने ग़रीब पड़ोसी को अपनी ज़मीन दे सकता है और वह भी एक संत की प्यार भरी माँग पर, यह सारा उन्हें अघटनीय प्रतीत होता था और इसलिए असंभव-सा लगता था। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा कि आप भारतीय लोग बड़े अच्छे हैं, लेकिन ज़रा ख़्वाबों की दुनिया में अधिक रहते हैं। मैंने जवाब दिया, "आप जिसे ख़्वाब कहती हैं वैसी कई घटनाएँ हमने अपनी आँखों से देखी हैं। जिसने गाँधीजी का कार्य देखा, वह भविष्य की ओर आशा की निगाह से देखे बग़ैर कैसे रह सकता है?"

विनोबाजी जब ग्रामीणों के सामने बोलते हैं, तब बिलकुल तन्मय हो जाते हैं। वक्ता और श्रोता का द्वैत नष्ट हो जाता है। दिल की भाषा को दिल पहचान लेता है। नूतन से नूतन क्रांतिकारी विचार को इतने सरल ढंग से समझाते हैं कि जनता उसे आसानी से ग्रहण कर लेती है। उन्होंने एक बार बोलते हुए कहा, "आज की समाज-रचना में एक क्षण के लिए

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भी नहीं सह सकता। हम तो राम-राज्य स्थापित करना चाहते हैं—ऐसा राज्य जिसमें राजा राम, प्रजा राम, सब राममय हो जाते हैं।" इन दो विचारों की संगति जन-मन में अनजान में ही जुड़ जाती है। हम शिक्षित लोग क्रांति की किताबें पढ़ते और भारतीय जनता पर अज्ञान, संकीर्णता एवं रूढ़िप्रियता का दोषारोपण करते हैं। भारतीय जनता को किस प्रकार क्रांति के लिए प्रेरित किया जा सकता है, यह सीखना हो तो इस संत के पास ही आना होगा।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

8. पौधे हमसे अधिक बुद्धिमान

श्री पी. लक्ष्मीकांत सिंहय्या

पौधों में सुख-दुख के अनुभव की शक्ति है, यह बात कुछ समय पूर्व आविष्कृत हो चुकी है। अब यह जानना बाक़ी है कि उनमें बुद्धिमान जीवों की तरह सोचने-समझने की शक्ति भी वर्तमान है या नहीं। हंगेरी के प्रसिद्ध वैज्ञानिक राडल प्रांचे ने बुडापेस्ट के विख्यात पत्र 'पेस्टर-लाउड' में लिखा है कि पौधों में सोचने-समझने की शक्ति वर्तमान है। उनके कथनानुसार पौधों से दूरदर्शिता और बुद्धिमानी आश्चर्यजनक रीति से विकसित हुई है। कोई भी व्यक्ति ध्यानपूर्वक पौधों की जीवन-चर्या का निरीक्षण करता जाए, तो उनकी बुद्धिमत्ता देखकर उसे चकित रह जाना पड़े।

सभी पौधे अपनी विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करके जीवन-रक्षा करते हैं। जहाँ सहायता मिल सकती है, वहाँ वे पारस्परिक सहायता करते और एक दूसरे का आश्रय लेते हैं। लता वृक्ष के सहारे पनपती है—एक से दूसरा पौधा पोषण पाता है। जहाँ सहायता सहज में नहीं मिलती, वहाँ बरबस ली जाती है। आत्मरक्षा के लिए आपस में रगड़-झगड़ भी होता है—एक दूसरे का वे नाश भी करते हैं।

चर प्राणी के समान पौधा चलता तो नहीं, पर अपने भोजन की दिशा में गति अवश्य करता है। सूर्य की किरणों की

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिशा में बहुधा पत्तियाँ या फूल फिरा करते हैं। डालियाँ और पत्तियाँ इस ढंग से निकालती हैं कि अधिक से अधिक रोशनी पा सके। पेड़ ऊपर की ओर बढ़ता और जड़ नीचे की ओर बढ़ती है। अमरबेल अपने आश्रयवाले पेड़ पर फैलती जाती है और उसकी हरियाली को नष्ट कर देती है। कीड़े खानेवाले पौधे कीड़ों को पकड़ते ही दबोच लेते हैं। यदि कीड़े खानेवाले पौधों को एकाध बार वैसा ही गीले काग़ज़ का टुकड़ा पकड़ा दिया जाए, तो वे धोखा खा जाते हैं। लेकिन एक-दो बार ही ऐसा धोखा चल सकता है।

साधारणतया जड़ को सीधे नीचे की ओर और धड़ को सीधे ऊपर की ओर जाना चाहिए। परंतु बीज जब उलटा पड़ता है या तिरछा गिर जाता है, तब जड़ और धड़ दोनों को घूमकर क्रमशः नीची और ऊँची दिशा को ग्रहण करना पड़ता है। प्रधान जड़ें नीचे की ओर जाते हुए भी, अपना भोजन खोजने के लिए अगल-बगल रेशें फेंकती हैं और पता लगाती हैं। जिधर किसी संकट का आभास होता है उधर जड़ें हट जाती हैं और अपनी दिशा बदल देती हैं। जड़ों का सिरा सबसे अधिक सचेत होता है। डार्विन का कहना है कि उद्भिज्जों का दिमाग़ यही है। इतनी बात तो प्रत्यक्ष है ही कि जड़ें कहीं झुकती हैं, कहीं हटती हैं, कहीं ज़रा ऊपर की ओर चल पड़ती हैं, तो कभी फिर नीचे की ओर जाती हैं। और इसका अर्थ हुआ कि धरती के भीतर जड़ें काफ़ी सोच-विचार के साथ अपने भोजन की तलाश करती हैं।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शोधों से यह प्रमाणित हो चुका है कि जड़ का रेशा बहुत फूंक-फूंककर क़दम रखता है। जहाँ ख़तरे की आशंका हुई, वहाँ से हट जाता है, कड़ी ज़मीन पाकर मुड़ जाता है तथा नमी और नमक पाकर चाव से आगे बढ़ता है।

'लिनेरिया' नाम का एक पौधा है, जो पथरीली चट्टानों में उगता और पनपता है। चट्टानों के बीच में कहीं पर छोटा-सा छेद अथवा खोखली-सी जगह मिलते ही वह उसके भीतर अपनी जड़ें जमा लेता है और बाहर निकलकर चट्टान की दीवार पर अपना शरीर झुकाये स्वयं को जीवित रखता है। पर जीवित मात्र रहने से ही तो उसका स्वभावसिद्ध कार्य समाप्त नहीं हो जाता। अन्यान्य पौधों की भाँति उसके लिए भी यह आवश्यक है कि वह वंशवृद्धि करे और सीधी-खड़ी पथरीली दीवार पर वंशवृद्धि करना कोई आसान काम भी तो नहीं।

'लिनेरिया' अपने इस कार्य को जिस बुद्धिमानी से पूरा करता है, वह सचमुच ही आश्चर्यकारक और प्रशंसनीय है। पर इसके लिए सबसे पहले उसे मधुमक्खियों की बाट जोहनी पड़ती है। मधुमक्खियाँ इसके फूलों का पराग स्त्री केसर के साथ मिलाकर उसे फल बनाने में समर्थ होती हैं। इन मधुमक्खियों को आकृष्ट करने के लिए उसे अपने फूलों की बहार दिखलाना पड़ती है। और मधुमक्खियों की प्रतीक्षा में चट्टान की दीवार से लगे फूल कहीं सड़ न जाएँ यह सोचकर 'लिनेरिया' अपने फूलों को यथासंभव दीवार से अलग रखता है। बहुधा

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देखा गया है कि 'लिनेरिया' की जो शाखा दीवार से दूर होती है, उसीपर अधिकतर पुष्प खिलते हैं।

बीज तैयार हो जाने पर इस पौधे के सामने यह समस्या आ जाती है कि उन बीजों को कहाँ डाला जाए। चट्टान की सीधी दीवार में बीज न ठहर सकते हैं, न पनप सकते हैं। अतः यहाँ वह अपनी सहज बुद्धि का सहारा लेता है। पराग और केसर जब मिल जाते हैं, तब वह फिर से दीवार की ओर झुकना शुरू कर देता है और दीवार के सहारे आगे बढ़ता है— जब तक उसे बीजों को गिराने के लिए कोई छेद या खोखली जगह न मिल जाए। छेद मिलते ही वह उसके भीतर घुसकर अपने बीज डाल देता है।

'यूकलिप्टस' की दूरदर्शिता तो प्रसिद्ध है। यह पेड़ कहीं भी उगे, अपनी जड़ को फैलाकर पानी के उद्गम-स्थान तक ले जाएगा—चाहे पानी उस स्थान से कितनी ही दूर क्यों न हो। 'यूकलिप्टस' के एक पेड़ के संबंध में आँखों-देखी घटना है कि वह जहाँ पर उगा था, उससे थोड़ी दूर पर एक नहर थी। वह पेड़ अपनी जड़ों को फैलाते-फैलाते नहर की ओर 50 फ़ुट तक तो निर्विघ्न ले गया, फिर रास्ते में उसे एक दीवार मिली, जिसके भीतर उसकी जड़ प्रवेश नहीं कर सकती थी। पर वह हताश नहीं हुआ। उसने दीवार के ऊपर ही अपनी जड़ फैलानी शुरू कर दी। अंत में उसे दीवार में कई फ़ुट ऊपर एक छेद मिल गया। तुरंत छेद के भीतर वह प्रवेश कर गया, और भीतर ही भीतर तब तक फैलता गया, जब तक कि नहर तक पहुँच नहीं गया।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पौधों की बुद्धिमानी यहीं तक सीमित नहीं रहती। राजनीतिक और सामाजिक नियमों से भी वे पूर्णरूपेण अभिज्ञ हैं और अपने जीवन में उन्हें अपनाते भी हैं। उनके जीवन का सूक्ष्म निरीक्षण करते ही यह बात स्पष्ट हो जाती है।

साधारणतः सबने यह देखा होगा कि पौधों की वे आँखें, जिनमें वसंतऋतु में नयी पत्तियाँ फूटती हैं, किस प्रकार मोटे खोल से ढंकी रहती हैं, जिससे वे जाड़े में पाले से बच जाएँ। सुरक्षा का यह प्रबंध उनकी बुद्धिमानी का कितना ज़बर्दस्त परिचायक है! वनस्पति-विज्ञान से अनभिज्ञ व्यक्ति समझते होंगे कि पत्तियाँ शुरू से ही वसंतऋतु में बनती होंगी। परंतु सच बात तो यह है कि पुरानी पत्तियों के गिरने के पहले ही उनका स्थान ग्रहण करनेवाली पत्तियाँ बन जाती हैं। गर्मी-भर मेहनत कर पौधे पत्ती पैदा करनेवाली कली में सब सामग्री जमा करके रखते हैं, जिससे उचित ऋतु आने पर नयी पत्तियाँ बन सकें। वर्तमान को भी ठीक से नहीं निभा सकनेवाले आज के अधिकांश मनुष्यों में भला, भविष्य की चिंता की यह बुद्धिमत्तापूर्ण भावना कहाँ उपलब्ध हो सकती है?

बहुत-से पौधे गर्मी में मर जाते हैं और वर्षाऋतु में जीवित हो उठते हैं। कंद आदि के रूप में ज़मीन के भीतर जो माँडी पड़ी रहती है, वही इन पौधों के पुनर्जीवन में सहायक बनती है। पौधे अपनी सहज बुद्धि से गर्मी में पत्तियों के जलकर विनष्ट हो जाने का अनुमान कर लेते हैं और इसीसे अपनी माँडी (जो उनमें फिर से जीवन पैदा कर सके) धरती के

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गर्भ में छिपाकर रख देते हैं, जहाँ पर कि झुलसा देनेवाली धूप उन्हें स्पर्श भी न कर सकती ।

पौधे बचत करना भी खूब जानते हैं । जंगली गाजर, शलगम और चुकंदर की जड़ें इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं । वे बहुत मोटी होती हैं और कुछ एक पौधों में तो यह जड़ प्रति साल मोटी होती जाती है ; क्योंकि हर बार अपनी आमदनी से कुछ न कुछ बचाकर ये पौधे अपनी जड़ में जमा कर लेते हैं ।

यह आम धारणा है कि जमा करनेवाले जल्दी ख़र्च नहीं करते, किंतु पौधों के संबंध में यह बात लागू नहीं होती । वे जमा केवल इसलिए करते हैं कि ज़रूरत पड़ने पर खुलकर ख़र्च कर सकें । घीकुंवार जाति के पौधे फूलने से पहले वर्षों तक बढ़ते रहते हैं और अपनी जड़ों में भविष्य के लिए आवश्यक सामग्री का संचय करते रहते हैं । इस कार्य में इन पौधों को अत्यंत सावधानी और धैर्य का परिचय देना पड़ता है । बाद में, फूल पैदा करने के लिए जब यकायक शक्ति की आवश्यकता पड़ती है, तो वे अपनी संचित शक्ति का आसानी से उपयोग कर लेते हैं । शक्ति-संचय में काफ़ी समय लगता है और इसीसे ये पौधे शीघ्र नहीं फूलते । एक प्रसिद्ध कहावत है कि घीकुंवार वर्ष में एक बार फूलता है ।

पौधों का सबसे बड़ा गुण है, उनकी मितव्ययिता । वे कितने मितव्ययी होते हैं, इसका पता जलधनिया जाति के पौधों से मिल सकता है । ये पौधे पानी में होते हैं । इनकी कुछ पत्तियाँ पानी में होती हैं और कुछ पानी के ऊपर । हवा में

 Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कार्बन-डाइ-आक्साइड भी काफ़ी होता है, इसलिए हवावाली पत्तियाँ बड़ी होती हैं। परन्तु जो पत्तियाँ पानी के भीतर रहती हैं, उनमें केवल नसें ही नसें होती हैं और थोड़े-से कार्बन-डाइ-आक्साइड से वे अपना काम बिना किसी असुविधा के चला लेती हैं। ये पत्तियाँ हरे धागे के गुच्छे की तरह होती हैं। एक दूसरी जाति के पौधों में जलधनिया-जैसे दूधिया फूल की पँखुड़ियाँ होती ही नहीं और इनका काम परिवर्तित परतों से बड़े मज़े में चल जाता है।

बहुत-से पौधे इस दिशा में बड़ी चतुराई का परिचय देते हैं। जो कुछ वे बचाते हैं, वह ज़मीन के नीचे कंद के रूप में जमा करते हैं। आलू, शकरकंद आदि के पौधे ऐसे ही चतुर पौधों में हैं। आलू के संबंध में संभवतः सब यह जानते होंगे कि एक बड़े आलू को काटकर छोटे-छोटे कई भाग कर देने पर भी यदि उनको बो दिया जाए, तो प्रत्येक टुकड़े से नये पौधे पैदा होंगे, बशर्ते कि आलू के काटने में उसकी आँखें न कटने पावें। वस्तुतः इन आँखों से ही नये पौधे पैदा होते हैं। सबसे बड़ी मज़े की बात तो यह है कि संसार-भर में अच्छी नस्ल के सभी पौधे इसी प्रकार अपनी भोज्य सामग्री को बुद्धिमानी से ज़मीन के अंदर सुरक्षित रखते हैं—अगली फ़सल या नवीन पौधे के लिए।

पौधों में सुरक्षा की भावना बड़ी प्रबल है और उन्होंने किस प्रकार अपनी रक्षा का ढंग निकाला है, वह उनकी बुद्धिमत्ता का परिचायक है। अनेक पौधे अपने दुश्मनों से बचने के लिए अपने अंगों में विष पैदा कर लेते हैं और स्वाद में

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कड़ुवापन, तिक्तता, दुर्गन्ध आदि गुण ले आते हैं। 'बिच्छू' पौधे की पत्तियों पर जो रोएँ होते हैं, वे खाल में चुभ जाते हैं और एक प्रकार का विष डाल देते हैं, जिससे जलन महसूस होती है। नागफनी के पौधे तो हमारे चिरपरिचित हैं ही। उनके असंख्य काँटे किसी भी हालत में किसी नुकीले हथियार से कम कष्टप्रद नहीं होते।

पौधों की बुद्धिमानी के ये कितने जीवंत प्रमाण हैं! फिर श्री जगदीशचन्द्र बसु ने भी अपने प्रयोगों से यह सिद्ध कर दिया था कि पौधे त्वचा के सहारे अपने वे सब काम कर लेते हैं, जो हम अपनी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों से करते हैं। इतना ही नहीं, वे समय पर भोजन करते हैं, समय पर आराम करते हैं, समय पर सोते हैं और समय पर जागते हैं। मनुष्यों से कहीं अधिक चिन्तनशील और बुद्धिमान तो वे हैं ही, हम मनुष्यों से कहीं अधिक उनका नियमित जीवन है, इस बात से भला, कैसे इनकार किया जा सकता है?

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

9. नागरिकों के मूल अधिकार

(संकलित)

हमारे देश का नाम भारत है। इसे हिन्द, हिन्दुस्तान और इण्डिया भी कहते हैं। बहुत दिनों तक इस देश पर अंग्रेज़ जाति का राज्य था। अंग्रेज़ों का राजा ही भारत का सम्राट होता था। सम्राट का एक प्रतिनिधि आकर भारत में रहता था और उसीके हुक्म से यहाँ का सारा कारोबार चलता था। भारत की जनता का उसमें कोई हाथ नहीं था। आख़िर गांधीजी-जैसे नेताओं और जनता के प्रयत्न से भारत स्वतंत्र हुआ और सन् 1947 में यहाँ जनता की सरकार क़ायम हुई।

अंग्रेज़ों के यहाँ से जाने के बाद देश के बड़े-बड़े आदमियों की एक सभा बुलायी गयी। उनमें सब दलों के नेता शामिल हुए। सबने मिलकर हिन्दुस्तान की हुक़ूमत कैसी होनी चाहिए, इस सवाल पर विचार किया। एक लम्बी चर्चा के बाद उन्होंने देश का शासन करने के लिए एक नियमावली बनायी। उसको भारत का संविधान कहते हैं। इसी संविधान के मुताबिक़ हमारे देश का राजकाज चलता है।

उस संविधान के शुरू में लिखा है कि भारत एक गणतंत्र राज्य है। जिस देश का राज्य उसी देश की जनता के द्वारा चलता है और जहाँ कोई राजा नहीं होता, उसे गणतंत्र राज्य कहते हैं। फिर हमारे संविधान में लिखा है कि हमारे गणतंत्र

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

राज्य में सबके साथ न्याय होगा, लोग किसी भी धर्म या मज़हब के माननेवाले हों, सब समान माने जाएँगे, सबके समान अधिकार होंगे और सबकी रक्षा का भार सरकार पर होगा।

हमारे संविधान में देश के सभी नागरिकों को कुछ अधिकार दिये गये हैं। इन अधिकारों को मूल अधिकार कहते हैं। ये अधिकार निम्नलिखित हैं—

समता का अधिकार—मूल अधिकारों में सबसे पहला अधिकार समता का अधिकार है, जिसमें लिखा है कि भारत के सब नागरिकों को क़ानून के सामने बराबर समझा जाएगा। कोई क़ानून ऐसा नहीं बनाया जाएगा, जिससे कि उनके साथ भेदभाव प्रकट हो। आदमी चाहे किसी जाति या धर्म का हो, चाहे वह कहीं भी पैदा हुआ हो—सबके अधिकार समान होंगे। इसी प्रकार स्त्री और पुरुष, दोनों को बराबर समझा जाएगा।

पहले भारत में जाति-पांति और छुआछूत का बहुत ज़ोर था। होटलों, दूकानों आदि में सब लोग नहीं जा सकते थे। तालाबों, नदियों, सड़कों आदि का उपयोग करने में भी भेदभाव किया जाता था। अब संविधान में इस चीज़ की मनाही कर दी गयी है। सबको समान अधिकार है कि वे किसी भी दूकान या होटल में जा सकते हैं और किसी नदी, तालाब या सड़क का उपयोग कर सकते हैं।

संविधान में यह भी लिखा है कि सरकारी नौकरियों में भी सब नागरिकों को समान अवसर दिया जाएगा। मतलब यह कि आदमी किसी भी जाति या धर्म का माननेवाला हो, उसे उसकी

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

योग्यता के अनुसार कोई भी सरकारी नौकरी पाने का अधिकार होगा। किसी पद के लिए स्त्री को अयोग्य नहीं समझा जाएगा; वे भी बड़े से बड़े पद पर नियुक्त हो सकती हैं।

पहले अंग्रेज़ों के राज्य में लोगों को ख़िताब दिये जाते थे। कोई राय साहब, राय बहादुर, दीवान बहादुर या ख़ान साहब बना दिया जाता था, तो किसीको 'सर' की उपाधि दी जाती थी। वे लोग अपने आपको दूसरे लोगों से बड़ा समझते थे। इस बड़े-छोटे के भेदभाव को मिटाने के लिए संविधान में लिखा है कि सरकार किसीको कोई ख़िताब या पदवी नहीं देगी। विधान में यह भी लिखा है कि भारत का कोई नागरिक किसी दूसरे देश की सरकार से भी कोई ख़िताब स्वीकार नहीं करेगा।

स्वतंत्रता का अधिकार—समता के अधिकार के बाद भारत के लोगों को स्वतंत्रता का अधिकार भी दिया गया है। भारत के सभी नागरिकों को भाषण देने की स्वतंत्रता है, लेखन की स्वतंत्रता है, सभा-संस्थाएँ बनाने की स्वतंत्रता है। इतना ही नहीं, उन्हें भारत में कहीं भी जाकर व्यापार या नौकरी करने की भी पूरी स्वतंत्रता है। किसी नागरिक को बिना कारण क़ैद भी नहीं किया जा सकता। यदि किसीको क़ैद किया गया, तो सरकार को इसके लिए सफ़ाई देनी होगी। यदि सरकार की सफ़ाई ठीक नहीं हुई, तो न्यायालय उस क़ैदी को रिहा कर सकता है।

पहले भारत में सरकारी अफ़सर और बड़े-बड़े आदमी ग़रीब लोगों से मुफ़्त में काम लेते थे। उसे 'बेगार' कहते हैं।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

संविधान में बेगार को बिलकुल बंद कर दिया गया है। अब कोई भी आदमी किसीसे मुफ़्त में काम नहीं ले सकता। कोई किसीसे ज़बरदस्ती उसकी इच्छा के विरुद्ध काम नहीं ले सकता। जो ऐसा करेगा, वह सज़ा पाएगा।

पहले कुछ मिल-मालिक छोटे-छोटे बच्चों से कारख़ानों और ख़ानों में काम लेते थे। इससे बच्चों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता था और वे कमज़ोर हो जाते थे। उन्हें शिक्षा भी नहीं मिल पाती थी। इसलिए अब संविधान में यह नियम बना दिया गया है कि 14 वर्ष से कम आयुवाले किसी बच्चे को किसी कारख़ाने या ख़ान में नौकर नहीं रखा जाएगा।

धर्म स्वातंत्र्य का अधिकार—संविधान में सबको अपना धर्म मानने का, उसपर अमल करने का तथा उसका प्रचार करने का अधिकार दिया गया। हमारा राज्य ऐसा राज्य है, जो धर्म या दीन के आधार पर नहीं बना है। इसलिए यह 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' कहा जाता है। यह किसी धर्म के साथ पक्षपात नहीं करता। यह भी नियम है कि किसी सरकारी स्कूल में किसी धर्म की शिक्षा नहीं दी जाएगी।

संस्कृति और शिक्षा-संबंधी अधिकार—हमारे संविधान में सब लोगों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति बनाये रखने का पूरा अधिकार दिया गया है। सब धर्मों के लोगों को अपनी रुचि के अनुसार धार्मिक संस्थाएँ बनने और शिक्षा-संस्थाएँ स्थापित करने का समान अधिकार दिया गया है। सरकार इस तरह के कामों में कभी रुकावट नहीं डाल सकती।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

संपत्ति का अधिकार—भारत के सभी नागरिकों को भारत के किसी भाग में जाकर रहने, घर बनाने तथा संपत्ति उपार्जन करने का अधिकार दिया गया है। संविधान में यह भी नियम रखा गया है कि सरकार किसी आदमी की संपत्ति, ज़मीन या कंपनी नहीं ले सकती और यदि सार्वजनिक हित के लिए उसका लेना ज़रूरी हो, तो उसका उचित मूल्य देकर ही ले सकती है।

हक़ों की रक्षा का अधिकार—अब आपने पढ़ लिया कि भारत के प्रत्येक नागरिक को संविधान में क्या-क्या अधिकार दिये गये हैं। लेकिन केवल किसीको अधिकार दे देने से काम नहीं चलता। उन अधिकारों की रक्षा का भी प्रबंध होना चाहिए। कोई भी सरकार ऐसा क़ानून बना सकती है, जिससे नागरिक के अधिकार छिन जाएँ या उनमें कुछ कमी हो जाए। इसीलिए हमारे विधान में इन अधिकारों की रक्षा का भार देश के उच्चतम न्यायालय को सौंपा गया है। वह न्यायालय सरकार की ग़लती को पकड़ सकता है। वह सरकार के कामों से जनता की रक्षा कर सकता है।

अगर सरकार इन मूल अधिकारों में कमी करने का कोई क़ानून बनाए, तो अदालत कह सकती है कि यह क़ानून संविधान के ख़िलाफ़ है। तब ऐसा क़ानून रद्द समझा जाएगा। कोई भी नागरिक उस अदालत में अपने मूल अधिकारों की रक्षा के लिए फ़रियाद कर सकता है। इस उच्चतम न्यायालय का निर्णय भारत की सभी अदालतों को मानना पड़ेगा और

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सरकार को भी उसे मानना पड़ेगा। इसलिए यह अदालत जनता के अधिकारों की रक्षक और पहरेदार है।

ये मूल अधिकार जनता की पवित्र निधि है। इनकी रक्षा हमें सब तरह से करनी चाहिए। जो नागरिक अपने अधिकारों को समझता है और देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करता है, वही सच्चा नागरिक है। इससिए हम सब लोगों को भारत के सच्चे नागरिक बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

10. भारत एक है

'दिनकर'

अकसर कहा जाता है कि भारत वर्ष की एकता उसकी विविधताओं में छिपी हुई है। और यह बात ज़रा भी ग़लत नहीं है ; क्योंकि अपने देश की एकता जितनी प्रकट है, उसकी विविधताएँ भी उतनी ही प्रत्यक्ष हैं।

भारतवर्ष के नक़्शे को ध्यान से देखने पर यह साफ़ दिखाई पड़ता है कि इस देश के तीन भाग प्राकृतिक दृष्टि से बिलकुल स्पष्ट हैं। सबसे पहले तो भारत का उत्तरीय भाग है, जो लगभग हिमालय के दक्षिण से लेकर विंध्याचल के उत्तर तक फैला हुआ है। उसके बाद विंध्य से लेकर कृष्णा नदी के उत्तर तक का वह भाग है, जिसे हम दक्षिणी प्लेटो कहते हैं। इस प्लेटो के दक्षिण में कृष्णा नदी से लेकर कुमारी अन्तरीप तक का जो भाग है, वह प्रायद्वीप-जैसा है।

अचरज की बात है कि प्रकृति ने भारत के जो ये तीन खंड किये हैं, वे ही खंड भारतवर्ष के इतिहास के भी तीन क्रीड़ास्थल रहे हैं। पुराने समय में उत्तर भारत में जो राज्य क़ायम किये गये, उनमें से अधिकांश विंध्य की उत्तरी सीमा तक ही फैलकर रह गये। विंध्य को लाँघकर उत्तर भारत को दक्षिण भारत से मिलाने की कोशिश तो बहुत की गयी, मगर इस काम में कामयाबी किसी-किसीको ही मिली। कहते हैं, पहले-पहल

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अगस्त्य ऋषि ने विंध्याचल को पार करके दक्षिण के लोगों को अपना संदेश सुनाया था। फिर भगवान श्रीरामचन्द्र ने लंका पर चढ़ाई करने के सिलसिले में विंध्याचल को पार किया।

महाभारत के ज़माने में उत्तरी और दक्षिणी भारत के अंश एक राज्य के अधीन थे या नहीं, इसका कोई पक्का सबूत नहीं मिलता। लेकिन रामचन्द्रजी ने उत्तरी और दक्षिणी भारत के बीच जो एकता स्थापित की, वह महाभारत काल में भी क़ायम थी और दोनों भागों के लोग आपस में मिलते-जुलते रहते थे। महाराज युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ में दक्षिण के राजा लोग भी आये थे और कुरुक्षेत्र के मैदान में जो महायुद्ध हुआ था, उसमें भी दक्षिण के वीरों ने हिस्सा लिया था। इसका प्रमाण महाभारत में ही मौजूद है।

इसी तरह चन्द्रगुप्त, अशोक, विक्रमादित्य और उनके बाद मुग़लों ने भी इस बात के लिए बड़ी कोशिश की कि किसी तरह सारा देश एक शासन के अधीन लाया जा सके। उन्हें इस कार्य में सफलता भी मिली थी। लेकिन भारत के इतिहास की एक शिक्षा यह भी है कि इस देश को एक रखने के काम में यहाँ के राजाओं को जो भी सफलता मिली, वह ज़्यादा टिकाऊ नहीं हो सकी। इस देश के प्राकृतिक ढाँचे में ही कोई ऐसी बात थी, जो सारे देश को एक रहने देने के ख़िलाफ़ पड़ती थी। यही कारण था कि जब भी कोई बलवान और दूरदर्शी राजा इस काम में लगा, थोड़ी-बहुत सफलता उसे ज़रूर मिली ; लेकिन स्वार्थी, अदूरदर्शी और कमज़ोर राजाओं के आते ही देश की एकता टूट गयी, और

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो कठिनाई विंध्य के उत्तर को उसके दक्षिण से मिलाने में हुई, वही कठिनाई कृष्णा नदी से उत्तर के भाग को उसके दक्षिण के भाग से मिलाकर एक रखने में होती रही।

इस देश में वैर-फूट का यह भाव इतना प्रबल क्यों रहा, इसके भी कारण हैं। बड़ी-बड़ी नदियों और बड़े-बड़े पहाड़ों के गुण अनेक हैं, लेकिन उनमें एक अवगुण यह भी होता है कि वे जहाँ रहते हैं, वहाँ देश के भीतर अलग-अलग क्षेत्र बना देते हैं और इन क्षेत्रों में रहनेवाले लोगों के भीतर एक तरह की प्रांतीयता या क्षेत्रीय जोश पैदा कर ही देते हैं। यह देश है भी बहुत विशाल। इसके उत्तरी छोर पर काश्मीर पड़ता है, जिसकी जलवायु लगभग मध्य एशिया की जलवायु के समान है। इसके विपरीत भारत के दक्षिणी छोर पर कुमारी अन्तरीप है, जहाँ के घरों की रचना और लोगों के रंग-रूप आदि में श्रीलंका या सिलोन का नमूना शुरू हो जाता है। चेरापूँजी भी इसी देश में है, जहाँ साल में 500 इंच से अधिक वर्षा होती है, और थार की मरुभूमि भी यहीं है, जहाँ वर्षा होती ही नहीं अथवा कभी नाममात्र को होती है।

जलवायु एवं क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ही लोगों के पहनावे-ओढ़ावे और खान-पान में भी भेद हो जाता है, जो भेद भारत में बहुत ही प्रत्यक्ष है। असल में इन भेदों को मिटाकर अगर हम कोई एक राष्ट्रीय ढंग चलाना चाहे, तो उससे अनेक लोगों को तकलीफ़ हो जाएगी। उदाहरण के लिए, अगर हम रोटी और उड़द की दाल अथवा रोटी और मांस को देश का

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय भोजन बना दें, तो पंजाबी लोग तो मज़े में रहेंगे, लेकिन बिहार और बंगाल के लोगों का बुरा हाल हो जाएगा। इसी तरह, अगर हम यह क़ानून बना दें कि हर हिन्दुस्तानी को चप्पल पहनना ही होगा, तो काश्मीर के लोग घबरा उठेंगे। क्योंकि पहाड़ पर चलनेवालों के पाँवों में चप्पल ठीक-ठीक नहीं चल सकते। पहनावे-ओढ़ावे में भी जगह-जगह भिन्नता मिलती है और पोशाक भी जलवायु एवं क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ही यहाँ तरह-तरह की फैली हुई है।

मगर विविधता का सबसे बड़ा लक्षण यह है कि हमारे देश में अनेक प्रकार की भाषाएँ फैली हुई हैं और इनके कारण हम आपस में भी अजनबी के समान हो जाते हैं। उत्तर भारत में तो गुजरात से लेकर बंगाल तक की जनता के बीच संपर्क खूब हुआ है, इसलिए वहाँ भाषाभेद की कठिनाई उतनी नहीं अखरती। लेकिन, अगर कोई उत्तर-भारतवासी दक्षिण चला जाए और मातृभाषा के सिवा अन्य कोई भाषा नहीं जानते हो, तो वह सचमुच बड़ी मुश्किल में पड़ जाएगा। भाषाभेद की यह समस्या हमारी राष्ट्रीय एकता की सबसे बड़ी बाधा है। राष्ट्रीय एकता में पहले यह बाधा थी कि पहाड़ों और नदियों को लाँघना आसान नहीं था। मगर अब विज्ञान के अनेक सुगम साधनों के उपलब्ध हो जाने से वह बाधा दूर हो गयी है।

आज अगर देश के एक कोने में अकाल पड़ता है, तो दूसरे कोने से अनाज वहाँ तुरन्त पहुँचा दिया जाता है। इसी प्रकार पहले जब देश के एक कोने में विद्रोह होता था, तब दूसरे

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कोने में पड़ा हुआ राजा जल्दी से फ़ौज भेजकर उसे दबा नहीं सकता था और विद्रोह की सफलता से देश की एकता टूट जाती थी। लेकिन आज तो देश के चाहे जिस कोने में विद्रोह हो, हम फ़ौज भेजकर तुरंत दबा सकते हैं।

प्राकृतिक बाधाएँ अब ख़त्म हो गयी हैं। यही कारण है कि आज हमारी एकता इतनी विशाल हो गयी है, जितनी विशाल वह रामायण, महाभारत, मौर्य और मुग़ल ज़मानों में कभी नहीं हुई थी। अब भी जो क्षेत्रीय जोश या प्रांतीय मोह बाक़ी है, वह धीरे-धीरे कम हो जाएगा; क्योंकि इस जोश को पालनेवाली प्राकृतिक बाधाएँ अब शेष नहीं हैं। मगर भाषाभेद की समस्या ज़रा कठिन है और उसका हल तभी होगा, जब हिन्दी-भाषी क्षेत्र में अहिन्दी भाषाओं तथा अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का अच्छा प्रचार हो जाए। सौभाग्य की बात है कि इस दिशा में काम शुरू हो गया है और कुछ समय बीतते-बीतते हम इस बाधा पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे।

यह तो हुई भारत की विविधता की कहानी। अब ज़रा यह देखने की कोशिश करनी चाहिए कि इस विविधता के भीतर हमारी एकता कहाँ छिपी हुई है। सबसे विचित्र बात तो यह है कि यद्यपि हम अनेक भाषाएं बोलते हैं, उनमें 14 भाषाएँ तो ऐसी हैं, जिन्हें भारत सरकार ने स्वीकृति दे रखी है। ये भाषाएँ हैं—हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, असामी, पंजाबी, काश्मीरी और संस्कृत।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

किन्तु इन भिन्न-भिन्न भाषाओं के भीतर बहनेवाली हमारी भावधारा एक है तथा हम प्रायः एक ही तरह के विचारों और कथावस्तुओं को लेकर अपनी-अपनी बोली में साहित्य-रचना करते हैं। रामायण और महाभारत को लेकर भारत की प्रायः सभी भाषाओं के बीच अद्भुत एकता मिलेगी। इसके सिवा, संस्कृत और प्राकृत में भारत का जो साहित्य लिखा गया था, उसका प्रभाव भी सभी भाषाओं की जड़ में काम कर रहा है।

विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है। भारतीय जनता की एकता असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य हैं, जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी अन्त में जाकर एक ही साबित होते हैं। यह भी ध्यान देने की बात है कि फ़ारसी लिपि को छोड़ दें, तो भारत की अन्य सभी लिपियों की वर्णमाला एक ही है, यद्यपि वह अलग-अलग लिपियों में लिखी जाती है। जैसे हम हिन्दी में क, ख, ग, आदि अक्षर पढ़ते हैं, वैसे ही ये अक्षर भारत की अन्य लिपियों में भी पढ़े जाते हैं, यद्यपि उनके लिखने का ढंग और है।

हमारी एकता का दूसरा प्रमाण यह है कि उत्तर या दक्षिण चाहे जहाँ भी चले जाएँ, आपको जगह-जगह पर एक ही संस्कृति के मंदिर दिखाई देंगे, एक ही तरह के आदमियों से मुलाक़ात होगी, जो चन्दन लगाते हैं, स्नान-पूजा करते हैं, तीर्थ-व्रत में विश्वास रखते हैं अथवा जो नयी रोशनी को अपना लेने के कारण इन बातों को शंका की दृष्टि से देखते हैं। उत्तर भारत के लोगों का जो स्वभाव है, जीवन को देखने की जो

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उनकी दृष्टि है, वही स्वभाव और वही दृष्टि दक्षिणवालों की भी है।

और, जो बात हिन्दुओं के बारे में कही जा रही है, वही बहुत दूर तक मुसलमानों के बारे में भी कही जा सकती है। देश के सभी कोनों में बसनेवाले मुसलमानों के भीतर जहाँ एक धर्म को लेकर एक तरह की आपसी एकता है, वहाँ वे संस्कृति की दृष्टि से हिन्दुओं के भी बहुत क़रीब हैं; क्योंकि ज़्यादा मुसलमान तो ऐसे ही हैं, जिनके पूर्वज हिन्दू थे और जो इस्लाम धर्म में जाने के समय अपनी हिन्दू आदतें अपने साथ ले गये हैं। इसके सिवा, अनेक सदियों से हिन्दू-मुसलमान साथ रहते आये हैं। और इस लंबी संगति के फलस्वरूप उनके बीच संस्कृति और तहज़ीब की बहुत-सी समान बातें पैदा हो गयी हैं, जो उन्हें दिनों-दिन आपस में नज़दीक लाती जा रही हैं।

संसार के हर एक देश पर अगर हम अलग-अलग विचार करें, तो हमें पता चलेगा कि प्रत्येक देश की एक निजी सांस्कृतिक विशेषता होती है, जो उस देश के प्रत्येक निवासी की चाल-ढाल, बातचीत, रहन-सहन, खान-पान, तौर-तरीक़े और आदतों से टपकती रहती है। चीन से आनेवाले आदमी विलायत से आनेवाले आदमियों के बीच नहीं छिप सकता और यद्यपि अफ़्रीका के लोग भी काले होते हैं, मगर वे भारतवासियों के बीच नहीं खप सकते।

भारतवर्ष में भी यूरोपीय पोशाकें खूब चली हुई हैं, लेकिन यूरोपीय लिबास में सजे हुए हिन्दुस्तानियों के बीच एक अंग्रेज़ को

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

खड़ा कर दिया जाए, तो वह आसानी से अलग पहचान लिया जाएगा। इसी तरह भारत के हिन्दू ही नहीं, बल्कि क्रिस्तान, पारसी और मुसलमान भी भारत से बाहर जाने पर आसानी से पहचान लिये जाते हैं कि वे हिन्दुस्तानी हैं। और यह बात कुछ आज पैदा नहीं हुई है, बल्कि इतिहास के किसी भी काल में भारतवासी भारतवासी ही थे तथा अन्य देशों के लोगों के बीच में वे खप नहीं सकते थे।

यही वह सांस्कृतिक एकता या शक्ति है, जो भारत को एक बनाये रखे हुए है। यही वह विशेषता है, जो उन लोगों में पैदा होती है, जो एक देश में रहते हैं, एक तरह की ज़िन्दगी बसर करते हैं और एक तरह के दर्शन और एक तरह की आदतों का विकास करके एक राष्ट्र के सदस्य हो जाते हैं।

भाषा की दीवार के टूटते ही उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय के बीच कोई भी भेद नहीं रह जाता और वे आपस में एक दूसरे के बहुत क़रीब आ जाते हैं। असल में भाषा की दीवार के आर-पार बैठे हुए भी वे एक ही हैं। वे एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार हैं, उन्होंने देश की आज़ादी के लिए एक होकर लड़ाई लड़ी और आज उनकी पार्लिमेंट (संसद) और शासन-विधान भी एक है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

11. सिंदरी

श्री जगदीशराज मलहोत्रा

बिहार प्रदेश का छोटा-सा सिंदरी गाँव आजकल एक विशाल कार्य का क्षेत्र बना हुआ है। यह कार्य संसार की बीस प्रतिशत आबादी को भुखमरी से बचाने के लिए किया गया है और संसार के राष्ट्रों के सहयोग का प्रतीक है। यहाँ रासायनिक खाद-निर्माण का विशाल कारखाना है। यह स्थान दामोदर नदी के किनारे धनबाद से चौदह मील दक्षिण में स्थित है। यह कारख़ाना अन्तर राष्ट्रीय सहयोग का एक प्रकाश-स्तंभ है। भारत, इंग्लैंड और अमेरिका के कौशल, टेक्निकल-ज्ञान तथा पूँजी का सम्मिलित उपयोग इसमें किया गया है। इस खाद-कारख़ाने के चालू हो जाने से भारत में कृषि को बहुत अधिक प्रोत्साहन मिला है।

सिंदरी का खाद-कारख़ाना एशिया का सबसे बड़ा कारख़ाना है। साथ ही, यह कारख़ाना स्वतंत्र भारत की सरकार द्वारा नियंत्रित कारख़ानों में सबसे बड़ा है। वस्तुतः इतनी बड़ी मात्रा में अमोनियम सल्फ़ेट का उत्पादन करनेवाले विश्व के सबसे बड़े कारख़ानों में यह भी एक है।

पहले सिंदरी गाँव एक जंगल था, लेकिन आज वह दस वर्गमील के एक औद्योगिक केन्द्र में परिवर्तित हो गया है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कृषि-जीवन में नये युग का श्रीगणेश—सिंदरी कारख़ाने के रूप में भारत में एक बड़े रासायनिक इंजिनीयरिंग-उद्योग का श्रीगणेश हुआ। इस कारख़ाने का बिजली-घर बहुत शक्तिशाली है तथा इसकी मशीन भी विश्व में इस प्रकार की सबसे बड़ी मशीनों में से एक है।

सिंदरी कारख़ाने के निर्माण ने भारतीय किसानों में अधिक अच्छा जीवन बिता सकने की आशा का संचार किया है। आगामी वर्षों में सिंदरी का खाद-कारख़ाना पूर्व की समृद्धि का प्रतीक होगा। जहाँ आज मरुभूमि है, वहाँ कुछ ही वर्षों के अन्दर हरे-भरे खेत लहलहा उठेंगे। इस कारख़ाने का निर्माण-कार्य ऐसे विषम समय में प्रारंभ किया गया, जब कि विश्व-भर में सभी वस्तुओं की क़ीमतें चढ़ी हुई हैं, और महत्वपूर्ण सामग्रियों की कमी है। कारख़ाने पर भी इन परिस्थितियों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

राष्ट्र की मूल्यवान संपत्ति—अब तक भारत विदेशों से प्रति वर्ष चार लाख टन अमोनियम सल्फ़ेट आयात करता आया है। इसका मूल्य लगभग दस करोड़ रुपया होता है, जो विदेशी मुद्रा में भारत को चुकाना पड़ता था। लेकिन यह कारख़ाना सस्ती ख़ाद बनाता है, जिसका उपयोग औसत किसान भी कर सकते हैं और साथ ही विदेशों को जानेवाली इतनी बड़ी रक़म भी बच जाती है।

इसके अतिरिक्त सिंदरी खाद-कारख़ाना मूल रूप से रासायनिक उद्योगों का एक कारख़ाना है। बड़े रासायनिक

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उद्योगों का विकास किसी भी देश के पूर्ण औद्योगीकरण की सबसे प्रथम आवश्यकता है।

संबंधित गौण उद्योग—सिंदरी का खाद-कारख़ाना अपने उद्योग के लिए 'कोक' ही तैयार नहीं करता, बल्कि वहाँ टार, नेप्था, बेंज़ोल और गैस जैसे तत्संबंधी अन्य उत्पादन भी तैयार होते हैं। इनके अतिरिक्त प्रत्येक टन अमोनियम सल्फ़ेट के पीछे एक टन कैल्शियम कार्बोनेट तैयार होता है। इसकी सहायता से सिमेंट-उद्योग के विकास में बहुत सहायता मिलती है। इसलिए सिंदरी में ही एक सिमेंट का कारख़ाना भी खुल गया है। 'कोक' की भट्ठी से निकलनेवाली गैस का प्रयोग 'स्टील ट्यूब मिल' द्वारा किया जा सकता है। प्रति दिन एक हज़ार टन अमोनियम सल्फ़ेट का उत्पादन करने के अतिरिक्त कारख़ाना प्रति दिन तीन सौ टन अमोनियम का भी उत्पादन करता है।

लेकिन कारख़ाने का विकास केवल इन वस्तुओं के उत्पादन तक ही सीमित नहीं है। बिहार सरकार के कारख़ाने के पास ही "मैकानिकल ऍलक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग' का एक कालेज खोल दिया गया है। कुछ समय के अन्दर ही कारख़ाने के पास 'सूपर फ़ास्फ़ेट' और 'गंधक' का तेजाब बनाने के कारख़ाने भी स्थापित किये जाएँगे। यह आशा की जाती है कि सिंदरी का खाद-कारख़ाना एक ऐसा केन्द्र बन जाएगा, जिसके चारों ओर बृहत् रासायनिक उद्योगों का विकास होगा। कुछ ही वर्षों में सोडा-ऐश, यूरिया, अमोनियम नाइट्रेट इत्यादि महत्वपूर्ण

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रासायनिक पदार्थों के बनाने के लिए कारख़ाने खोल दिये जाएँगे। 'फ़ार्मलिडिहाइड' नामक रासायनिक पदार्थ के पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने पर प्लास्टिक-उद्योगों का विकास विस्तृत पैमाने पर किया जाएगा।

सिंदरी क्षेत्र के औद्योगीकरण में बहुत वर्ष नहीं लगेंगे। यदि हम कहें कि भविष्य में सिंदरी 'भारतवर्ष का पिट्सबर्ग' बन जाएगा, तो आश्चर्य की बात नहीं।

अन्य सभी सरकारी योजनाओं में इसको प्राथमिकता दी गयी है, क्योंकि अन्न के मामले में आत्मनिर्भर होने के लिए प्रयत्न करनेवाले देश के लिए इस प्रकार की योजनाओं का बहुत महत्व है। इस कारख़ाने के पूरा होने और उत्पादन प्रारंभ करने में पाँच वर्ष का समय लगा है।

विश्व के राष्ट्रों के पारस्परिक सहयोग के इस यत्न का सूत्रपात ई. सन् 1943 में हुआ था, जब कि भारत सरकार ने खाद्यान्न-नीति-समिति की सिफ़ारिश पर भारत में नाइट्रजन की खाद बनाने का निर्णय किया था। तीन अंग्रेज़ टेकनिकल विशेषज्ञों की समिति ने एक ऐसे कारख़ाने के निर्माण की सिफ़ारिश की, जिसमें जिप्सम द्वारा एक वर्ष में तीन लाख पचास हज़ार टन अमोनियम सल्फ़ेट बनाया जा सके। इस कारख़ाने को बनाने की ज़िम्मेदारी एक अमेरीकी इंजिनीयरिंग फ़र्म तथा एक ब्रिटिश फ़र्म को सौंपी गयी।

इस कारख़ाने के निर्माण में लगे श्रमिकों तथा ख़र्च की हुई सामग्री के संगृहीत आँकड़ों से कई बातों पर प्रकाश पड़ता है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अमेरीकी तथा ब्रिटिश इंजीनियरों ने आठ हज़ार भारतीय श्रमिकों को काम पर लगाया, जब कि कारख़ाने की मशीनें प्रायः संसार के सभी भागों से ख़रीदी गयीं। इसके निर्माण में लगभग 91,000 घन-गज़ कांक्रीट, 11,000 टन इमारती लोहा तथा भाप, पानी और गैसों के लिए 100 मील लंबे नल, 186 मील लंबे बिजली के तार तथा अन्य दूसरी बहुत-सी वस्तुएँ लगी हैं। कारख़ाने में लगी हुई मशीनों का कुल वज़न लगभग 45,000 टन हैं। इसके अतिरिक्त कारख़ाने के अन्दर बारह मील लंबी रेल की लाइन भी बिछी है।

अन्न की पैदावार को बढ़ाने का सबसे अच्छा और शीघ्र तरीक़ा है खादों का व्यवहार। फ़सल के पौधों को भी बढ़ाने के लिए भोजन की ज़रूरत होती है और यह भोजन उन्हें खाद अधिक से अधिक पहुँचा देती है। पौधों के भोजन में तीन वस्तुएँ सबसे मुख्य हैं—नाइट्रजन, फ़ास्फ़ोरस और पोटाश। इनमें से हमारे देश की ज़मीनों को नाइट्रजन और फ़ासफ़ोरस की अधिक ज़रूरत है। नाइट्रजन पहुँचाने का सबसे मुख्य ज़रिया है अमोनियम सल्फ़ेट और फ़ासफ़ोरस का सूपर-फ़ास्फ़ेट।

अमोनियम सल्फ़ेट खाद दुनिया में सब जगह बड़े पैमाने पर इस्तेमाल की जाती है। बहुत तरह की फ़सलों और बहुत तरह की ज़मीनों के लिए यह उपयुक्त है। इसे अकेले भी काम में लाते हैं और दूसरी खादों या गोबर, खली वग़ैरह के साथ भी। हाँ, खाद कितनी दी जाए और किस ढंग से, यह तो फ़सल और ज़मीन की क़िस्म पर निर्भर करता है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

'अधिक अन्न उपजाओ!' का जो आन्दोलन देश-भर में चल रहा है, उसको सफल बनाकर राष्ट्र को समृद्धि की ओर ले जाने में हमारे सिंदरी खाद-कारख़ाने का भी ज़बर्दस्त हाथ है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

12. चरित्र-संगठन

बाबू गुलाबराय

मनुष्य की विशेषता उसके चरित्र में है। चरित्र के कारण ही एक मनुष्य दूसरे से अधिक आदरणीय समझा जाता है। मनुष्य का आदर उसके पद, धन तथा विचार के कारण होता है, परन्तु ये सब एक प्रकार से बाहरी हैं, स्थायी नहीं। यदि स्थायी भी हों, तो उसके लिए जो आदर होता है, वह भय के कारण। धन का आदर वही करेगा, जिसको धनी से कुछ लाभ उठाने की इच्छा हो। विद्या का मान सज्जन अवश्य करते हैं; वह भी जब विद्या नियम एवं चरित्र से युक्त हो। विद्या, धन तथा पद के होते हुए भी रावण अपने राक्षसी कर्म के कारण निन्दनीय रहा। मनुष्य केवल विद्वान होने से कदापि वन्दनीय नहीं हो सकते।

मनुष्य का मूल्य उसके चरित्र में है। चरित्र में ही उसके आत्मबल का प्रकाश होता है और यह पता लगता है कि उसकी आत्मा कितनी बलवान है। मनुष्य का चरित्र ही बतलाता है कि वह कितने पानी में है।

यह चरित्र क्या है, जो इतना महत्व रखता है? यह चरित्र उन गुणों का समूह है, जो हमारे व्यवहार से संबंध रखते हैं; दार्शनिक बुद्धि, वैज्ञानिक कौशल, काव्य की प्रतिभा, ये सब वांछनीय हैं। परन्तु ये हमारे चरित्र से संबंध नहीं रखते।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फिर चरित्र में कौन-सी बात आती है ? विनय, उदारता, लालच में न पड़ना, धैर्य, सत्य-भाषण, वचन का प्रतिपालन करना और कर्तव्यपरायणता, ये सब गुण चरित्र में आते हैं।

चरित्र में इन सब बातों के अतिरिक्त और भी बहुत-सी बातें हैं, परन्तु ये ही मुख्य हैं। ये सब गुण प्रायः स्वाभाविक होते हैं, परन्तु अभ्यास से बढ़ाये जाते हैं। अभ्यास में सत्संग से बहुत सहायता मिलती है। अभ्यास के लिए बाल्यकाल ही विशेष उपयुक्त है। यह काल निर्माण का है। बनते समय मनुष्य जैसा बन जाए, वैसा ही जीवन-पर्यन्त रहता है। बाल्य-काल में स्नायुएँ कोमल रहती हैं तथा वे अन्य संस्कारों से दूषित नहीं होतीं। इस कारण उस काल में जो अभ्यास डाला जाता है, वह सहज ही में सिद्ध हो जाता है। प्रौढ़ावस्था में अन्य संस्कारों के दृढ़ हो जाने के कारण नये संस्कार कठिनाई से जमते हैं।

मनुष्य-जीवन का प्रभात, जिसमें सब प्रकार की शक्तियों के विकास की संभावना होती है, विद्यार्थी-जीवन में व्यतीत होता है। जो लोग इस विद्यार्थी-जीवन में हमारे पथ-प्रदर्शक हैं, उनका परम उत्तरदायित्व है कि वे हमें ऐसा रास्ता दिखाएँ कि यह काल केवल ज्ञान-संग्रह में ही न चला जाए। बाल्यावस्था फिर लौटकर नहीं आती। भावी चरित्र-निर्माण करने का यही सुअवसर है। विद्यार्थी और शिक्षक अपने-अपने उत्तरदायित्व को समझकर निम्नलिखित सिद्धान्तों पर ध्यान दें और उनसे विद्यार्थियों के चरित्र-संगठन में सहायता लें। यद्यपि ये सिद्धांत

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

प्राचीन काल से बतलाये जा रहे हैं, तथापि इनके प्रचार की आज भी उतना ही आवश्यकता है, जितनी प्राचीन काल में थी।

विनय

विनय विद्या का भूषण है। बिना विनय के विद्या शोभा नहीं देती। भगवद्गीता में ब्राह्मण का विशेषण 'विद्या-विनय-संपन्न' कहा गया है। जिस विद्या के साथ विनय नहीं, उससे कोई लाभ नहीं हो सकता। विनय केवल विद्या को ही नहीं, वरन् धन और बल दोनों को भी शोभा देती है।

भृगुजी ने भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर लात मारी, तो भगवान पूछने लगे कि महाराज! आपके पैर में चोट तो नहीं आयी? विनय का क्या ही उत्तम आदर्श है! विनय केवल शिष्टाचार के लिए ही आवश्यक नहीं है, वरन इसमें आत्मा की भी शुद्धि होती है। विनयशील मनुष्य अभिमान के दोष से बचा रहता है। नम्रभाव दूसरों में प्रेमभाव उत्पन्न करता है और नम्र मनुष्य अपने में अपूर्व शांति का अनुभव करता है। धन, बल और विद्या के होते हुए भी जो विनय प्रकट करता है, उसको कोई कायर नहीं कह सकता। भयवश विनय आत्मा को गिराती है, किन्तु प्रेम और निरभिमानयुक्त विनय आत्मा का उत्थान करती है।

विनय का अभाव एक प्रकार का खोखलापन प्रकट करता है। जिन लोगों में कोई श्लाघनीय गुण नहीं होता, वे अपनी ऐंठ तथा डाँट-फटकार से लोगों पर प्रभाव जमाते हैं, किन्तु गुणवानों को इसकी आवश्यकता नहीं। उनका प्रभाव स्वतःसिद्ध है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यदि विनयशील मनुष्य का समाज में प्रभाव कम हो, तो इसमें विनयशील मनुष्य का दोष नहीं, यह समाज का ही दोष है। इसके अतिरिक्त प्रेम का प्रभाव चाहे थोड़ा ही, पर दबाव के प्रभाव की अपेक्षा वह चिरस्थायी होता है। यद्‌यपि थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाए कि विनय सब स्थानों में काम नहीं देती—जैसे शत्रु के सम्मुख—तथापि हमको यह कहना पड़ेगा कि विनयशील पुरुष के लिए ऐसे अवसर कम आएँगे कि उनको अपनी विनय के कारण गौरवहीनता का दुखद अनुभव करना पड़े।

इनके अतिरिक्त जीवन में अधिकांश ऐसे अवसर आते हैं, जिस समय विनय से सगौरव कार्य सिद्‌ध हो सकता है। खेद तो इस बात का है कि हम लोग मित्रों और गुरुजनों के साथ भी विनय का व्यवहार नहीं करते। विनय के साथ निरभिमान, मनुष्य-जाति का आदर, सहनशीलता इत्यादि अनेक सद्‌गुण लगे हुए हैं। इसके अभ्यास में इन सब गुणों का अभ्यास हो जाता है।

उदारता

उदारता का अभिप्राय केवल निस्संकोच भाव से किसीको धन दे डालना ही नहीं, वरन् दूसरों के प्रति उदार भाव रखना भी है। उदार पुरुष सदा दूसरों के विचारों का आदर करता है और समाज में सेवक भाव से रहता है। 'उदारचरितानांतु वसुधैव कुटुम्बकम्' में जो उपदेश दिया गया है, वह केवल धन की उदारता नहीं, वरन् उसमें प्रेम और सेवा की भी उदारता

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सम्मिलित है। बहुत-से लोग आपकी धन-संबंधी उदारता की अपेक्षा नहीं करते। बहुत-से निर्धन भी इस बात को अपने गौरव के विरुद्ध समझते हैं कि वे आपकी आर्थिक सहायता लें, किन्तु वे आपके उदारतापूर्ण शब्दों के सदा भूखे रहते हैं।

यह न समझिये कि केवल धन से ही उदारता हो सकती है। सच्ची उदारता इस बात में है कि मनुष्य को मनुष्य समझा जाए, उसके भावों का उतना ही आदर किया जाए, जितना कि अपने भावों का। ऐसा आदर उदारता नहीं हैं, वरन् कर्तव्य है। प्रत्येक मनुष्य में आदरणीय गुण होते हैं। यह न समझना चाहिए कि धन, विद्या अथवा पद ही आदर का पात्र है। ग़रीब आदमी यदि ईमानदार है, तो वह बेईमान धनाढ्य की अपेक्षा कहीं अधिक आदरणीय है; क्योंकि ग़रीबों में ईमानदार रहना और भी कठिन है। ग़रीब ही हमारे आदर का पात्र है। मेहनत करनेवालों में एक दैवी प्रभा रहती है, जो सदा पूजा-योग्य है। जिनको लोग नीच एवं दलित समझते हैं, उनके प्रति आदर-भाव रखने से मनुष्य की आत्मा को सुख तथा शांति मिलती है।

जो लोग अपने साथियों के प्रति आदर-भाव रखते हैं, वे उनकी भूलों को, उनके हठ तथा वैर को स्वयं उपेक्षापूर्वक क्षमा कर देते हैं; ऐसे लोग परम उदार हैं। यह उदारता धन की उदारता की अपेक्षा कठिनतर है, तथा उसी अनुपात में अधिक श्लाघनीय भी है। धन की उदारता के साथ सबसे बड़ी एक और उदारता की आवश्यकता है। वह यह कि उपकृत के प्रति

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

किसी प्रकार एहसान न जताया जाए। एहसान दिखाना उपकृत को नीचा दिखाना है। एहसान जताकर उपकार करना अनुपकार है। इसलिए अपने यहाँ गुप्त दान का बड़ा महत्व माना गया है।

लालच

मनुष्य जितना ही बलवान माना गया, उतना ही अधिक कमज़ोर है। ज़रा-से अविचार से मनुष्य का पतन हो जाता है और उसका अपना वर्षों का तप धूल में मिल जाता है। लालच केवल धन का ही नहीं, वरन हर प्रकार का होता है। लालच इसलिए दिया जाता है कि मनुष्य स्वकर्तव्य से च्युत हो जाए। किन्तु मनुष्य की श्रेष्ठता इसीमें है कि वह न्याय से न हटे। महाराज दिलीप को हर प्रकार का लालच दिया गया, किन्तु वे कर्तव्य से न हटे। प्राप्त वस्तु के त्याग से अप्राप्त, परन्तु प्राप्य वस्तु का त्याग अधिक कठिन है।

यद्यपि लालच के सुलभ प्रसंग प्राप्त होने पर भी लालच के ऊपर विजय पाने में बहादुरी है, तथापि विज्ञ पुरुष का यही कर्तव्य है कि वह लालच से सदैव दूर रहे। ईसाई लोग ईश्वर से प्रार्थना करते हैं—"हे प्रभु! मुझे इम्तिहान में मत डाल।" जहाँ तक हो, थोड़े-से भी लालच से बचने का प्रयत्न किया जाए। जो लोग थोड़े लालच पर विजय नहीं पा सकते, वे बड़े लालच से किस प्रकार बच सकते हैं? हमारे यहाँ भगवान श्री रामचंद्रजी का ज्वलन्त उदाहरण मौजूद है। उन्होंने साम्राज्य का लालच छोड़ा, पर कर्तव्य से विमुख न हुए।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यदि वे ज़रा ढील डालते, तो महाराज दशरथ तुरन्त अपने विचार से फिर जाते।

यद्यपि लालच में पड़ जाने के उदाहरण विश्वामित्र आदि हैं, तथापि उनके साथ भीष्म पितामह आदि के उपाख्यानों में हमारे आदर्श मौजूद हैं। जो लोग लालच से बच सकते हैं, अपनी इच्छाओं को रोक सकते हैं, वे ही शक्तिसंपन्न और प्रभावशाली बनने में समर्थ होते हैं।

धैर्य

कठिनाइयों में चित्त को स्थिर रखना धैर्य कहलाता है। मनुष्य का जीवन-पथ कंटकाकीर्ण है। मनुष्य-जीवन में कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ हैं, किन्तु उनका सामना ज्ञानी लोग ज्ञान से करते हैं, मूर्ख लोग रोकर करते हैं। कठिन से कठिन स्थिति में भी प्रसन्न रहना आत्मा की उच्चता का सूचक है। हमें अपनी आध्यात्मिकता का गौरव होना चाहिए। कठिनाइयाँ प्रायः बाह्य होती हैं। यदि उनपर विजय पा लें, तो अच्छा ही है और विजय न पा सकें, तो उनसे दबकर दुखी होना कायरता है। कठिनाइयों में दुखी होने से वे बढ़ती रहती हैं, घटती नहीं। हमको अपनी अशक्तियों से निराशा न होनी चाहिए। कठिनाइयों में दुखित न होना ही उनपर विजय पाना है। कठिनाइयों में दुखित होना अपने विपक्षियों की जीत स्वीकार करना है। राजा हरिश्चंद्र धैर्य के एक ज्वलंत उदाहरण हैं। श्री रामचन्द्रजी के लिए कहा जाता है कि राज्याभिषेक के कारण उनको हर्ष नहीं

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हुआ और वनवास से वे म्लान-मुख भी नहीं हुए। इसीसे वे जगद्-वंदनीय हुए हैं।

सहकारिता

यद्यपि सहकारिता के लाभ प्रत्यक्ष हैं, तथापि कुछ लोग असहकारिता में ही अपना गौरव मानते हैं। लोगों का यह भ्रम है कि सहकारिता में हम अपनी न्यूनता स्वीकार करते हैं। मनुषय सामाजिक जीव है। उसका अकेले काम चलना अत्यन्त कठिन है। हम नहीं जानते कि हम स्वयं दूसरों की सहकारिता से कितना लाभ उठाते हैं। स्वयं अपनी सहकारिता से दूसरों को वंचित रखना कृतघ्नता है। सहकारिता में मनुष्य की एकता एवं समाज की स्थिति का मूल है। सहकारिता को चरित्र के भीतर इसलिए रखा है कि उसमें एक प्रकार का वृथाभिमान त्यागना पड़ता है।

सत्य बोलना और वचन का पालन करना

यद्यपि सत्य बोलना सबसे सहज बात है, क्योंकि उसमें नमक-मिर्च के लिए बुद्धि का प्रयोग नहीं करना पड़ता, तथापि सत्य बोलने के लिए बड़े आध्यात्मिक बल की आवश्यकता है। जहाँ तक हो, अप्रिय सत्य न बोला जाए, किन्तु जहाँ अप्रिय सत्य न बोलने से समाज के हित की हानि होती है, वहाँ उसको प्रियता के लिए दबाना पाप है। चरित्रवान पुरुष को अपनी आत्मा में इतना बल रखना चाहिए कि वह सत्य को निर्भयता के साथ कह सके। सत्य मनसा-वाचा-कर्मणा होना चाहिए। जो कहे वही करे, और जो कर सके वही कहे तथा कहकर फिर

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

न हटे—"प्राण जाहिं बरु वचन न जाई" का आदर्श अपने सामने रखे।

कर्तव्यपरायणता

सत्य के अतिरिक्त कर्तव्य में और भी बहुत-सी बातें आती हैं। यद्यपि यह कहना कठिन है कि कर्तव्य क्या है, तथापि मोटे तौर से सब लोग अपना-अपना कर्तव्य जानते हैं। जो बातें बचने की हैं, उनसे बचना चाहिए और जो करने की हैं, उनको सौ हानि उठाकर भी करना चाहिए। बस, यही कर्तव्य-परायणता है।

कर्तव्य वह नहीं, जो केवल काग़ज़ पर लिखा हो। प्रत्येक स्थिति के अनुकूल अपना कर्तव्य निश्चित कर हमको उसके संपादन में आरूढ़ रहना चाहिए। हमको केवल अपना कर्तव्य ही नहीं, वरन अपने कर्तव्य से भी अधिक करने के लिए तैयार रहना चाहिए। अपना पाठ याद करना हमारा कर्तव्य है, किन्तु सामने के घर में आग लगी हो, तो पाठ याद करने की अपेक्षा उस समय आग बुझाना हमारा कर्तव्य हो जाता है। वास्तव में जो कुछ हमें करना चाहिए, वही कर्तव्य है।

जिस काम को तुम कर सकते हो—फिर चाहे वह दूसरे के करने का ही हो—और यदि तुम देखो कि तुम्हारे न करने से दूसरे के हित की हानि होती है, तो उसको करना अपना परम कर्तव्य समझो। जो तुम्हारा कर्तव्य है, उससे कदापि न हटो—उसमें चाहे लोग निन्दा करें, चाहे स्तुति। कर्तव्य के पालन से ही हमारा आत्मगौरव रह सकता है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

13. नमक का दारोगा

जब नमक का नया विभाग बना और एक ईश्वरदत्त वस्तु के व्यवहार करने का निषेध हो गया, तो लोग चोरी-छिपे इसका व्यवहार करने लगे। अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ बारह थे। पटवारगिरी का सर्व-सम्मानित पद छोड़-छोड़कर लोग इस विभाग की बरकन्दाज़ी करते थे। इसके दारोगा-पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था। मुंशी वंशीधर भी रोज़गार की खोज में निकले। उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे, "बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं करारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ, न मालूम कब गिर पड़ूँ। अब तुम्हीं घर के मालिक-मुख़्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, ऐसा काम ढूँढ़ना, जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है, जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसीसे उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसीसे उसमें बरकत होती है। तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ, जो उचित समझो, करो।"

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इस उपदेश के बाद पिताजी ने आशीर्वाद दिया। वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे। ये बातें ध्यान से सुनीं और तब घर से चल खड़े हुए। इस विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुद्धि अपना पथदर्शक और आत्मावलम्बन ही अपना सहायक था। लेकिन अच्छे शकुन से चले थे, जाते ही जाते नमक-विभाग के दारोगा-पद पर प्रतिष्ठित हो गये। वेतन अच्छा और ऊपरी आय का तो कुछ ठिकाना ही न था। वृद्ध मुँशीजी को यह सुख-संवाद मिला, तो फूले न समाये।

(2)

जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही चौकीदार नशे में मस्त थे। मुंशी वंशीधर के आये अभी छः महीनों से अधिक न हुए, लेकिन इस थोड़े समय में ही उन्होंने अपनी कार्यकुशलता और उत्तम विचार से अफ़सरों को मोहित कर लिया था। अफ़सर लोग उनपर बहुत विश्वास करने लगे। नमक के दफ़्तर से एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थी। उसपर नावों का एक पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड़ बन्द किये मीठी नींद सोते थे। अचानक आँख खुली, तो गाड़ियों की गड़गड़ाहट तथा मल्लाहों का कोलाहल सुनाई दिया। उठ बैठे, इतनी रात गये गाड़ियाँ क्यों नदी के पार जा रही हैं? अवश्य कुछ न कुछ गोलमाल है। वरदी पहनी, तमंचा जेब में रखा और बात की बात में घोड़ा बढ़ाते हुए पुल पर आ पहुँचे। गाड़ियों की एक लंबी क़तार पुल से पार जाते देखी। डाँटकर पूछा, "किसकी गाड़ियाँ हैं?"

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा। आदमियों में कुछ कानाफूसी हुई, तब आगेवाले ने कहा—"पंडित अलोपीदीन की।"

"कौन पंडित अलोपीदीन?"

"दातागंज के।"

मुंशी वंशीधर चौंके। पंडित अलोपीदीन इस इलाक़े के सबसे प्रतिष्ठित ज़मींदार थे। लाखों रुपयों का लेन-देन करते थे, उधर छोटे से लेकर बड़े तक कौन ऐसे थे, जो उनके ऋणी न हों? व्यापार भी बड़ा लंबा चौड़ा था। बड़े चलते-पुरजे आदमी थे। अंग्रेज़ अफ़सर उनके इलाक़े में शिकार खेलने आते और उनके मेहमान होते। बारहों मास सदाव्रत चलता था।

मुंशीजी ने पूछा, "गाड़ियाँ कहाँ जाएँगी?" उत्तर मिला, "कानपुर।" लेकिन इस प्रश्न पर कि इनमें है क्या, फिर सन्नाटा छा गया। दारोगा साहब का सन्देह और भी बढ़ा। कुछ देर तक उत्तर की बाट देखकर वह ज़ोर से बोले, "क्या तुम सब गूंगे हो? हम पूछते हैं, इनमें क्या लदा है?"

जब इस बार भी कोई उत्तर न मिला, तो उन्होंने घोड़े को एक गाड़ी से मिलाकर बोरे को टटोला। भ्रम दूर हो गया। यह नमक के ढेले थे।

(3)

पंडित अलोपीदीन अपने सजीले रथ पर सवार, कुछ सोते, कुछ जागते चले आते थे। अचानक कई गाड़ीवानों ने घबराये हुए आकर जगाया और बोले, "महाराज! दारोगा ने गाड़ियाँ रोक दी हैं और घाट पर खड़े आपको बुलाते हैं।"

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। लेटे ही लेटे गर्व से बोले, "चलो, हम आते हैं।" फिर लिहाफ़ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले, "बाबूजी, आशीर्वाद! कहिये, हमसे कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गयीं? हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपादृष्टि रहनी चाहिए।"

वंशीधर रुखाई से बोले, "सरकारी हुक्म।"

पंडित अलोपीदीन ने हँसकर कहा, "हम न सरकारी हुक्म को जानते हैं और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था।" वंशीधर पर इसका कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारी की नयी उमंग थी। कड़ककर बोले, "हम उन नमकहरामों में नहीं हैं, जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। सबेरे आपका क़ायदे के अनुसार चालान ोगा। जमादार बदलू सिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ।"

पंडित अलोपीदीन स्तम्भित हो गये। गाड़ीवानों में हलचल मच गयी। पंडितजी के जीवन में कदाचित यह पहला ही अवसर था कि उनको ऐसी कठोर बातें सुननी पड़ीं। पंडितजी ने धर्म को धन का ऐसा निरादर करते कभी न देखा था। बहुत दीन भाव से बोले, "बाबू साहब! ऐसा न कीजिये, हम मिट जाएँगे। इज़्ज़त धूल में मिल जाएगी। हमारा अपमान

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करने से आपके क्या हाथ आएगा ? हम किसी तरह आपसे बाहर थोड़े ही हैं ।

साभिमान फिर अपने मुख़्तार से बोले, "लालाजी, एक हज़ार का नोट बाबू साहब को भेंट करो ।"

वंशीधर ने गरम होकर कहा, "एक हज़ार नहीं, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते ।"

धन धर्म की इस बुद्धहीन धृष्टता और देव-दुर्लभ त्याग पर बहुत झुँझलाया । अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा । धन ने उछल-उछलकर आक्रमण करने प्रारंभ किये । एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पंद्रह, और पंद्रह से बीस हज़ार तक नौबत पहुँची, किन्तु धर्म अलौकिक वीरता के साथ इस बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भांति अटल, अविचलित खड़ा था ।

अलोपीदीन निराश होकर बोले, "बाबू साहब, ईश्वर के लिए मुझपर दया कीजिए । मैं पच्चीस हज़ार पर निपटारा करने को तैयार हूँ ।"

"किसी तरह भी संभव नहीं ।"

"क्या चालीस हज़ार पर भी नहीं ?"

"चालीस हज़ार नहीं, चालीस लाख पर भी असंभव है । बदलू सिंह, इस आदमी को अभी हिरासत में ले लो । अब मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता ।"

धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला । अलोपीदीन चारों ओर निराश, कातर दृष्टि से देखने लगे । इसके बाद यकायक मूर्च्छित होकर गिर पड़े ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(4)

दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जगती थी। सबेरे ही देखिये तो बालक-वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिये वही पंडितजी के इस व्यवहार की टीका-टिप्पणी कर रहा था। निन्दा की बौछारें हो रही थीं, मानों संसार से अब पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, कल्पित रोज़नामचे भरनेवाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफ़र करनेवाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज़ बनानेवाले सेठ और साहूकार, यह सबके सब देवताओं की भाँति गर्दनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ-भरे, लज्जा से गर्दन झुकाये अदालत की तरफ़ चले, तो सारे शहर में हलचल मच गयी। मेलों में भी कदाचित आँखें इतनी व्यग्र न होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा।

किन्तु अदालत में पहुँचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील, मुख्तार उनके आज्ञापालक और अरदली के चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ़ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह क़ानून के पंजे में कैसे आये। ऐसा मनुष्य, जिसके पास असाध्य-साधन करनेवाला धन और

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अनन्य वाचालता हो, क्यों कानून के पंजे में आए? प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गयी। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र। गवाह थे, किन्तु लोभ से डाँवाडोल।

यहाँ तक कि मुँशीजी को न्याय भी अपनी ओर से कुछ खिंचा हुआ देख पड़ता था। वह न्याय का दरबार था। परन्तु उसके कर्मचारियों पर पक्षपात का नशा छाया हुआ था। किन्तु पक्षपात और न्याय का क्या मेल? जहाँ पक्षपात हो, वहाँ न्याय की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मुक़द्दमा शीघ्र ही समाप्त हो गया। डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने अपनी तजवीज़ में लिखा, 'पंडित अलोपीदीन के विरुद्ध दिये गये प्रमाण निर्मूल और भ्रमात्मक हैं। वह एक बड़े भारी आदमी हैं। यह बात कल्पना से बाहर है कि उन्होंने थोड़े-से लाभ के लिए ऐसा दुस्साहस किया हो; यद्यपि नमक के दारोगा मुँशी बंशीधर का अधिक दोष नहीं है, लेकिन यह बड़े खेद की बात है कि उनकी उद्दण्डता और अविचार के कारण एक भलेमानस को कष्ट झेलना पड़ा। हम प्रसन्न हैं कि वह अपने काम में सजग और सचेत रहता है, किन्तु नमक के महक़मे की बढ़ी हुई नमकहलाली ने उसके विवेक और बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया है। भविष्य में उसे होशियार रहना चाहिए।'

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वकीलों ने यह फ़ैसला सुना और उछल पड़े। अलोपीदीन मुस्कुराते हुए बाहर निकले। स्वजन-बांधवों ने रुपयों की लूट की। उदारता का सागर उमड़ पड़ा। उसकी लहरों ने अदालत की नींव तक हिला दी। जब वंशीधर बाहर निकले, तो चारों ओर से उनपर व्यंग्य-बाणों की वर्षा होने लगी। चपरासियों ने झुक-झुककर सलाम किये। किन्तु इस समय एक-एक कटु वाक्य, एक-एक संकेत उनकी गर्वाग्नि को प्रज्वलित कर रहा था। कदाचित इस मुक़द्दमे में सफल होकर वह इस तरह अकड़ते हुए न चलते। आज उन्हें संसार का एक खेदजनक विचित्र अनुभव हुआ। न्याय और विद्वत्ता, लम्बी-चौड़ी उपाधियाँ, बड़ी-बड़ी दाढ़ियाँ और ढीले चोग़े, एक भी सच्चे आदर का पात्र नहीं है।

वंशीधर ने धन से वैर मोल लिया था, उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुँचा। कार्यपरायणता का दंड मिला। बेचारे भग्नहृदय, शोक और खेद से व्यथित घर को चले। बूढ़े मुंशीजी पहले ही कुड़बुड़ा रहे थे कि 'चलते-चलते लड़के को समझाया था, लेकिन इसने एक न सुनी। बस, मनमानी करता है। हम तो कलार और कसाई के तगादे सहें, बुढ़ापे में भगत बनकर बैठें, और वहाँ बस, वही सूखी तनख़्वाह। हमने भी तो नौकरी की है और कोई ओहदेदार नहीं थे, लेकिन जो काम किया, दिल खोलकर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अन्धेरा रहे, मसजिद में अवश्य दिया

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जलाएँगे। खेद ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।"

इसके थोड़े ही दिनों बाद, जब मुंशी वंशीधर इस दुरवस्था में घर पहुँचे, और बूढ़े पिताजी ने यह समाचार सुना तो सिर पीट लिया। बोले, "जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूँ।" बहुत देर तक पछता-पछताकर हाथ मलते रहे। क्रोध में कुछ कठोर बातें भी कहीं और यदि वंशीधर वहाँ से टल न जाते, तो अवश्य ही यह क्रोध विकट रूप धारण करता। वृद्धा माता को भी दुख हुआ। जगन्नाथ और रामेश्वर-यात्रा की कामनाएँ मिट्टी में मिल गयीं। पत्नी ने तो कई दिन तक सीधे मुँह से बात नहीं की।

इसी प्रकार एक सप्ताह बीत गया। संध्या का समय था। बड़े मुँशीजी बैठे राम-नाम की माला फेर रहे थे। इसी समय उनके द्वार पर एक सजा हुआ रथ आकर रुका। हरे और गुलाबी परदे, पछहिये बैलों की जोड़ी, उनकी गरदनों में नीले धागे, सींग पीतल से जड़े हुए। कई नौकर लाठियाँ कंधों पर रखे साथ थे। मुँशीजी अगुआनी को दौड़े। देखा तो पंडित अलोपीदीन हैं। झुककर दंडवत किया और लल्लोचप्पो की बातें करने लगे, "हमारा भाग्य उदय हुआ, जो आपके चरण इस द्वार पर आये। आप हमारे पूज्य देवता हैं, आपको कौन-सा मुँह दिखाएँ, मुँह में तो कालिख लगी हुई है। किन्तु क्या करें, लड़का अभागा कपूत है, नहीं तो आपसे क्यों मुँह छिपाना पड़ता? ईश्वर निस्सन्तान चाहे रखे, पर ऐसी सन्तान न दे।"

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अलोपीदीन ने कहा, "नहीं भाई साहब, ऐसा न कहिये।"

मुंशीजी ने चकित होकर कहा, "ऐसी सन्तान को और क्या कहूँ ?"

अलोपीदीन ने वात्सल्यपूर्ण स्वर से कहा, "कुलतिलक और पुरुषों की कीर्ति उज्ज्वल करनेवालों में ऐसे कितने धर्मपरायण मनुष्य हैं, जो धर्म पर अपना सब कुछ अर्पण कर सकें ?"

पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर से कहा—"दारोगाजी, इसे खुशामद न समझिये, खुशामद करने के लिए मुझे इतना कष्ट उठाने की ज़रूरत न थी। उस रात को आपने अपने अधिकार-बल से मुझे अपनी हिरासत में लिया था, किन्तु आज मैं स्वेच्छा से आपकी हिरासत में आया हूँ। मैंने हज़ारों रईस और अमीर देखे, हज़ारों उच्च पदाधिकारियों से काम पड़ा, किन्तु मुझे परास्त किया तो आपने। मैंने सबको अपना और अपने धन का गुलाम बनाकर छोड़ दिया। मुझे आज्ञा दीजिये कि आपसे कुछ विनय करूँ।"

वंशीधर ने आलोपीदीन को आता देखा, तो उठकर सत्कार किया, किन्तु स्वाभिमान-सहित। समझ गये कि यह महाशय मुझे लज्जित करने और जलाने आये हैं। क्षमा-प्रार्थना की चेष्टा नहीं की, वरन उन्हें अपने पिताजी की यह ठकुरसुहाती की बात असह्य-सी प्रतीत हुई। पर पंडितजी की बातें सुनीं तो मन का मैल मिट गया। पंडितजी की ओर उड़ती हुई दृष्टि से देखा। सद्भाव झलक रहा था। गर्व ने अब लज्जा के सामने सिर झुका दिया। शर्माते हुए बोले, "यह आपकी उदारता है

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो ऐसा कहते हैं। मुझसे जो कुछ अविनय हुआ है, उसे क्षमा कीजिये। मैं धर्म की बेड़ी में जकड़ा हुआ था। नहीं तो वैसे मैं आपका दास हूँ। जो आज्ञा होगी, वह मेरे सिर-माथे पर।"

आलोपीदीन ने विनीत भाव से कहा, "नदी के तट पर आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की थी, किन्तु आज स्वीकार करनी पड़ेगी।"

वंशीधर बोले, "मैं किस योग्य हूँ? किन्तु जो कुछ सेवा मुझसे हो सकती है, उसमें त्रुटि न होगी।"

अलोपीदीन ने एक स्टाम्प लगा हुआ पत्र निकाला और उसे वंशीधर के सामने रखकर बोले, इस पद को स्वीकार कीजिये और अपने हस्ताक्षर कीजिये। मैं ब्राह्मण हूँ, जब तक यह सवाल पूरा न कीजिएगा, द्वार से न हटूँगा।"

मुंशी वंशीधर ने उस काग़ज़ को पढ़ा, तो कृतज्ञता से आँखों में आँसू भर आये। पंडित अलोपीदीन ने उन्हें अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियत किया था। छः हज़ार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोज़ाना ख़र्च अलग, सवारी के लिए घोड़े, रहने को बंगला, नौकर-चाकर मुफ़्त। कंपित स्वर से बोले, "पंडितजी, मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि आपकी इस उदारता की प्रशंसा कर सकूँ। किन्तु मैं ऐसे उंच्च पद के योग्य नहीं हूँ।"

अलोपीदीन हँसकर बोले, "मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही ज़रूरत है।"

वंशीधर ने गम्भीर भाव से कहा, "यों मैं आपका दास हूँ। आप-जैसे कीर्तिवान, सज्जन पुरुष की सेवा करना मेरे लिए

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सौभाग्य की बात है। किन्तु मुझमें न विद्या है, न बुद्धि, न वह अनुभव जो इन त्रुटियों की पूर्ति कर देता है। ऐसे महान कार्य के लिए एक बड़े मर्मज्ञ, अनुभवी मनुष्य की ज़रूरत है।"

अलोपीदीन ने क़लमदान से क़लम निकाली और उसे वंशीधर के हाथ में देकर बोले, "मुझे न विद्वत्ता की चाह है, न अनुभव की, न मर्मज्ञता की और न कार्यकुशलता की। इन गुणों के महत्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है, जिसके सामने योग्यता और विद्वत्ता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह क़लम लीजिये, अधिक सोच-विचार न कीजिये, दस्तख़त कर दीजिये। परामात्मा से मेरी यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारेवाला, बेमुरौवत, उद्दंड, कठोर, परन्तु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाये रखे।"

वंशीधर की आँखें डबडबा आयीं। हृदय के संकुचित पात्र में इतना एहसान न समा सका। एक बार फिर पंडितजी की ओर भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखा और काँपते हुए हाथ से मैनेजरी के काग़ज़ पर हस्ताक्षर कर दिये।

अलोपीदीन ने प्रफुल्ल होकर उन्हें गले लगा लिया।

—श्री प्रेमचन्द की कहानी का संक्षिप्त रूप

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

14. हमारी ताक़त और ज़िम्मेदारियाँ

पंडित जवाहरलाल नेहरू

आज पाँचवीं बार मैं यहाँ लाल क़िले की दीवार पर आया हूँ, इस प्यारे झंडे को फहराने के लिए। चार बरस हुए और मुनासिब था कि आप और हम उस मौक़े को मनाने के लिए यहाँ जमा हों, यहाँ इस लाल क़िले की दीवार पर या इसके क़रीब, क्योंकि इस क़िले की एक-एक ईंट और पत्थर और जैसे कि इस दिल्ली की एक-एक ईंट और पत्थर हिन्दुस्तान की तारीखों से भरा है। इस शहर ने हिन्दुस्तान की शान देखी और हिन्दुस्तान का गिरना देखा, हिन्दुस्तान का आगे बढ़ना देखा और उसका पतन देखा। दिल्ली की याद में, दिल्ली के दिमाग़ में ये सब पुरानी तस्वीरें हैं। तो इसलिए मुनासिब था कि इस वक़्त, जब कि एक नयी करवट क़ौम ने ली, दिल्ली शहर और यह दिल्ली का लाल क़िला इस बात को देखता और उससे इसका भी कोई संबन्ध किया जाता।

आप और हम चार बरस हुए, यहाँ जमा हुए थे। इस शहर में और हिन्दुस्तान के हर एक गाँव और शहर में खुशी मनायी गयी थी, क्योंकि अपने बड़े सफ़र की एक मंजिल पर हम पहुँचे थे, जो हमारी पुरानी आरज़ू थी, जिसके लिए जद्दोजहद किया था, जिसके लिए एक बड़े साम्राज्य के खिलाफ़ हमने मुक़ाबला किया। उसमें हमारे कामयाबी हुई और हम आख़िर में मंज़िल पर पहुँचे।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हमारी रूहानी ताक़त

हमने आज़ादी हासिल की ; किस तरह से ? कौन-सी ताक़त थी, जो हमने पैदा की? वह ताक़त थी एक रूहानी ताक़त और एक दिल की ताक़त जो कि कभी दुश्मन के सामने झुकती नहीं थी, जो कि कोई भी मुसीबत आए, फिर भी उससे घबराती नहीं थी। यह ताक़त महात्माजी ने हमारे दिलों में डाली। हम तो मामूली आदमी थे, कमजोर दिल के, आपस में लड़नेवाले; लेकिन उन्होंने यह सबक हमें सिखाया—अपनी मिसाल से और अपने लफ़्ज़ों से, अपनी बात से कि हमें ऊँचे रास्ते पर चलना है, हमें आपस में मिलकर रहना है, क्योंकि मिल्लत में ही ताक़त होती है। हमें इस देश को ज़बर्दस्त मज़बूत देश बनाना है। इसके चालीस करोड़ आदमी मिलकर एक तरफ़ देखते हैं, एक दूसरे की मदद करते हैं और अगर कोई दुश्मन हो, तो उसका मुक़ाबला करते हैं। इस तरह से हमारी ताक़त बढ़ी। किसकी ताक़त थी वह? बड़े हथियार की नहीं, बल्कि हमारे करोड़ों आदमियों के दिलों की ताक़त थी और दिलों का मेल था। अगर वह ताक़त कम हो, तो कोई ऊपर की ताक़त हमें बहुत दूर नहीं ले जाएगी।

लोग समझते हैं कि हम आज़द हो गये, तो यह काम पूरा हुआ और फिर अब हम आपस में जो चाहें करें—चाहे हम आपस में लड़ाई भी लड़ें या और तरह से अपनी ताक़त को ज़ाया करें। यह ग़लत बात है। याद रखिये, आज़ादी एक ऐसी चीज़ है कि जिस वक़्त ग़फ़लत में पड़े, वह फिसल जाएगी।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आज की हालत

आज अजीब हालत है। मैंने देखा, पुराने ज़माने में अकसर बड़े ज़ोरों से काम होते थे, मुक़ाबला होता था आज़ादी की लड़ाई में, और फिर मैं देखने लगा कि अकसर लोग जो पहले काम भी करते थे, अब उस काम की याद में आराम करते हैं। जहाँ काम के बजाय आराम ज़्यादा हुआ, वहाँ क़ौम कमज़ोर हुई। हिम्मत के बजाय सुस्ती आ गयी, तो क़ौम कमजोर हुई। इसलिए ज़रा हमें बुनियादी बातों की तरफ़ देखना है।

एक दिन सबेरे हमारे राष्ट्रपति राजघाट गये। मैं भी गया, कुछ और लोग भी गये। महज़ एक फ़र्ज़ अदा करने नहीं, बल्कि कुछ ताक़त लेने अपने दिमाग़ और दिल को उस पुरानी याद से। यह याद तो हमेशा हरी रहती है। लेकिन फिर भी मुनासिब है कि हम उसको बार-बार अपने सामने लाएँ, उन उसूलों को, उस सबक़ को। तो मैं वहाँ गया और वह तस्वीर मेरे सामने आयी और वह लफ्ज़ मेरे कानों में गूँजे, जो बरसों हुए हम सुना करते थे और अब उनके सुनने से महरूम हो गये। वहाँ से यहाँ आपके सामने हाज़िर हुआ और मेरा ख़याल दौड़ा इस आजकल के हिन्दुस्तान की हालत की तरफ़ कि हम सब, आप हम और इस मुल्क के रहनेवाले एक किश्ती पर हैं और किश्ती हिली, तो हम सब डूबे। यह न कोई समझे कि अगर मुल्क गिरे, तो कोई बच जाता है। अगर मुल्क आगे बढ़े, तो सब लोग आगे बढ़ते हैं। तो हमें यह समझना है कि हमारा नाता क्या है और रिश्ता क्या है। आपस में आप बहस करें, अलग-

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अलग दल और अलग-अलग पार्टी बनाएँ और चुनाव में जाएँ। लेकिन हमारा नाता और रिश्ता ज़बर्दस्त और हर वक़्त का है। और ख़ासकर इस वक़्त, जब कि दुनिया में ख़तरा और हमारे मुल्क में तरह-तरह के बाहरी और अन्दरूनी ख़तरे हैं, तब और भी ज़रूरी हो जाता है कि हम अपनी छोटी-छोटी बातों को दबाएँ और गिराएँ और अपने को तगड़ा करें, मज़बूत करें और आपस में एकता करें। याद रखिये, हम 40 करोड़ लोग हैं। ज़ाहिर है कि कोई 40 करोड़ हिन्दुस्तान में फ़रिश्ते नहीं हैं। कमज़ोर दिल के हैं, डरपोक दिल के हैं। कई लोग ऐसे भी हैं कि जो मुल्क के साथ गद्दारी करें। सब तरह के लोग मुल्क में होते हैं। तो हमें इस बात से घबराना नहीं है। बाहर के मुल्कों से लोग आ सकते हैं झगड़ा-फ़साद करने, क्योंकि हर एक जानता है कि आख़िर में ताक़त मुल्क में अमन और एकता क़ायम करने से होती है। लेकिन कुछ लोग तो बेवकूफ़ी से या अपनी जिहालत से, और कुछ लोग समझ-बूझकर झगड़ा पैदा करते हैं, ताकि मुल्क कमज़ोर हो।

असली लड़ाई

हमारे मुल्क के अन्दर काफ़ी बड़े-बड़े सवाल हैं। हमारी उम्मीदें थीं, हमने तरह-तरह के नक़्शे बनाये थे। हमने एक काम पूरा किया, हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ। इसके बाद दूसरी लड़ाई हमें लड़नी है और वह लड़ाई है असली लड़ाई, हिन्दुस्तान की ग़रीबी से लड़ाई, हिन्दुस्तान की बेकारी से लड़ाई और उसमें जीतें तो सारी क़ौम, 30-40 करोड़ आदमी, हिन्दुस्तान के हलके-

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हलक़े उठेंगे और उनकी मुसीबतें कम होंगी। यह असली लड़ाई थी जो हम लड़ना चाहते थे; लेकिन बदक़िस्मती से आज़ादी आयी, सियासी आज़ादी आयी; हम फँस गये किस-किस मुसीबत में, और उधर आगे न बढ़ सके। सबसे बड़े रंज की बात यह हुई कि जो आज़ादी का फ़ायदा क़ौम को मिलना चाहिए था, कुछ मिला ज़रूर—इसमें कुछ शक नहीं, लेकिन पूरी तौर से नहीं मिला और काफ़ी परेशानियाँ आप लोगों को और हिन्दुस्तान के रहनेवालों को रहीं, इन्हें आप जानते हैं।

आप शायद जानते हों कि अभी कुछ दिन हुए एक योजना—एक पाँच बरस की योजना निकाली गयी है, जिसका मतलब यह है कि किस तरह से हम इस बड़ी लड़ाई को जीतें, यानी हिन्दुस्तान की ग़रीबी के ख़िलाफ़ लड़ाई और बेकारी के खिलाफ़ लड़ाई; किस तरह से हिन्दुस्तान में ज़्यादा काम हो, ज़्यादा पैदावर हो, ज़्यादा धन और दौलत निकले, जो कि आम लोगों में जाए। बड़ा काम है, थोड़े-से आदमियों का नहीं, चालीस करोड़ आदमियों के लिए है।

स्वावलंबी बनें

बाज़ लोग कहते हैं कि बाहर से मदद लेकर उस काम को करो। हम बाहर से मदद लेने को तैयार हैं, बशर्ते कि उसमें किसी क़िस्म का कोई बंधन न हो, और बाहर की मदद कुछ-कुछ हमें मिलती भी है। लेकिन आप याद रखें कि बहुत ज़्यादा बाहर की तरफ़ देखना, मदद के लिए भरोसा करना—

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चाहे पैसे के लिए या किसी और बात के लिए—क़ौम को कमज़ोर करना है। वह क़ौम अपाहिज हो जाती है जो दूसरे की तरफ़ देखती है। आपका सरकारी अफ़सरों की तरफ़ बहुत देखना कि हर बात गवर्नमेण्ट कर दे, वह भी ग़लत है। गवर्नमेण्ट का तो फ़र्ज़ है उन बातों का करना; लेकिन यह पुराना रिवाज़ अंग्रेज़ी राज्य के ज़माने में था। अंग्रेज़ी राज्य के ज़माने में मशहूर था कि जो अंग्रेज़ अफ़सर थे उनके खुशामदी-लोग उनसे कहते थे कि आप माँ-बाप हैं। ख़ैर, अब कोई माँ-बाप यहाँ नहीं रहा है। मैं आपसे यह कह देता हूँ और हम नहीं चाहते कि हम लोगों का ध्यान हर वक़्त ऊपर रहे या दायें-बायें रहे कि कोई आदमी कुछ कर दे, या कोई हुक़ूमत या म्युनिसिपैलिटी। अगर हुकूमत या म्युनिसिपैलिटी, जो कुछ हो, वह अपना फ़र्ज़ ठीक नहीं करती, तो आप आवाज़ उठाइये। ठीक है, आपका हक़ है। अपनी राय दीजिए, जो ज़ाब्ते से है।

पड़ोसी की नुक्ताचीनी तो सब कर सकते हैं, लेकिन जो बात आपके समझने की है, वह यह कि हम खुद क्या कर सकते हैं। हम बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाते हैं और योजनाओं में बेशुमार रुपया ख़र्च होता है। कहाँ से रुपया आए? आख़िर रुपया आप देते हैं, टैक्स में। कहीं आसमान से तो नहीं टपकता। अगर हम और मुल्कों से कर्ज़ा लें, तो उस कर्ज़ का बोझ होता है, कर्ज़ा अदा करना होता है। तो फिर कैसे हम ये बातें करें—बड़ी-बड़ी चीज़ें जो करनी हैं? ख़ैर, बहुत तरीक़े हैं, लेकिन एक बात है। अगर बड़ी-बड़ी बातों को छोड़कर एक-एक गाँव में

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

और एक-एक शहर में एक-एक इन्सान थोड़ी मेहनत भी करे, तो कुछ न कुछ हो सकता है।

मैं मिसाल आपको देता हूँ और तजुरबे से। अपने कई प्रदेशों में, प्रांतों में, ख़ासकर देहातों में, हमने प्रोग्राम बनाया कि लोग अपनी मेहनत से सड़कें बनाएँ। सड़कें बहुत कम हैं, आप जानते हैं। देहातों में मकान बनाएँ। पंचायत-घर बनाएँ, कहीं-कहीं छोटी नहरें खोदें। कहीं-कहीं छोटे स्कूल-विद्यालय बनाएँ। अपनी मेहनत से, यानी सरकारी तौर से नहीं। सरकारी तौर से उन्हें कुछ मदद मिल जाए; यह न समझिये कि यह कोई सरकारी चीज़ है। ऊपर से करने की तो है, लेकिन एक-एक आदमी की चीज़ है और सब लोग मिले, तो फिर हमें न बाहर के पैसे की ज़रूरत है, न मदद की।

असली दौलत

याद रखिये कि पैसे की जो बड़ी चर्चा होती है, इससे हमारे दिमाग़ कुछ फिर गये हैं। बहुत ज़्यादा दूकानदारी के दिमाग़ हो गये हैं और कुछ ग़लत समझने लगे हैं कि पैसा क्या चीज़ है। अफ़सोस यह है कि पैसा एक ज़रूरी चीज है आजकल की ज़िन्दगी में, लेकिन आख़िर में जो दौलत है इन्सान के पास, वह उसकी मेहनत, दिमाग़ की क़ाबिलियत और हाथ-पैर की ताकत है। आप और हम अपनी मेहनत से दौलत पैदा करते हैं। इसलिए जो असली दौलत है वह इन्सान की मेहनत है, तो इन्सान काफ़ी है—तगड़े, काम करनेवाले। क्यों न

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हम उनके काम से और मेहनत से नयी दौलत पैदा करें, जो उनके पास जाए और मुल्क आगे बढ़े? अमरीका एक देश है, बड़ा दौलत-मंद देश है, लेकिन आप यह न भूलिये कि उसकी दौलत आती कहाँ से है। दौलत उनकी मेहनत से और क़ाबिलियत से आती है। कोई बाहर से नहीं टपक पड़ती है, क्योंकि आख़िर में कोई देश अपनी मेहनत से, अपने बाहुबल से चल सकता है, औरों के बल से नहीं।

इसलिए कभी-कभी मैं देखता हूँ हिन्दुस्तान में, तो मुझे ख़याल आता है कि कुछ पुरानी गुलामी के तर्ज़ और ख़यालात हमसे दूर नहीं हुए और फिर हर वक़्त ऊपर देखते हैं, सरकार की तरफ़ कि वह कर दे और कुछ इन्तज़ार करते हैं या नाराज़ होते हैं या अपने को बदक़िस्मत समझकर बैठ जाते हैं। यह नहीं कि हमें और कुछ काम नहीं है, तो बजाय इसके कि दरवाज़े-दरवाज़े या दफ़्तरों में टकरावें, हम फावड़ा लेकर खोदें और कुछ काम करें, अपना शरीर भी अच्छा करें, और कुछ पैदा भी करें उससे।

मुश्किल तो यह है कि हर एक घर में ऐसे लोग हैं—अब चाहे पहले से कम हों, लेकिन अब भी काफ़ी हैं—समझते हैं कि इज़्ज़त एक बाबू होने में और बाबुओं के काम करने में है। ख़ैर, बाबू लोग अच्छे होते हैं, यानी बाबू से मेरा मतलब है जो कि दफ़्तरों में काम करें या बड़े अफ़सर हों या छोटे, सब एक तरह उस क़िस्म का काम करते हैं। वह ज़रूरी काम है। लेकिन मुल्क बढ़ता है हज़ार बातों से, हज़ार कामों से, न कि

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हर एक आदमी के कान पर क़लम रखकर दफ़्तर में बैठकर काम करने से। मुल्क में बहुत काफ़ी काम हैं। लोग मिलकर करें, खुद कुछ पैदा करें, बजाय इसके कि हर एक आदमी नौकरी की तरफ़ देखे।

आज के दिन ख़ास तौर से हमें उन पुराने उसूलों को याद रखना है, जो महात्माजी ने हमारे सामने रखे—जिस रास्ते पर चलकर मुल्क को आज़ाद किया। आख़िर उस रास्ते को हम छोड़ दें, फिर क्या हमारा हशर होगा? ख़ैर, मुझे तो इतमीनान है कि हमारे लिए बुनियादी तौर से वही एक रास्ता है, जो गांधीजी ने दिखाया। उसपर हमें चलना है।

शांति का प्रतीक: हमारा झण्डा

इस झण्डे के नीचे मैं खड़ा हूँ और आप भी इस झण्डे को देख रहे हैं। यह एक प्यारा झंडा है और इसमें बहुत सारी बातें हैं। एक तो यह कि यह निशानी है आज़ादी की लड़ाई की। इसके नीचे खड़े होकर कितनी बार हमने प्रतिज्ञा ली, इक़रार लिया कि हम उन उसूलों पर क़ायम रहेंगे, हम हिन्दुस्तान की हिफ़ाज़त करेंगे और आजाद रखेंगे, हम हिन्दुस्तान में एकता करेंगे और मिलकर रहेंगे, कभी नीच बात नहीं करेंगे। यह हमने प्रतिज्ञा की। यह एक पुरानी निशानी है। यह याद दिलाती है हमारी आज़ादी की लड़ाई की और उसमें की कुर्बानियों की। उसीके साथ उसमें आजकल की निशानी है और आप देखेंगे कि पुराना जो झंडा था, उसको हमने रखा और

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उसमें थोड़ा-सा फ़र्क भी कर दिया। वह फ़र्क़ क्या था? इसके बीच में एक चक्र आ गया। और उस चक्र ने आकर क्या किया? सारे हिन्दुस्तान के पिछले हज़ार वर्ष की तारीख़ को इस झंडे में लाकर रख दिया, क्योंकि यह चक्र हिन्दुस्तान की हज़ारों वर्ष पुरानी निशानी है। हिन्दुस्तान की लड़ने की नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान के शांति-प्रिय होने की, अमन-पसन्द होने की यह निशानी है। हिन्दुस्तान के लोग हमेशा इसे याद रखें, और सच्चाई और धर्म के रास्ते पर चलें। यह निशानी पुरानी है अशोक के पहले की, लेकिन सम्राट अशोक के नाम से ख़ास तौर से बँधी है।

इसके इस झंडे में रखने से हमारी हज़ारों बरस की तारीख़ इस झंडे से बंध गयी, और उन हज़ारों बरसों से जो हमारा सामूहिक ध्येय था, जिस तरफ़ हिन्दुस्तान के ऊँचे लोगों की निगाहें थीं, वे बातें इसमें आ गयीं। तो इसमें पुराना ज़माना आया, हज़ारों बरस का, इसमें पिछला जमाना आया, चालीस-पचास बरस का, आज़ादी की लड़ाई का और इसमें आज आया और आख़िर इसमें आनेवाला कल आया, जो हमें दिखाता है कि हम किधर जाएँगे। पुराना ज़माना हुआ। उससे हम सबक़ सीखें। उसकी अच्छी बातें याद रखें, लेकिन आख़िर में हमारी निगाहें आगे होनी हैं, भविष्य की तरफ़ होनी हैं। जो आनेवाला ज़माना है, उसके लिए हमें तैयार होना है, तगड़ा होना है, मज़बूत होना है, और जो-जो तकलीफ़ें-मुसीबतें आएँ उनसे हिम्मत हारें नहीं, बल्कि उनका मज़बूती से सामना करना है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हिन्दुस्तान का ज़बर्दस्त भविष्य

मुझे इतमीनान है कि हिन्दुस्तान का भविष्य एक ज़बर्दस्त भविष्य है, इस माने में नहीं कि हम और मुल्कों को फ़तह करें और हराएँ। वह ज़माने गये मुल्क़ों के लिए और जो कोई बड़े से बड़ा मुल्क़ दूसरे मुल्क को दबाना चाहे और अपनी हुकूमत में लाना चाहे, वह आजकल के ज़माने में बदनाम होता है और आख़िर में उसे हार माननी होती है। इसलिए हममें बड़ापन यह नहीं है कि हम और क़ौमों को दबाएँ। बड़ापन यह है कि हम अपने मुल्क़ को ऊँचा करें, और क़ौमों से दोस्ती करें, अपना फ़ायदा करें और दुनिया का फ़ायदा करें। इस रास्ते पर हमें चलना है और इस नाज़ुक मौक़े पर हमें हर बात के लिए तैयार रहना है। आप सबको उसमें मिलकर आगे बढ़ना है, क्योंकि हम सब हमसफ़र हैं। एक यात्रा पर हमें आगे बढ़ना है और अगर हम रास्ते में एक-दूसरे से लड़ें तो आगे कैसे बढ़ सकते हैं?

जय हिन्द !

[अगस्त सन् 1951 को दिल्ली के लाल क़िले से स्वतंत्रता-दिवस के अवसर पर दिये गये भाषण का एक अंश।]

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

15. एक कुत्ता और एक मैना

श्री हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव के मन में आया कि शांति-निकेतन को छोड़कर कहीं अन्यत्र जाएँ। स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था। शायद इसलिए, या पता नहीं क्यों, मैंने पाया कि वे श्रीनिकेतन के पुराने तिमंज़िले मकान में कुछ दिन रहे। शायद मौज में आकर ही उन्होंने यह निर्णय किया हो। वे सब से ऊपर के तल्ले में रहने लगे। उन दिनों ऊपर तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियाँ थीं और वृद्ध तथा क्षीणवपु रवीन्द्रनाथ के लिए उसपर चढ़ सकना असम्भव था। फिर भी बड़ी कठिनाई से उनको वहाँ ले जाया जा सका।

उन दिनों छुट्टियाँ थीं। आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गये थे। एक दिन हमने सपरिवार उनके 'दर्शन' की ठानी। 'दर्शन' को मैं जो यहाँ विशेष रूप में दर्शनीय बनाकर लिख रहा हूँ, उसका कारण यह है कि गुरुदेव के पास जब कभी मैं जाता था, प्रायः वे यह कहकर मुस्कुरा देते थे कि "दर्शनार्थी है क्या?" शुरू-शुरू में मैं उनसे ऐसी बंगला में बात करता था, जो वस्तुतः हिन्दी मुहावरों का अनुवाद हुआ करती थी। किसी बाहर के अतिथि को जब मैं उनके पास ले जाता था, तो कहा करता था—"एक भद्र लोक आपनार दर्शनेर ऐसे छेन।" यह बात हिन्दी में जितनी प्रचलित है, उतनी बंगला में नहीं।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इसलिए गुरुदेव ज़रा मुस्कुरा देते थे। बाद में मुझे मालूम हुआ कि मेरी यह भाषा कहीं अधिक पुस्तकीय है और गुरुदेव ने उस 'दर्शन' शब्द को पकड़ लिया था। इसलिए जब कभी मैं असमय में पहुँच जाता तो, वे हँसकर पूछते थे—"दर्शनार्थी लेकर आये हो क्या?" यहाँ यह दुख के साथ कह देना चाहता हूँ कि अपने देश के दर्शनार्थियों में कितने ही ऐसे प्रगल्भ होते थे कि समय-असमय, स्थान-अस्थान, अवस्था-अनवस्था की एकदम परवाह नहीं करते थे और रोकते रहने पर भी आ ही जाते थे। ऐसे 'दर्शनार्थियों' से गरुदेव कुछ भीत-से रहते थे। अस्तु, मैं मय बाल-बच्चों के एक दिन श्रीनिकेतन जा पहुँचा। कई दिनों से उन्हें देखा नहीं था।

गुरुदेव यहाँ बड़े आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़-भाड़ उतनी नहीं होती थी, जितनी शांतिनिकेतन में। जब हम लोग ऊपर गये, तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठे अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यानस्तिमित नयनों से देख रहे थे। हम लोगों को देखकर मुस्कुराये बच्चों से ज़रा छेड़छाड़ की, कुशल-प्रश्न पूछे और फिर चुप हो रहे। ठीक उसी समय उनका कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और उनके पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँख मूँदकर अपने रोम-रोम से उस स्नेह-रस का अनुभव करने लगा। गुरुदेव ने हम लोगों की ओर देखकर कहा, "देखा तुमने, ये आ गये! कैसे इन्हें मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ? आश्चर्य है! और देखो, कितनी परितृप्ति इनके चेहरे पर दिखाई दे रही है!"

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे। किसीने उसे राह नहीं दिखायी थी, न उसे यह बताया था कि उसके स्नेहदाता यहाँ से दो मील दूर पर हैं और किसीने इस भाव की एक कविता लिखी थी—"प्रति दिन प्रातःकाल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर आसन के पास तब तक बैठा रहता है, जब तक अपने हाथों के स्पर्श से मैं इसका संग नहीं स्वीकार करता। इतनी-सी स्वीकृति पाकर ही उसके अंग-अंग में आनंद का प्रवाह बह उठता है। इस वाक्यहीन प्राणिलोक में सिर्फ़ यही एक जीव अच्छा-बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सका है, उस आनंद को देख सका है जिसे प्राण दिया जा सकता है, जिसकी चेतना असीम चैतन्य लोक में राह दिखा सकती है। जब मैं इस मूक हृदय का प्राणपण आत्मनिवेदन देखता हूँ, जिसमें वह अपनी दीनता बताता रहता है, तब मैं यह सोच ही नहीं पाता कि उसने अपने सहज बोध से मानव-स्वरूप में कौन-सा अमूल्य आविष्कार किया है, इसकी भाषाहीन दृष्टि की करुण व्याकुलता जो कुछ समझती है, उसे समझा नहीं पाती और मुझे इस सृष्टि में मनुष्य का सच्चा परिचय समझा देती है।" इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ, तब मेरे सामने श्रीनिकेतन के तितल्ले पर की वह घटना प्रत्यक्ष-सी हो जाती है। वह 'आँख मूँदकर अपरिसीम आनंद', वह 'मूक हृदय का प्राणपण

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आत्मनिवेदन' मूर्तिमान हो जाता है। उस दिन मेरे लिए वह एक छोटी घटना थी, आज वह विश्व की अनेक महिमाशाली घटनाओं की श्रेणी में बैठ गयी है। एक आश्चर्य की बात और इस प्रसंग में उल्लेख की जा सकती है। जब गुरुदेव का चिताभस्म कलकत्ता से आश्रम में लाया गया, उस समय भी न जाने किस सहज बोध के बल पर वह कुत्ता आश्रम के द्वार तक आया और चिताभस्म के साथ अन्धाधुंध आश्रमवासियों के साथ शांत-गंभीर भाव से उत्तरायण तक गया। आचार्य क्षितिमोहन सेन सबके आगे थे। उन्होंने मुझे बताया है कि वह चिताभस्म के कलश के पास थोड़ी देर तक चुपचाप बैठा भी रहा।

कुछ और पहले की घटना याद आ रही है। उन दिनों मैं शांतिनिकेतन में नया ही आया था। गुरुदेव से अभी उतना धृष्ट नहीं हो पाया था। गुरुदेव उन दिनों सुबह अपने बगीचे में टहलने के लिए निकला करते थे। मैं एक दिन उनके साथ हो गया था। मेरे साथ एक और पुराने अध्यापक थे और सही बात तो यह है कि उन्होंने ही मुझे भी अपने साथ ले लिया था। गुरुदेव एक-एक फूल-पत्ते को ध्यान से देखते हुए अपने बग़ीचे में टहल रहे थे और उक्त अध्यापक महाशय से बातें करते जा रहे थे। मैं चुपचाप सुनता जा रहा था। गुरुदेव ने बातचीत के सिलसिले में एक बार कहा, "अच्छा, साहब, आश्रम के कौए क्या हो गये? उनकी आवाज़ सुनाई ही नहीं देती।" न तो मेरे साथी उन अध्यापक महाशय को यह ख़बर थी और न मुझे ही। बाद में मैंने लक्ष्य किया कि सचमुच कई

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिनों से आश्रम में कौए नहीं दीख रहे हैं। मैंने तब तक कौओं को सर्वव्यापक पक्षी ही समझ रखा था। अचानक उस दिन मालूम हुआ कि ये भले आदमी भी कभी-कभी प्रवास को चले जाते हैं या चले जाने को बाध्य होते हैं। एक लेखक ने कौओं की आधुनिक साहित्यिकों से उपमा दी है, क्योंकि इनका मोटो है—'मिस्चीफ़ फ़ार मिस्चीफ़्स सेक' (शरारत के लिए शरारत।) तो क्या कौओं का प्रवास भी किसी शरारत के ही उद्देश्य से था? प्राय: एक सप्ताह के बाद बहुत कौए दिखाई दिये।

एक दूसरी बार मैं सबेरे गुरुदेव के पास उपस्थित था। उस समय एक लंगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, "देखते हो, यह यूथभ्रष्ट है। रोज़ फुदकती है, ठीक यहीं आकर। मुझे इसकी चाल में एक करुण भाव दिखाई देता है।" गुरुदेव ने अगर कह न दिया होता, तो मुझे उसका करुण भाव एकदम नहीं दीखता। मेरा अनुभव था कि मैना करुण भाव दिखलानेवाली पक्षी है ही नहीं। वह दूसरों पर अनुकंपा ही दिखाया करती है।

तीन-चार वर्ष से मैं एक नये मकान में रहने लगा हूँ। मकान के निर्माताओं ने दीवारों में चारों ओर एक-एक सूराख़ छोड़ रखा है। यह कोई आधुनिक वैज्ञानिक ख़तरे का समाधान होगा। सो, एक-एक मैना-दंपति नियमित भाव से प्रति वर्ष यहाँ गृहस्थी जमाया करते हैं। तिनके और चिथड़ों का अंबार लगा देते हैं। भलेमानस गोबर के टुकड़े तक ले आना नहीं भूलते। हैरान होकर हम सूराखों में ईंट भर देते हैं, परन्तु है ख़ाली-बची

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जगह का भी उपयोग कर लेते हैं। पति-पत्नी जब कोई एक तिनका लेकर सूराख़ में रखते हैं, तो उनके भाव देखने लायक़ होते हैं। पत्नी देवी का तो क्या कहना! एक तिनका ले आयी, तो फिर पैर पर खड़ी होकर ज़रा पंखों को फटकार दिया, चोंच को अपने ही पैरों से साफ़ कर लिया और नाना प्रकार की मधुर और विजयोद्घोषी वाणी में गाना शुरू कर दिया। हम लोगों की तो उन्हें कोई परवाह ही नहीं रहती। अचानक इसी समय अगर पति देवता भी कोई काग़ज़ का टुकड़ा लेकर उपस्थित हुए, तब तो कहना ही क्या! दोनों के नाच-गान और आनन्द-नृत्य से सारा मकान मुखरित हो उठता है। इसके बाद ही पत्नी देवी जरा हम लोगों की ओर मुख़ातिब होकर लापरवाही भरी अदा से कुछ बोल देती हैं। पति देवता भी मानों मुस्कुराकर हमारी ओर देखते, कुछ रिमार्क करते और मुँह फेर लेते हैं। पक्षियों की भाषा तो मैं नहीं जानता, पर मेरा निश्चित विश्वास है कि उनमें कुछ इस तरह की बातें हो जाया करती हैं :—

पत्नी—ये लोग यहाँ कैसे आ गये जी ?

पति—ऊँह, बेचारे आ गये हैं, तो रह जाने दो! क्या कर लेंगे ?

पत्नी—लेकिन फिर भी इनको इतना तो ख़याल होना चाहिए कि यह हमारा प्राइवेट घर है।

पति—आदमी जो हैं; इतनी अक़्ल कहाँ ?

पत्नी—जाने भी दो।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पति—और क्या ?

सो इस प्रकार की मैना कभी करुण हो सकती है, यह मेरा विश्वास ही नहीं था। गुरुदेव की बात पर मैंने ध्यान से देखा, तो मालूम हुआ कि सचमुच ही उसके मुख पर एक करुण भाव है। शायद यह विधुर पति था, जो पिछली स्वयंवर-सभा के युद्ध में आहत और परास्त हो गया था। या विधवा पत्नी है, जो पिछले बिड़ाल के आक्रमण के समय पति को खोकर युद्ध में चोट खाकर एकांत विचार कर रही है। हाय, क्यों ऐसी दशा हुई है ? शायद इसी मैना को लक्ष्य करके गुरुदेव ने बाद में एक कविता लिखी थी, जिसके कुछ अंश का सार इस प्रकार है—

"उस मैना को क्या हो गया है, यही सोचता हूँ। क्यों वह दल से अलग होकर अकेली रहती है ? पहले दिन देखा था, सेमर के पेड़ के नीचे मेरे बगीचे में। जान पड़ा, जैसे एक पैर से लंगड़ा रही हो। इसके बाद उसे रोज़ सबेरे देखता हूँ—संगहीन होकर कीड़ों का शिकार करती है, मुझसे ज़रा भी नहीं डरती। क्यों है ऐसी दशा इसकी ? समाज के किस दंड पर उसे निर्वासन मिला है, दल के किस अविचार पर उसने मान किया है ! कुछ ही दूरी पर और मैनाएँ बक-बक कर रही हैं, घास पर उछल-कूद रही हैं, उड़ती-फिरती हैं शिरीष वृक्ष की शाखाओं पर। इस बेचारी को ऐसा कुछ भी शौक़ नहीं है। इसके जीवन में कहाँ गाँठ पड़ी है, यही सोच रहा हूँ। सबेरे की धूप में मानों सहज मन से आहार चुगती हुई झड़े हुए पत्तों पर

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कूदती-फिरती है सारा दिन। किसीके ऊपर इसका कुछ अभियोग है, यह बात बिलकुल नहीं जान पड़ती। इसकी चाल में वैराग्य का गर्व तो नहीं है, दो आग-सी जलती आँख भी तो नहीं दिखतीं।"—इत्यादि।

जब मैं इस कविता को पढ़ता हूँ, तो उस मैना की करुण मूर्ति अत्यन्त साफ़ होकर सामने आ जाती है। मैंने उसे देखकर भी नहीं देखा और किस प्रकार कवि की आँखें इस बिचारी के मर्मस्थल तक पहुँच गयीं, सोचता हूँ, तो हैरान हो रहता हूँ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

16. शेक्स्पीअर के गाँव में

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी

हाँ, आज स्थान का नाम ऊपर ही रहना चाहिए। जो अकस्मात लिख गया, वही सत्य है। यह स्थान ऊपर और काल इसके नीचे। मई की ऐसी सोलहवीं तारीख़ सैकड़ों बार आयी और गयी, आएगी और जाएगी; किन्तु यह स्थान अजर-अमर है और इसी प्रकार अजर-अमर रहेगा।

प्रणाम करो इस स्थान को, ओ संसार के मानवो! इसी स्थान पर शेक्स्पीअर जन्मा था, जिसने मानवता को गौरव दिया। शेक्स्पीअर या कालिदास किसी ख़ास देश के नहीं होते। वे सारी मानवता के हैं—सारी मानवता के आभूषण हैं, शृंगार हैं। सारे मानव उनके निकट सर झुकाएँ—सादर, सविनय।

लगभग 6 बजे संध्या को यहाँ आया और 9 बजे यह डायरी लिखने बैठा हूं। रोम-रोम आनन्द से उच्छ्वसित हो रहे हैं।* ज्यों ही इस होटल में पहुँचा, सभी साथी अपने-अपने सामान गिनने और ले जाने में लग गये। किन्तु मेरी आत्मा तो जैसे झटपट कर रही थी। झट बाहर निकला। सोचा, रात होने के पहले जितना भी देखा जा सके, देख लिया जाए।

---

*मैं भी एक छोटा-सा नाटककार हूं। इस तरह शेक्स्पीअर मेरे गोत्र के थे—यह भावना और भी भाव-विभोर बना रही है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सबसे पहले, पूछते-पाछते उस स्थान पर गया जहाँ शेक्सपीअर का जन्म हुआ था। 7 बजे तक ही वह खुला रहता है। हमारे जाते-जाते 8 बजने को थे, अतः घर बन्द पाया। हाँ, उसके आगे लिखा था, यहीं शेक्सपीअर का जन्म हुआ था। हमने उस घर को किस तृषित दृष्टि से देखा!

दुमंज़िला खपरैल का मकान। गुण-पूजक अंग्रेज़ जाति उसे उसी रूप में जुगाकर रख रही है, जिस रूप में वह शेक्सपीअर के समय में था। किन्तु उसकी मरम्मत पर इतना ध्यान है कि कहीं ज़रा भी टूट-फूट या जीर्णता नहीं दिखाई पड़ती। घर मुख्य सड़क पर ही है। तो भी दीवाल से सटे कुछ फूल लगा दिये गये हैं, जो अपनी रंग-बिरंगी चमक से हमारी आँखों को तृप्त कर रहे थे।

भीतर जाकर तो कल देखूंगा, अभी चला उस स्थान को जहाँ शेक्सपीअर की स्मृति में रंगमंच बनाया गया है। जब शहर में घुस रहा था, वहाँ मोटरों की भीड़ लगी थी। रास्ता पूछते-पाछते वहाँ भी पहुँच ही गया।

अपने कलाकारों की पूजा करना कोई इन लोगों से सीखे। ग्लास्गो में जो सबसे बड़ा पार्क है, उसमें सबसे ऊँचे स्तंभ पर स्काट की मूर्ति है और अगल-बगल राजनीतिज्ञों या सेनापतियों की। इस गाँव में अंग्रेज़ों ने शेक्सपीअर के लिए क्या किया है, वह यहाँ आने पर ही मालूम किया जा सकता है।

हमारे सामने यह पार्क है, यह एवन नदी है, यह स्मारक-थियेटर है। पार्क में घुसिये और देखिये शेक्सपीअर की

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह मूर्ति। एक ऊँचे चबूतरे पर कैसी भव्य-दिव्य दिखाई पड़ती है यह! इसे लार्ड रोनाल्ड गावर ने 1888 ई० में तैयार कराया था और उसी साल 10 अक्टूबर को इस मूर्ति को प्रतिष्ठापित किया गया।

इस मूर्ति में शेक्सपीअर ध्यानमग्न बैठे-से दीखते हैं, मानों किसी नाटक की तैयारी के बारे में कुछ सोच रहे हों। मूर्ति के आसन के नीचे जो चबूतरा है, उसके चारों ओर शेक्सपीअर के ही कुछ पद्य उद्धृत किये गये हैं। इस मुख्य मूर्ति से कुछ दूर हटकर चारों कोनों पर चार मूर्तियाँ हैं, जो शेक्सपीअर के नाटकों के चार मुख्य पात्रों का सही चित्रण-सी लगती हैं। उनकी मूर्ति के आगे दाहिनी तरफ़ फाल्स्टाफ़ है—कैसे हँस रहा है वह, मानों सारे संसार पर, उसकी क्षणभंगुरता पर या उसकी बेवकूफ़ियों पर! फिर प्रिंसहाल—मुंछ-उठान जीवन का प्रतीक, बेफ़िक्र, बेलौस। अपना मुकुट उतारकर सौंप रहा है। किन्तु बताइये, पीछे जो दो मूर्तियाँ हैं, वे किनकी होंगी? शेक्सपीअर को जिसने पढ़ा है, वह तुरन्त कह देगा, उनमें एक हैमलेट की जरूर होगी। हाँ, ठीक हैमलेट ही तो! हाथ में एक मानव खोपड़ी लिये वह कैसा घूर रहा है उसे! और दूसरी मूर्ति लेडी मैकबेथ की है। अपने हाथ को किस तरह भयत्रस्त दृष्टि से देख रही है! अरे, इससे कहीं खून तो नहीं टपक रहा है?

शेक्सपीअर के इन चार पात्रों की मूर्तियाँ देखते समय ऐसा लगा, इंग्लैंड की आत्मा इनमें निहित है—ये चार मूर्तियाँ अंग्रेज़ों की चार मौलिक भावनाओं के प्रतीक-सी लगीं।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पार्क में चारों ओर सब्ज़ी और फूल ही फूल हैं। सब्ज़ी को इस तरह रखा गया है कि उसपर चलिये तो मालूम हो, मखमल पर चल रहे हैं। फूलों की सजावट का क्या कहना! बड़े और छोटे फूलों को एक क्यारी में किस प्रकार रंगों के मेल पर ध्यान देते हुए लगाया गया है! नीचे डेज़ी खिलखिला रही है, तो ऊपर टुलिप सिर हिला रहा है। यों ही फूलों और रंगों की अजीब रंगामेज़ी!

और यह तालाब है! इसका पानी! शेक्सपीअर के पार्क के तालाब में एवन नदी के पानी के अतिरिक्त दूसरा कौन पानी रखा जा सकता है? बग़ल के एवन से ही यन्त्र द्वारा पानी लेकर इसे भरा गया है। और इस भरे हुए तालाब में वे राजहँस तैर रहे हैं, उजले-उजले, बड़े-बड़े। उनकी लम्बी गरदनें और चौड़ी चोंचें! जब उजले परों को फटकारने लगते हैं, तो मालूम होता है, शेक्सपीअर की कविता अब सपक्ष होकर उड़ने जा रही है।

किन्तु दर्शकों और पर्यटकों का झुंड उन्हें इतना प्यार दे रहा है कि वे उड़ेंगे क्यों। देखिये कुछ लोग उनके लिए दाने फेंक रहे हैं, कुछ उनके चित्र उतार रहे हैं।

उफ़, भावना-विभोर होकर मखमली फ़र्श को अपने जूतों से मत बरबाद कीजिये, पगडंडी पकड़कर आगे बढ़िये। यह स्मारक-थियेटर है। इसकी स्थापना आदि के बारे में ज़्यादा खोज-ढूँढ़ करने की आज फ़ुरसत कहाँ है? हम सीधे भवन के बरामदे में पहुँचे, जहाँ दर्शकों की भीड़ लगी थी। सवा सात बज रहे थे, सूचना-पट में देखा, साढ़े सात से खेल शुरू होगा—आज 'हेनरी

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फ़ोर्थ' दिखलाया जा रहा है। कहा गया था कि होटल में खाना साढ़े आठ तक ही मिलेगा। किन्तु सोचा, 'जहन्नुम में जाए खाना, खाना तो रोज़ ही खाते हैं, आज यह अवसर क्यों चूकें?' किन्तु दरियाफ़्त करने पर पता चला, बैठनेवाली एक भी सीट ख़ाली नहीं। हाँ, खड़े-खड़े देख सकते हैं। साढ़े दस बजे तक ख़ड़ा रहने की हिम्मत तो थी नहीं। हाँ, चलते समय साढ़े तीन शिलिंग में एक स्मृति-पुस्तिका ख़रीदकर संतोष किया।

फिर एवन के किनारे टहलने लगे। तरह-तरह की भावनाएँ उठ रही थीं। यह नदी हमारी लखनदेई से बड़ी नहीं है। किंतु धन्य इसका भाग्य! एक सपूत इसके किनारे पैदा हुआ और यह जगत्प्रसिद्ध बन गयी।

छोटी-छोटी मोटर बोटें! इतनी उमंग मन में थी कि सोचा, इनमें से एक पर चढ़ जाऊँ और इसकी लहरियों का मज़ा लूँ। किन्तु उसी समय एक साथी मिल गये और उन्होंने कहा, "शेक्स्पीअर की वाटिका आप लोगों ने देखी है या नहीं?" उनकी बात पूरी भी नहीं होने पायी और मैं उस ओर दौड़ पड़ा। हैं! हँसने लगे—आप तो इस समय शेक्स्पीअर-मैड़ हो रहे हैं! हाँ, जरूर मुझपर इस समय शेक्स्पीअर का पागलपन सवार था। काश, ज़िन्दगी-भर ऐसा ही पागलपन सवार रह पाता!

पूछते-पाछते उस बग़ीचे में गये, जिस बग़ीचे में शेक्स्पीअर के हाथ का लगाया मल्बेरी का एक पेड़ आज भी जीवित है। इस पेड़ को जीवित रखने के लिए क्या-क्या प्रबंध न किये

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जाते हैं! पुरानी डालों में लोहे के भरसाहे लगाये गये हैं। चारों ओर का चबूतरा फूलों से भरा हुआ था। मल्बेरी में अभी-अभी पत्ते निकल रहे थे। झट उसकी डाल को पकड़कर चूम लेने से अपने को रोक नहीं सका। शायद कभी शेक्सपीअर ने भी उसमें कोंपलें निकलते हुए देखकर उसे इसी तरह चूमा हो।

मल्बेरी के पेड़ के सामने शेक्सपीअर की एक मूर्ति है, जो पहले लंदन में थी, अब यहाँ लायी गयी है। इसमें शेक्सपीअर बिलकुल जवान लगते हैं—अभी-अभी मसें भींग रही हैं—एकहरा, छरहरा बदन, काफ़ी खूबसूरत। दोनों ओर दो देवियाँ खड़ी हैं—एक है नाटक की देवी, दूसरी संगीत की देवी। एक के चेहरे पर सकुचाहट, उसकी निगाहें नीची, दूसरी शेक्सपीअर के मुँह की ओर देख रही है।

बग़ीचे को किस तरह सजाकर रखा गया है, क्या वर्णन किया जाए—'गिरा अनयन, नयन बिनु वाणी।'

इस बग़ीचे से सटे नैश का वह भवन है, जिसमें शेक्सपीअर अंतिम दिनों में रहते थे। इस समय तक उस भवन का कपाट भी बंद हो चुका था। हमने आश्चर्य से पाया, हम अपने होटल के बिलकुल निकट पहुँच गये हैं। यह होटल शेक्सपीअर होटल कहलाता है और इसका संचालन शेक्सपीअर की स्मारक-समिति की ही ओर से होता है। यह होटल हमेशा भरा रहता है। बाहर से, देश-विदेश से जो लोग आते हैं, इसी होटल में ठहरना पसन्द करते हैं।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होटल के प्रबंध में भी शेक्सपीअर की छाप है। इसके हर कमरे का नाम शेक्सपीअर की पुस्तकों के नाम पर रखा गया है। जहाँ हम भोजन करते हैं, उसका नाम है, 'एस यू लैक इट'; जहाँ पानी का दौर चलता है, उसके दरवाज़े पर लिखा है—'मेशर फ़ार मेशर'; पीकर जहाँ गपशप होती है, ठहाके लगाये जाते हैं, उसकी नाम है 'टेम्पेस्ट'; और जहाँ अकेले-दुकेले बैठकर चिन्तन किया जाता है, उसका नाम 'मिडसम्मर-नाइट्स ड्रीम।' मैं जिस कमरे में ठहराया गया था, उसका नाम था 'कामेडी आफ़ ऍरर्स'! ज़रूर कोई ग़लती हुई है, किन्तु कितनी सुखान्त!

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

17. बन्दी

श्री 'आरिगपूडि'

पात्र

शाहजहाँ	—	नसीम
जहाँनारा	—	सिपाही, मज़दूर

[आगरा के क़िले में संगमरमर का गोल बुर्ज है। बुर्ज के चारों ओर खुला बरामदा है। बुर्ज की पिछली तरफ़ एक दरवाज़े से महल की ओर का रास्ता है। दरवाज़े की ओट में भारी-भरकम सिपाही पहरे पर तैनात हैं। बरामदे के नीचे एकदम खड्ड है। फिर क़िले की दीवार, खाई, जमुना और दूरी पर ताजमहल।

क़िले की दीवारों के पास मज़दूर काम कर रहे हैं। वहाँ भी सिपाही पहरा दे रहे हैं। बरामदे में, मसनद के सहारे, हुक्के की नली हाथ में सँभाले बन्दी शाहजहाँ ख़ामोश बैठे हुए हैं। उनकी बग़ल में जहाँनारा बैठी कुछ लिख रही है। सूरज ताजमहल की मीनारों से थोड़ी दूर पर ऊपर चढ़ चुका है।]

शाहजहाँ—(अपनी दाढ़ी को सँवारते हुए) यहाँ यह नयी चीज़ क्या बननी शुरू हो गयी है?

जहाँनारा—दीवार। ये दीवारें ऊँची की जा रही हैं।

शाहजहाँ—क्यों? मरम्मत हो रही है शायद?

जहाँनारा—सुना है, ऊँची की जा रही हैं।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—क्यों, जानवरों या दुश्मनों का ज़्यादह ख़तरा हो गया है ?

(जहाँनारा चुप रहती है, पशोपेश में। सवाल को चुप्पी में टाल देना चाहती है। होंठ समेटकर लिखने लगती है। विषय बदलने की दृष्टि से थोड़ी देर बाद कहती है।)

जहाँनारा—गज़ल सुनेंगे अब्बाजान ?

शाहजहाँ—बेटी, गज़ल बाद को सुनेंगे। पहिले यह बताओ कि क़िले को क्यों अब मज़बूत बनाया जा रहा है। दारा की फ़ौजें आगरा पर चढ़ाई करनेवाली हैं ? बताती क्यों नहीं ?

जहाँनारा—आपका अन्दाज़ ग़लत है। भाई की फ़ौजें कभी की फ़तह की जा चुकीं। सिन्ध के रेगिस्तान में भागे.... नहीं, नहीं....(कुछ सोचते हुए) तख़्त हासिल करने के लिए फिर से फ़ौजें जुटा रहा है। अच्छी क़िस्मत रही, तो हमारे नसीब.... (सिपाही को घूरता देख चुप हो जाती है।)

शाहजहाँ—तब क्या हो रहा है ? तुमको मालूम है, तो बताओ। तुम हमसे क्यों छिपाती हो ? हम कहते हैं, बताओ !

जहाँनारा—भाई को इस बात का डर है कि हम क़िले से कहीं भाग न जाएँ। इसीलिए दीवारें ऊँची की जा रही हैं।

शाहजहाँ—इसने क्या, हमें चोर-चपाटा समझ रखा है ? इसको इतना नहीं मालूम कि जब बादशाह बाहर निकलता है, तो शाही शान-शौक़त से जाता है, क़ैदियों की तरह दीवारें नहीं फाँदता ? क्या इसको इतनी भी तमीज़ नहीं कि बादशाह की

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अपनी ख़ास इज़्ज़त होती है, हैसियत होती है ? बन्दी ही सही— इसने हमें क्या समझा है ? माना, हम भागना चाहते हैं। क्या यह इतना नहीं सोच सकता कि जब हम छोटी दीवारें लांघ सकते हैं, तो बड़ी दीवारें भी लांघ सकते हैं ? (हुक्का पीने लगते हैं—कुछ सोचते हुए) नहीं, बात कुछ और है; जो दाँव-पैंतरे खेलकर, झूठ और फ़रेब से मुग़ल सल्तनत को बादशाह के ज़िन्दा रहते-रहते हथियाने की हिमाकत रख सकता है, वह इतना बदतमीज़ हरगिज़ नहीं हो सकता। नहीं, मामला कुछ और है।

(जहाँनारा चुप रहती है। शाहजहाँ हुक्का पीते-पीते दीवार की तरफ़ देखने लगते हैं। दीवार से सटकर एक मज़दूर परिवार बैठा हुआ है। खाने की तैयारी में हैं—एक मर्द, एक औरत, एक बच्चा। पास कुत्ते भी फिर रहे हैं। खाने की पोटली खोलकर औरत पासवाले घड़े की तरफ़ पानी के लिए जाती है। मर्द की नज़र किसी और चीज़ पर है, कुत्ता परोसा हुआ खाना लेकर भागता है; लड़का पीछे भागने की कोशिश करता है। पर कुत्ता हाथ नहीं आता। सब पानी पीकर रह जाते हैं।

बादशाह को इधर देख वे तीनों हाथ पसारकर कहते हैं— "जहाँपनाह, खाना दो। बारिश नहीं हुई है, खेत वीरान पड़े हैं। हम भूखों मर रहे हैं।")

शाहजहाँ—(हुक्के की नली मुख से निकालते हुए) क्यों, आजकल क़हत है ?

जहाँनारा—जी, दो बरस से बारिश नहीं हुई है। लोगों की तक़लीफ़ें, बस, खुदा ही जानता है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—बारिश नहीं हुई तो जमना तो नहीं सूखी है ?

जहाँनारा—जमना का पानी तो आगरा के आसपासवालों के लिए भी काफ़ी नहीं है ।

शाहजहाँ—तो ये लोग कहाँ के हैं ?

जहाँपनाह—मारवाड़ की तरफ़ के लगते हैं । (नीचे से आवाज़ आती है, 'जहाँपनाह, हमें पनाह दीजिये, हम कारीगर हैं ।')

शाहजहाँ—मेरे रहते-रहते कारीगरों को मज़दूर बनने की भी नौबत आ गयी !

जहाँनारा—मज़दूरी नहीं मिलती । कोई नयी इमारत नहीं बनायी जा रही है । सब काम बंद हैं । सुनते हैं, ये लोग भूखों मरते हैं ।

शाहजहाँ—(मसनद पर सीधे बैठते हुए, जैसे कोई नया ख़्याल उठ गया हो) क़हत है, शायद इसी वजह से इनकी रोज़ी के लिए दीवारें ऊँची की जा रही हैं । हम हमेशा ही ऐसा करते रहें, जब-जब खुदा नाराज़ हुए और मेह न बरसा, हमने अपनी रिआया के लिए नयी-नयी आलीशान इमारतें बनवायीं, ताकि इमारत की इमारत बने और लोगों को रोज़ी भी मिले ।

(जहाँनारा बिना कुछ कहे मुस्कुरा देती है । उस मुस्कुराहट से यह ज़ाहिर है कि उसके पिता एक सीधी-सादी बात को भी नहीं समझ पा रहे हैं ।)

शाहजहाँ—कहो, ठीक है न हमारा अन्दाज़ ?

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जहाँनारा—अगर रोज़ी ही देनी है, तो क़िले की दीवारों को ऊँचा करने से क्या फ़ायदा ? नये क़िले बनाये जा सकते हैं, नयी इमारतें खड़ी की जा सकती हैं।

शाहजहाँ—ठीक कहती हो बेटी ! (ताज की तरफ़ देखते हुए) हिन्दुस्तान में जो कुछ बनना था, वह शाहजहाँ के वक़्त में बन चुका। अब तो ये लोग मरम्मत ही करवा सकते हैं। दिल्ली के क़िले में क्या हो रहा है ? क्या वहाँ भी दीवारें ऊँची की जा रही हैं ?

जहाँनारा—दिल्ली से तो ख़बरें ही नहीं आ रही हैं। सुना है, रोशनआरा भी दिल्ली पहुँच गयी है। अगर सल्तनत हाथ में रही, तो भाई ने उसे महल बनवा देने का वचन दिया है।

शाहजहाँ—जिसको अपनी बात पर भरोसा नहीं, उसको बहिन पर क्या यक़ीन होगा ? खुदा के नाम पर वह लड़ सकता है, पर कुछ बनवा नहीं सकता। दिल्ली बीजापुर नहीं है। दिल्ली शाहजहाँ की है। जब तक दिल्ली में लाल क़िला है, शाहजहाँ की औलाद को और कहीं महल बनवाने का हक़ नहीं होगा। महल नहीं बनेगा, कहला भेजो।

जहाँनारा—भाई वादा करता रहता है, पर पूरा नहीं करता। दारा की बात कुछ और थी। वह जितना नेक था, उतना और कोई भी नहीं है। अगर वह तख़्त पर बैठता तो काबुल से सूबे बंगाल तक और दिल्ली से गोलकुंडा तक ऐसा अमन रहता कि रिआया इस तरह भूखों नहीं मरती। वह

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बहादुर है। धोखेबाज़ी से उसे परहेज़ है। खुदा करे, वह जहाँ भी हो खुशहाल हो!

शाहजहाँ—(हुक्के की नली को रगड़ते हुए) अगर दारा गद्दी पर बैठता, तो दिल्ली की गद्दी पर उसी तरह बैठता जैसे कि हमारे बाप-दादा बैठते आये—उसी शान-शौक़त से, रौनक से। पर अब हमारे बाद क़यामत है, बस क़यामत है। (आवेश में हुक्के की नली दूर फेंक देते हैं।)

जहाँनारा—(सूरज की ओर देखकर) अब वक़्त काफ़ी हो गया है, खाना खाइएगा! (बिना शाहजहाँ के जवाब की इंतजारी किये नौकरानी को बुलाती है—'नसीम, नसीम!'। नसीम आकर खड़ी होती है। जहाँनारा नसीम से कहती है—'अब्बाजान के लिए खाना लाओ।')

शाहजहाँ—देखो, अंगूरी शराब भी लाना। अगर सितार बजानेवाले उस्ताद आ गये हों, उन्हें भी भेज देना; अर्सा हो गया है सुने हुए। तब तुम्हारी गज़ल भी सुनें बेटी!

नसीम—पर....जहाँपनाह! पर....(वह मारे डर के कह नहीं पाती।)

जहाँनारा—तुम जाओ। कहने की ज़रूरत नहीं। मैं कह लूंगी। तुम जाकर खाना लाओ।

शाहजहाँ—क्या बात है?

जहाँनारा—भाई ने सितारवालों को क़िले से निकलवा दिया है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—क्या वाहियात बात है ? किसके हुक्म पर उन्हें निकाल दिया गया है ? उसकी इतनी हिम्मत ? क़िलेदार को फ़ौरन इत्तला दो कि सितारवाले उस्ताद को बुला भेजें। यह क्या पागलपन है ? हुनर का भले ही इल्म न हो, कम से कम तारीफ़ करने की अक़्ल तो हो। यह कैसी गुस्ताख़ी ! लिखकर भेज दो बेटी।

(जहाँनारा लिखकर नौकरानी के हाथ एक रुक्का भेज देती है।)

जहाँनारा—भाई इतना बेरहम काहे को हो गया है ?

शाहजहाँ—क्या कहा ? बेरहम ? हम क्या गुलाम हैं, जो उसके रहम के मोहताज हों ?

जहाँनारा—नहीं, मेरा मतलब यह नहीं थी। उसको मालूम है कि आपको सितार कितना पसंद है। उसे यह भी मालूम है कि मैं भी सितार सुनते-सुनते दीवानी-सी हो जाती हूँ। इतना भी ख़्याल नहीं रखा। वक़्त बदलता जा रहा है। कभी वह वक़्त था, जब वह दक्खिन से कई दिनों का सफ़र तय करके मुझे देखने आता था। वह घंटों मेरी बगल में बैठा रहता और मीठी-मीठी बातें करता। रह-रह कुरान की आयतें पढ़ता।

शाहजहाँ—तुम भूल जाती हो बेटी कि तब वह सिर्फ़ एक सूबेदार था। उस वक़्त उसमें तख़्त के लिए तमन्ना नहीं थी। आज तो ताज की फ़िक्र में है। बादशाह बना फिरता है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जहाँनारा—तो क्या बादशाहत बाप-बहिन पर ही दिखानी थी ? सुनते हैं, कल-परसों दिल्ली के लिए रवाना होनेवाला है। हो सकता है, दीवारें इसलिए ही ऊँची की जा रही हैं।

शाहजहाँ—क्या बेसिर-पैर का शुबहा है ? क्या हम इस दीवार की वजह से बन्दी हैं ? जब दारा की फ़ौजें शिकस्त हो चुकीं, तो हमारे सामने चारा ही क्या है ? अब जवानी तो रही नहीं कि दौड़-धूप करूँ और इस नालायक को सबक़ सिखाऊँ। ज़िन्दगी ख़तम होने को है। पीरी में बेटे के ऊपर तलवार खींचना अच्छा नहीं मालूम होता। भाई-भाई निबट लेंगे। अगर यह सोचता है कि दीवारों ने मुझे रोक रखा है, तो उसका यह ख़्याल ग़लत है। हमें क्या वह इस क़दर गया-गुज़रा समझता है कि अगर हम उसकी हाज़िरी में बाहर न जा सकें, तो ग़ैरहाजिरी में बाहर जाने की कोशिश करेंगे ? वह हमें सता रहा है। वह हमें नहीं जानता।

जहाँनारा—दारा की फ़ौजें शिकस्त तो क्या हुईं, बदक़िस्मती आ गयी। उसका हाथी से उतरना था कि फ़ौजों में भगदौड़ मच गयी। कोई बहादुरी से जीता इसने ? क़िस्मत साथ होती, तो दारा आज सिन्ध के रेगिस्तान में दर-दर न भटक रहा होता।

शाहजहाँ—तुम तो कहती थी कि फ़ौजें इकट्ठी कर रहा है?

जहाँनारा—जी हाँ, पर....नहीं....कामयाबी नहीं हो रही है। सुनते हैं....(खाना परोसा जाता है।) जो हुआ सो हुआ। जाने दीजिये। आइये, खाना खाइये।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—सितारवाले कहाँ हैं ? शराब कहाँ है ? अंगूरी शराब !

जहाँनारा—(शराब को न पा) शराब नहीं लायी, नसीम?

नसीम—जी........जी........

जहाँनारा—कहो न, क्यों नहीं लायी ?

नसीम—उन लोगों ने देने से इनकार कर दिया।

जहाँनारा—किसने और क्यों ?

नसीम—हुक्म हुआ है। सरदार ने....(सिपाही को घूरता देख चुप हो जाती है।)

जहाँनारा—सरदार ने हुक्म दिया है या भाई ने ? (नसीम कुछ जवाब नहीं देती।) अच्छा, तुम जाओ।

शाहजहाँ—यह हिजड़ा गुलाम हमें बहुत तंग कर रहा है। हम खाना नहीं खाएँगे। यह क्या कमीनापन है ? खाने-पीने की भी दिक्कत ? (हुक्का लेकर बैठ जाते हैं।)

जहाँनारा—आप थोड़ा बहुत खाइये, तबीयत ख़राब हो जाएगी।

शाहजहाँ—हमें सताने के नये-नये तरीक़े अख़्तियार किये जा रहे हैं। ये लोग रोज़-ब-रोज़ ज़ालिम होते जा रहे हैं। आज शराब नहीं, कल खाना भी नसीब नहीं होगा। बादशाह आया कहीं का।

(खाना पास रखा रहता है, शाहजहाँ ताजमहल की ओर देखते-देखते हुक्का पीते हैं। कुछ याद कर आँखें लबालब भर जाती हैं।)

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—(थोड़ी देर बाद) हूँ! अब हमें समझ में आया कि दीवारें क्यों ऊँची की जा रही हैं। इन लोगों को यह गवारा नहीं है कि मैं चौबीसों घंटे ताजमहल का नज़ारा देखकर अपने दिल को ढाढ़स बंधाऊँ। चाहते हैं कि ताजमहल मेरी नज़रों के सामने न रहे। आँखें बन्द नहीं कर सकते, जब तक आँखें हैं, तब तक वे ताजमहल को देखेंगी ही, इसलिए दीवारें खड़ी करके ताजमहल को हमारी आँखों से ओझल कर देना चाहते हैं। हम नज़रबंदों के लिए यह भी देखना बदा था! बाप का ख़्याल नहीं, तो न सही, कम से कम माँ का ख़्याल तो रखता! जिसकी याद को मैंने संगमरमर की आलीशान बुत में उतरवाया, उसकी याद क्या उसे नहीं सताती? बुतपरस्ती बुरी सही, (ताजमहल की ओर इशारा करके) पर मैं उस बुत का परस्त हूँ। वह मेरा इबादतगाह है—मकबरा नहीं, मक्का है; और यह कम्बख़्त दीवारें ऊँची करके मुझे ताजमहल को भी नहीं देखने देना चाहता। क्यों सिपाही, दीवारें इसलिए न ऊँची की जा रही हैं?

जहाँनारा—(इससे पहिले कि सिपाही बेअदबी से जवाब देता) हो सकता है। आपका कहना सही मालूम होता है। खाना खाइये। नाराज़ होने से आपकी सेहत बिगड़ जाएगी।

शाहजहाँ—हम खाना नहीं खाएँगे। सिपाही, जाकर कहो कि दीवार ऊँची करना बन्द कर दें। यह हमारा हुक्म है।

सिपाही—बादशाह के हुक्म पर दीवारें बन रही हैं। उन्हींके हुक्म पर काम बन्द होगा।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—हमारी इतनी तौहीन ?

(नीचे से आवाज़ आती है—"रोटी, जहाँपनाह, रोटी.... रोटी ! " सिपाही मज़दूरों को चुप होने के लिए कह रहे हैं, उन्हें मार-पीट रहे हैं ।)

शाहजहाँ—रोटी ! रोटी ! हाँ, यह सब खाना उन्हें दे दो । हम नहीं खाएँगे । सुनते हो ? (सिपाही वैसा का वैसा खड़ा रहता है ।) इसके लिए भी क्या तुम्हें अपने बादशाह का हुक्म चाहिए ?

सिपाही—जी हाँ ।

शाहजहाँ—बादशाह, बादशाह ! बादशाह तो नज़रबन्द है और वह तो गद्दार है । बाप को बन्दी कर कहीं बादशाह बनते हैं ? बादशाह ! (गुस्से में दाँत कटकटाते हैं ।) करो ज़बान बन्द ! (हुक्के का धुआँ उगलते-उगलते ज़ोर से खाँसने लगते हैं । मसनद के एक सिरे पर बेहोश-से पड़ जाते हैं । जहाँनारा उनका हाथ संभालकर उनके नज़दीक बैठ जाती है । और पंखा झलने लगती है ।)

दूसरा दृश्य

[कुछ दिनों बाद । एक सिरे पर दीवार ऊँची कर दी गयी है । भद्दी, कच्ची दीवार । पर दूसरे सिरे से तो ताजमहल अब भी दीखता है । जमुना का एक ही किनारा नज़र आता है; दूसरा किनारा दीवार की ओट में है । ताजमहल की ओर मुख किये शाहजहाँ संगमरमर के बुर्ज पर बैठे हुए हैं । शाम का वक़्त है । चेहरे पर ग़मी है । बगल में हुक्का है । पासवाले खम्भे में सटकर जहाँनारा बैठी हुई है ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सिपाही पहरे पर हैं। नीचे दीवार का बनाना भी पहिले की तरह जारी है। मज़दूर काम पर लगे हुए हैं।]

शाहजहाँ—(हुक्का पीते हैं।) याद नहीं बेटी, तब तुम्हारी उम्र कितनी थी। तुम्हें भी शायद याद नहीं होगा। बहुत वक़्त गुज़र गया है। तुम्हारी माँ की नौकरानी से पुर्तगालियों ने सूबे बंगाल में कुछ छेड़-छाड़ कर दी थी। मलिका को मालूम हुआ और मुझसे शिकायत की गयी। मैंने पुर्तगालियों की सारी की सारी बस्ती मिट्टी में मिलवा दी। नामोनिशान न रहा। अब ये लोग उसीके मक़बरे को दीवारें बना-बनाकर मेरी आँखों के सामने से हटा देना चाहते हैं और मैं बेबस हूँ। मेरे हुक्म के बावजूद दीवार बनती जाती है। मैं अब एक छोटी-मोटी दीवार को नहीं तुड़वा सकता, इतना नेस्तनाबूद कर दिया गया हूँ। चाहता हूँ, तोपें दगवा दूं। मगर....मगर कोई ख़बर मिली दारा की?

जहाँनारा—उसकी कोशिश जारी है। देखें, क्या होता है।

शाहजहाँ—(ताजमहल की ओर देखकर) जाने दो। वह मज़ार भी क्या जिसको देखकर आदमी दो-चार आँसू न बहा सके? तब मैं सूबे दक्खन में दुश्मनों से लोहा ले रहा था, तुम्हारी माँ बीमार पड़ी। मैं ठीक तरह देख भी न पाया था कि मेरी रोशनी हमेशा के लिए गुल हो गयी। अंधेरा हो गया। और अंधेरे में सिर्फ़ रोशनी की याद रह गयी। मेरी बहारे-उम्र उसके साथ ख़त्म हो गयी। उसके भाई की

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बदौलत मुझे तख़्त मिला और उसकी वजह से मैं इन्सान बना, इन्सानों का बादशाह बना। वह जाते-जाते तुम बच्चों को अपनी शक्लो-सूरत देती गयी। याद छोड़ती गयी—जो पीढ़ी दर पीढ़ी कुदरतन कम होती जाएगी। मगर उसकी याद मिट जानेवाली याद नहीं है। मोहब्बत की रोशनी बिना बत्ती के भी होती है और मर मिटनेवाले परवाने मरते ही रहते हैं। मैंने उसकी याद को एक ऐसी शक्ल में गढ़वा दिया—जो न चन्दा की तरह घटे या बढ़े, न मौसमों की ही तरह बदले, बारहों महीने, चौबीसों घंटे मेरी आँखों के सामने रहे। जिसका जिस्म महलों में रहा, उसकी रूह ताजमहल में ही रह सकती है। उसकी मोहब्बत से मैंने एक मकबरा बनवाया, ताजमहल बनवाया और एक जवान महबूब की तरह उसे प्यार करने लगा। अब ये लोग उस मक़बरे को मेरी आँखों की पहुँच से दूर कर देना चाहते हैं। बेटी, न जाने मैं क्या-क्या कह बैठा! दिल में उफान-सा आ रहा है। ज़बान पर भी क़ाबू ढीला हो गया है—आख़िर कब तक? मौत भी तो नहीं आती! (जहाँनारा को रोती देख) रोओ मत बेटी! रोओ मत। तुम तो हमारा दिल पक्का करती थी, और तुम्हीं....

जहाँनारा—ताजमहल आपकी आँखों के सामने ही रहेगा। ये दीवारें उसे ओझल नहीं कर सकतीं। यह भाई की करतूत ही है क्या? बादशाह का हुक्म, कहीं इस गुलाम का हुक्म तो नहीं?

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—घबराओ मत, दीवार जिस हिसाब से बन रही है, उस हिसाब से हमारी ज़िन्दगी के होते-होते यह पूरी नहीं होगी। घबराओ मत।

जहाँनारा—मगर क्या भाई की आँखें बन्द हैं? एक गुलाम के हाथ हमारी ज़िंदगी सौंपकर वह खुद दिल्ली चला गया है।

शाहजहाँ—ख़ैर, दीवार बनवानी थी, तो कम से कम अच्छी दीवार तो बनवाता। हमें अफ़सोस इस बात का है कि क़िले की खूबसूरती ख़राब की जा रही है। सीकरी के लाल पत्थरों पर ये अरावली के टूटे-फूटे खुरदरे पत्थर कब तक टिकेंगे? क़िले में हर चीज़ माप-तौलकर बनती है। पत्थरों के ढेर का नाम क़िला नहीं है। यह मसाला भी क्या मसाला है? बनाओ या न बनाओ, यह औलाद की मर्ज़ी, पर बुज़ुर्गों की इमारतों को तो न बिगाड़ो। यह क़िला ख़राब करके हमारे दिल को सदमा पहुँचाना चाहता है। मगर दिल भी ग़म सहते-सहते पथरा जाता है। करने दो दीवारें ऊँचीं। तुम्हारी माँ की रूह अगर ताजमहल में है, तो ताजमहल के हर पत्थर का नक़्शा मेरे दिल में है। बनाने दो दीवार। देखें, कब तक बनाते हैं। दीवारें बनायी जाती हैं, ज़िन्दों को अलग रखने के लिए—याद और मोहब्बत के सामने दीवार की भी कोई अड़चन है? अहमक है! (हुक्का पीने लगता है। नज़रें ताजमहल पर हैं। आँखें अंगारे हो गये हैं।)

जहाँनारा—हुक्के में तम्बाखू तो है न!

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—हाँ बेटी।

जहाँनारा—शरबत वग़ैरह पीजिएगा?

शाहजहाँ—नहीं। (वे हुक्के की नली लिये ताजमहल की ओर देखते रहते हैं।)

शाहजहाँ—(थोड़ी देर बाद) बेटी, तुम माँ की कमी थोड़ी-बहुत पूरी कर रही हो। पर तुम्हें यहाँ बैठा देख मेरा दिल दुखता है। अगर आज वह होती, तो....ख़ैर! सालों पहिले मैं जहाँ जाता था, वह मेरे साथ आती थी—लड़ाई में, शिकार में, बाग़-बग़ीचों में, मेरी हर ज़रूरत को पूरा करती थी। मेरी मुसीबत उसकी मुसीबत थी। उसकी मोहब्बत में एक अजीब ताक़त थी। हर घड़ी मेरे साथ रहती। जहाँ मेरी सवारी जाती, वहाँ उसकी सवारी भी जाती। मौत में हम दोनों साथ न जा सके। मैंने इस ग़मग़ीन ज़िन्दगी को उसकी याद में पाक बनाना चाहा। मैंने जो खोया, उसको सारी दुनिया को देना चाहा। जिसे मैं जिला न सका, उसे मैं भूल भी न सका। जिसकी याद से यह ज़िंदगी काटी है, वह याद इन दीवारों के पीछे दफ़ना दी जाएगी?

जहाँनारा—(कुछ फ़िक्र में कि कहीं इसी ग़मी में शाहजहाँ अपनी सेहत न ख़राब कर लें, उनका ध्यान बदलने के लिए) सितारवाले को आपके हुक्म पर फिर क़िले में रख लिया गया है। यहाँ हाज़िर है। नाचनेवाली भी आ गयी है। उन्हें बुलाऊँ?

शाहजहाँ—नहीं! नाच वग़ैरह नहीं देखेंगे। हम नमाज़ पढ़ रहे हैं—वह नमाज़ जो क़ुरान में नहीं है, मगर दिल में है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(धड़ाम से भीषण शब्द होता है। नीचे दीवार के पास भगदौड़ मच जाती है। महल में भी ख़लबली मच जाती है।)

शाहजहाँ—(शब्द सुन चौंककर) क्या हुआ ?

जहाँनारा—(दीवार की तरफ़ देखकर) दीवार टूट गयी है।

शाहजहाँ—क्या कहा ? दीवार ढह गयी है ? कहा था न हमने कि दीवार ढह जाएगी ? कहीं भला, क़िले की दीवारें इस तरह बनती हैं ? यह तुग़लक का क़िला नहीं है, शाहजहाँ का क़िला है। यहाँ हरेक पत्थर नाप-तोलकर रखा गया है। पत्थर लुढ़क गये होंगे। (झटके से उठकर, खम्भे का सहारा ले खड़े हो जाते हैं और दीवार की तरफ़ देखने लगते हैं।) सिपाही क्यों कारीगरों को मार रहे हैं ? क्यों बेटी, क्यों मार रहे हैं ? हमें बताओ।

जहाँनारा—उनका कहना है कि मज़दूरों ने जान बूझकर दीवार कच्ची बनायी है, ताकि यह गिर जाए और काम जारी रहे।

शाहजहाँ—यह क्या इलज़ाम है ? क्या ये गारे की दीवारें हैं कि गारा रखा और दीवारें चुन दीं ? ये पत्थर ऐसे-वैसे नहीं जुड़ते हैं। बग़ैर नींव की दीवार ढहेगी नहीं, तो और क्या होगी? वे बेक़सूर हैं। सिपाहियों से कहो कि वे मज़दूरों को न मारें। (आँखों पर हाथ धर ग़ौर से देखने लगते हैं।) अरे यह क्या ? बेटी, देखो तो।

जहाँनारा—किसीकी पत्नी दीवार के नीचे पड़कर मर गयी है। उसका पति पास खड़ा रो रहा है, चिल्ला रहा है।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बच्चा बाप की टाँगें पकड़े ज़ोर-ज़ोर से बिलख रहा है। एक आदमी भी दीवार के नीचे ढेर हो गया।

(शाहजहाँ उनका दर्द-भरा रोना सुनते-सुनते स्तब्ध से, चिन्तित-से खड़े रह जाते हैं। पति रोता जाता है और मज़दूर भी ज़ोर से रोना शुरू कर देते हैं। हृदयविदारक दृश्य है। शाहजहाँ एक क्षण ग़ौर से देखते हैं। अपनी मसनद की ओर लौटने को ही होते हैं कि मज़दूर उन्हें देखकर एक साथ चिल्ला उठते हैं, "जहाँपनाह, बचाओ!", "जहाँपनाह, दया करो!", "जहाँपनाह, माफ़ करो!", "जहाँपनाह, हम बेकसूर हैं!" शाहजहाँ रुककर देखते हैं, फिर लड़खड़ाते हुए अपनी जगह चले जाते हैं।)

शाहजहाँ—क्यों बेटी, सिपाहियों से कहा कि नहीं, वे ख़्वाहमख़्वाह मज़दूरों को न मारें?

जहाँनारा—आप बैठिये। सब हो जाएगा। आप आराम कीजिये।

शाहजहाँ—हमें तसल्ली नहीं होगी, जब तक उन्हें मदद नहीं दी जाती। क़िलेदार के पास लिखकर भेज दो—कहो, बादशाह का हुक्म है कि मज़दूरों को उनके सामने मारा-पीटा न जाए।

(जहाँनारा लिखने का अभिनय करती है और शाहजहाँ दूर ताजमहल की ओर देखने लगते हैं। सूरज छिपने को है। अन्धेरा बढ़ चला है। चेहरे से ऐसा मालूम होता है कि कोई चीज़ उनके मन में उथल-पुथल कर रही है और वे उसे ज़ाहिर न होने देने की कोशिश कर रहे हैं। थोड़ी देर बाद)

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—कितने मरे?

जहाँनारा—चार। पता लगा है, एक की पत्नी और दूसरी का पति, और हट्टे-कट्टे दो जवान मज़दूर चल बसे।

शाहजहाँ—लोगों को लड़ाई में मरते देखा है, पर ग़रीब बेघरबारों को इस तरह मौत के मुँह में पिसते नहीं देखा। आख़िर इस दीवार की ज़रूरत ही क्या थी? जब इतना सता ही रहा है, तो हमारी आँखें निकलवा देता, तो क्या होता? कम से कम इन ग़रीबों की जान तो बचती। जब वह अपने भाई मुराद को, जो उसके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ा, ज़हरीली शराब पिलाकर पकड़ सकता है, और ग्वालियर के क़िले में आँखें निकालकर बन्द कर सकता है, ताकि वह मारे दर्द के चीख-चीखकर मर जाए, तो बाप की आँखें क्यों नहीं निकाल लेता? जब आँखें नहीं, तो ताजमहल नहीं, और जब ताजमहल नहीं, तो ज़िन्दगी भी नहीं। क्यों नहीं निकाल लेता? क्यों हमें इस तरह घुल-घुलकर मरने देता है? हमें नहीं चाहिए इसकी मेहरबानी, इसके लिहाज़ की हमें ज़रूरत नहीं, यह अपना रहम किसी और पर दिखाए। (इधर-उधर देखने लगते हैं। सिपाही को पास खड़ा ध्यान से सुनता देख) कह देना अपने बादशाह से, जो हमने अभी कहा है। बेटी, थोड़ी शराब दो, हमारा दिल बेचैन है।

जहाँनारा—(शराब देते हुए) अभी-अभी ख़बर आयी है कि भाई की मुख़ालफ़त के लिए राजपूताने में कुछ सरदार फ़ौजें इकट्ठी कर रहे हैं।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—(शराब का घूंट निगलकर) करते रहें! कुछ नहीं होगा। राजपूताने के सरदारों का तो यह ख़याल रहा कि जिस किसीके हाथ में तख़्त रहा, वे उसीके हिमायती बनते रहे। वे बहादुर हैं, पर उनमें आपसी फूट इतनी है कि मुग़ल बादशाह की खुले-आम मुख़ालफ़त नहीं कर सकते। यह तो वे लोग जान गये होंगे कि औरंगजेब ही अब गद्दी पर बैठेगा। दारा जंगलों में भटक रहा है—शुजा कहीं अराकान की पहाड़ियों में भाग गया है, मुराद ग्वालियर के क़िले के तहख़ानों में सड़ रहा है। यह तो शुरू से जानते थे। मैंने अपने बाप के ख़िलाफ़ तख़्त के लिए बग़ावत की और मैंने चाहा कि मेरी औलाद मेरे बाद गद्दी के लिए भूखे शेरों की तरह न लड़े, इसलिए मैं जीते जी ही दारा को गद्दी पर बिठा देना चाहता। पर खुदा को यह मंजूर नहीं था। कभी मैं यह सोच भी न पाया था कि मेरे होते हुए दारा की यह हालत होगी। मौत आ गयी होती, तो....(शराब का एक घूंट और पीते हुए) आज शराब का एक अजीब स्वाद है। इसमें कुछ मिलाया तो नहीं गया? किसीको पिलाकर देखा था कि नहीं?

जहाँनारा—हाँ, हाँ, नसीम को पिलाया था, इसमें कुछ नहीं है। आप बेफ़िक्र होकर पीजिये।

शाहजहाँ—ख़ैर, शायद हमारा वहम था। जाने दो, अगर ज़हर है, तब भी क्या?

जहाँनारा—दारा क़िस्मत का मारा है। नहीं तो इसका और उसका मुकाबला करना अच्छा नहीं मालूम होता।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—अगर दारा में लियाक़त है, तो औरंगज़ेब में क़ाबिलियत है। उसकी बहादुरी काबुल के जंगल में क़ाबिले तारीफ़ थी। दक्खिन में जो उसने किया, शायद उसका और कोई भाई नहीं कर सकता था। मगर उसको अपनी जगह समझनी चाहिए थी। बादशाह के बरख़िलाफ़ बग़ावत का झण्डा उठाने का उसे हक़ नहीं था। और बाप से एक बन्दी का-सा सलूक़ करना उसके लिए अच्छा नहीं। उसकी तंगनज़री से, बेटी, हमें डर है, यह बाप-दादाओं की जीती हुई सलतनत खाक हो जाएगी। हम तो........(नीचे से तुमुल ध्वनि आती है—"जहाँपनाह, जहाँपनाह") क्या दीवार का दूसरा हिस्सा भी गिर गया है? या सिपाही अब भी उन ग़रीबों को मार रहे हैं?

जहाँनारा—(बुर्ज से बाहर झुककर) वे लोग मदद चाहते हैं। दो-तीन भूखे-नंगे परिवार हैं। वे उनके रिश्तेदार हैं, जो दीवार के नीचे दबकर मर गये थे।

(आवाज़ आती है—"जहाँपनाह, मदद करो, जहाँपनाह!")

शाहजहाँ—बेटी, इन्हें कुछ रुपया-पैसा दे दो।

जहाँनारा—कहाँ हैं देने के लिए?

शाहजहाँ—चार-पाँच अशर्फ़ियाँ भी नहीं! (जहाँनारा हिचकिचाती हुई वहीं बैठी रहती है।) क्यों बेटी, हैं कि नहीं? किसी सुराख़ में तुमने डाल रखे होंगे। देख आओ! बिचारे चिल्ला रहे हैं। बादशाह बन्दीख़ाने में भी कंगाल नहीं हो सकता। देख आओ!

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

(जहाँनारा उठती है और पासवाली संगमरमर की कोठरी में चली जाती है। और शाहजहाँ हुक्का गुड़गुड़ाते रहते हैं। थोड़ी देर बाद जहाँनारा पाँच-दस अशर्फ़ियाँ लाकर नीचे मज़दूरों की तरफ़ फेंक देती है।)

शाहजहाँ—कौन हैं ये लोग बेटी? मामूली मज़दूर तो नहीं लगते। उनको तो यहाँ ख़ैरात माँगने की मुमानियत है। उनकी इतनी हिम्मत नहीं हो सकती कि बादशाह की हाज़िरी में हाथ पसारें।

जहाँनारा—हाँ, ये मामूली मज़दूर नहीं हैं, ये कभी कारीगर थे—ये उन कारीगरों की औलाद हैं, जिन्हें ताजमहल के बनाने में अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था।

शाहजहाँ—हूँ, उनके बाप-दादों ने ताजमहल बनाया और ये ताजमहल को छिपाने के लिए दीवार बना रहे हैं। क़िस्मत का खेल है!

(शाहजहाँ चुप हो, हाथ में शराब का गिलास थामे ताजमहल की तरफ़ देखते हैं। ताजमहल के गुम्बज़ के पीछे चाँद निकल रहा है। चाँदनी में सफ़ेद ताजमहल चाँदी का-सा लगता है। शाहजहाँ खिन्न हैं।)

शाहजहाँ—बेटी, देखा था, वह पति कैसे ज़ोर-ज़ोर से बिलख रहा था? मोहब्बत का दर्द ही ऐसा है, जो दिल को तेजाब की तरह जलाता है। बेचारा छटपटा रहा था।

जहाँनारा—हूँ, पत्नी की मौत सभी को सद्मा पहुँचाती है, ग़रीब हो या अमीर....

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शाहजहाँ—बादशाह हो या रिआया। तुम ठीक कहती हो बेटी! अगर वह बादशाह होता, तो वह भी अपनी पत्नी के लिए मकबरा बनवाता। उसके दिल में भी शायद यह मुराद होती कि वह एक ताजमहल खड़ा करे और उसे खुद अपने ही हाथों से बनाए। खुदा का दिया हुआ दिल सभी आदमियों में एक-सा है, चाहे वह बादशाह हो या मज़दूर। क्यों बेटी, हम ठीक कहते हैं न?

जहाँनारा—आपका कहना एकदम सही मालूम होता है।

शाहजहाँ—मेरी यही ख़्वाहिश रही कि दुनिया में ताजमहल एक हो और वह शाहजहाँ का बनवाया हुआ हो और दुनिया को उसपर वैसा ही फ़ख्र हो जैसा कि मुझे है। इसलिए मैंने कई कारीगरों के हाथ कटवा दिये, कई कारीगरों को मौत के घाट उतरवा दिया ताकि और कोई ताजमहल न बना सके। यह बेरहमी का काम था। अब मेरी आँखें खुलीं। मुझे यह नहीं ख़याल आया कि हर आदमी में पत्नी की याद में ताजमहल बनाने की तमन्ना रहती है। अगर मैं अपनी पत्नी की याद में रो-रोकर मर सकता हूँ, तो दूसरे की हालत भी मेरी जैसी ही होगी। मैंने कितनों का सुहाग बिगाड़ा, कितनों को यतीम बनाया, बेघरबार कर दिया, ताकि मेरा ताजमहल अनोखा बना रहे। मुझे लानत है अपनी खुदगर्ज़ी पर, बेरहमी पर! मैंने सैकड़ों आदमियों की वहाँ बलि दी, सैकड़ों का सहारा छीन लिया। बादशाह हूँ, तो ताजमहल बनवा सकता हूँ। पर मुझे क्या हक़ था कि किसी ग़रीबिन का सहारा छीनूँ, किसी बच्चे को

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बेवालिद कर दूं और किसी पति को पत्नी से अलग कर दूं? मुझे इसका हक़ नहीं था, हरगिज़ नहीं था। करो दीवारें ऊँची! मैं उस पाक जगह को देखने के काबिल भी नहीं। यहीं मुझे घुट-घुटकर मरने दो, जो मैंने किया उसे भोगने दो। मैं बंदी हूँ। हाँ, मुझे बन्दी ही होना चाहिए।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कठिन-शब्दार्थ

1. प्रथम दर्शन

चंपारन - बिहार का एक ज़िला
मोतीहारी - चंपारन ज़िले का एक प्रमुख नगर
नोच-खसोट - लूटपाट
सुनवाई - hearing of a law-suit
स्थगित - postponed
गाढ़ा - एक तरह का मोटा कपड़ा
पाश - फंदा, बंधन
निर्निमेष - टकटकी लगाये
प्रत्युत्तर - उत्तर का उत्तर
यातना-गृह - वह घर जिसमें तरह-तरह की यातनाएँ दी जाती हैं
ज़मानत - security
साँप-छछून्दर की गति होना - द्विविधा या उधेड़बुन की स्थिति में होना
आलीशान - शानदार
तानपूरा - एक तंतुवाद्य
वायसराय - गवर्नर जनरल
बयान - statement
टोली - दल, झुंड
रिहाई - मुक्ति
निलहे गोरे - चंपारन ज़िले में नील की खेती और उद्योग पर पहले जिस अंग्रेज़ों का आधिपत्य था, वे 'निलहे गोरे' कहे जाते थे। उनके अत्याचारों से जनता को मुक्ति दिलाने के लिए ही गांधीजी ने वहाँ सत्याग्रह का आंदोलन चलाया था।

2. जीवन-झांकी

नित्य-नैमित्तिक - प्रतिदिन नियमित रूप से किये जानेवाले कार्य
विद्यमान - मौजूद
विडंबना - उपहास का विषय
बुनकर - जुलाहा
उत्पादक - पैदा करनेवाला
दुर्दमनीय - जिसे दबाना या रोकना मुश्किल हो
अस्पृश्यता निवारण - छुआछूत की भावना को दूर करना
सहूलियत - सुविधा
उन्मुक्त - खुला हुआ, रुकावट या बंधन रहित
सतत - हमेशा
मालिकी - स्वामित्व

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आहिस्ते-आहिस्ते-धीरे-धीरे

कट्टर सनातनी - पुराने विचारों के पक्के समर्थक

निवारण करना - दूर करना

आश्रयस्थल - आधार या शरण मिलने की जगह

अनुपयुक्त - अयोग्य

त्यागपत्र - इस्तीफ़ा

इजाज़त - अनुमति

निष्ठा - श्रद्धा, विश्वास

बावजूद - होने पर भी, होते हुए भी

अनुसरण - पीछे चलना, अनुकरण करना

परवानगी - आज्ञापत्र, आज्ञा

३. टाल्स्टाय फ़ार्म

अप्रिकाट, प्लम - फल-विशेष

तादाद - संख्या

कावड़ - काँवरी, बहँगी, बाँस का चौड़ा फट्टा जिसे कंधे पर रखकर दोनों ओर चीज़ें लटकायी और ढोयी जाती हैं ।

ख़ासा - काफ़ी अच्छा

बढ़ईख़ाना - जहाँ लकड़ी का काम होता हो

मोचीख़ाना - जहाँ चमड़े का काम होता हो

मांसाहार - मांस खाना

निरामिषभोजी - मांसादि न खानेवाला, vegetarian

संकटापन्न - विपदग्रस्त

पाकशाला - रसोईघर

धनाभाव - धन का न रहना, ग़रीबी

बारी - मज़दूरिन

बारिश - वर्षा, बरसात

श्रीगणेश - प्रारंभ

तंबू - शिबिर, tent

बनिस्बत - अपेक्षा

असबाब - सामान

यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार

आदी - अभ्यस्त

बलात्कार - ज़बरदस्ती, बलप्रयोग से

ऊधम मचाना - शोर करना, उपद्रव करना

कूड़ा-कचरा - रद्दी चीज़ें

जूठन - खाने के बाद छोड़ा हुआ भोजन

चौरस - समतल

स्वाश्रयी - अपने ऊपर निर्भर रहनेवाला

आबोहवा - जलवायु

मोज़े - stockings

कंटक-रक्षक - कांटों से रक्षा करनेवाला

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

खोजा - एक मुसलमानी जाति, जिसके लोग 'आगा खाँ' को अपने धार्मिक नेता मानते हैं।

अपरिग्रही - आवश्यकता से अधिक कुछ भी अपने पास न रखनेवाला

4. काशी नगरी

पतितपावनी - पतितों को पवित्र करनेवाली

टोप - लोहे की टोपी, शिरस्त्राण

कवच - लोहे के जाल की बनी हुई पोशाक, जिसे युद्ध के समय सैनिक पहना करते थे

अनायास - बिना विशेष श्रम या प्रयत्न के

परकोटा - नगर के चारों ओर की दीवार

दोआब - दो नदियों के बीच की उपजाऊ भूमि

निपटारा - फ़ैसला

भाग फिरना - भाग्य का लौटना, अच्छे दिन आना

बोलबाला - मान-प्रतिष्ठा

बग़ावत - विद्रोह

अश्वमेध - एक प्रकार का यज्ञ

शुक-सारिका - तोता और मैना

कलस-कंगूर - भवन के ऊपर का हिस्सा, बुर्ज

अमन - चैन, शांति

अनीति - नीतिविरुद्ध काम, अन्याय

दीवानी - मंत्रित्व

मनमानी - जो जी में आए

5. राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद

मिलनसार - सबसे प्रेम के साथ मिलने-जुलनेवाले

दृढ़संकल्पी - वह आदमी, जो अपने संकल्प से डिगता नहीं है

ब्राह्म-मुहूर्त - रात का पिछला पहर

निवृत्त होना - निबटना

सूत्रयज्ञ - नियमपूर्वक चरखे पर सूत कातने का कार्य

गुनगुना - थोड़ा गरम (पानी)

गाम्भीर्य - गंभीरता

जीरादेई - राजेन्द्रबाबू के गाँव का नाम

नायकत्व - नेतृत्व

ध्यानस्थ - ध्यान में लीन

भाल - माथा, ललाट

रामधुन - राम-नाम का गान

गुरुतर - बहुत भारी

मुक्तकंठ से - खुलकर, ऊँची तथा स्पष्ट आवाज़ में

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मनपसन्द - मनचाही
शयन-कक्ष - सोने का कमरा

6. अमर लेखिका स्टो

दासत्व - गुलामी
माज़रा - हाल, घटना
अक्षय - नष्ट न होनेवाला
हृदयभेदक - मर्मस्पर्शी
उच्छेद - नष्ट करना, जड़ से उखाड़ना
प्रख्यात - मशहूर
गिलाफ़ - pillow-case
रजाई - quilt
किफ़ायतदार - कमख़र्ची से काम चलानेवाला
वज्राघात - कठोर आघात
अभिनन्दन - बधाई देना और प्रशंसा करना
अकाट्य - जिसे काटा नहीं जा सके

7. विनोबा की पदयात्रा

आत्मज - पुत्र
पड़ाव - मुकाम, camp
श्रमनिष्ठ - परिश्रम में विश्वास रखनेवाला
कष्टसहिष्णु - कष्ट को सहन करनेवाला
नौसिखुआ - जिसने सीखना शुरू ही किया हो
कताई - सूत कातने की क्रिया
काला बाज़ार - black-market
दुर्जन - बुरा आदमी
कांचन - सोना
भान - ज्ञान, अनुभव
पुनीत - पवित्र
दरमियान - बीच, भीतर
सहयात्री - साथ यात्रा करनेवाला
ख़ानदान - वंश
पाशविक - पशु-संबंधी
अघटनीय - न हो सकने योग्य
ख़्वाब - स्वप्न
द्वैत - भेदभाव, दो होने का भाव
रूढ़िप्रियता - पुराने ख़्यालों को पसंद करना

8. पौधे हमसे अधिक बुद्धिमान

आविष्कृत - आविष्कार किया हुआ
वर्तमान - मौजूदा
जीवनचर्या - जीने का ढंग
बरबस - ज़बरदस्ती
चर - चरनेवाला
उद्भिज्ज - पेड़-पौधे
शोध - खोज, research
अन्यान्य - दूसरे
उद्गम-स्थान - निकलने की जगह

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निर्विघ्न - बाधारहित
पूर्णरूपेण - पूरी तरह से
अभिज्ञ - जाननेवाला
वनस्पति-विज्ञान - botany
अनभिज्ञ - अनजान
उपलब्ध - प्राप्त
मितव्ययिता - कमख़र्ची
परत - तह, स्तर
नस्ल - जाति
तिक्तता - कड़ुवापन
जीवंत - जीवित, सजीव
त्वचा - चर्म
चिन्तनशील - सोचने-विचारनेवाला

9. नागरिकों के मूल अधिकार

कारोबार - कामकाज
संविधान - constitution
मनाही - रोक, निषेध
ख़िताब - उपाधि
उच्चतम न्यायालय - supreme court
रद्द - cancelled

10. भारत एक है

विविधता - अनेकता
कामयाबी - सफलता
टिकाऊ - काफ़ी समय तक बना रहनेवाला
अजनबी - अपरिचित
अकाल - दुर्भिक्ष
तहज़ीब - संस्कृति
लिबास - पोशाक
भागीदार - हिस्सेदार

11. सिन्दरी

भुखमरी - दुर्भिक्ष, अन्नाभाव के कारण भूखों मरना
रासायनिक - chemical
खाद - manure
उत्पादन - production
औसत - average
औद्योगीकरण - industrialisation
गौण - अप्रधान
गंधक - sulphur
सूत्रपात - किसी कार्य का आरंभ
संगृहीत - संग्रह किया गया
गोबर - cow-dung
खली - oil-cake

12. चरित्र संगठन

वांछनीय - desirable
कर्तव्यपरायण - कर्तव्य का पालन करनेवाला
स्नायु - नाड़ी

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

प्रौढ़ावस्था - जवानी और बुढ़ापे के बीच की अवस्था

पथप्रदर्शक - राह दिखानेवाला

बाल्यावस्था - शैशव, बचपन

निरभिमान - अभिमानरहित

उत्थान - उन्नति, ऊपर की ओर उठना

श्लाघनीय - प्रशंसा के योग्य

स्वत:सिद्ध - जिसके लिए किसी बाहरी प्रमाण की आवश्यकता नहीं हो

चिरस्थायी - बहुत दिनों तक बना रहनेवाला

सगौरव - गौरव के साथ

धनाढ्य - धनी

दैवी प्रभा - दिव्य ज्योति

अनुपात - proportion

उपकृत - जिसका उपकार किया गया हो

अनुपकार - उपकार का उलटा, अहित

स्वकर्तव्य - अपना कर्तव्य

च्युत होना - अपनी जगह से हटना या गिरना

विज्ञ - विद्वान

सहकारिता - co-operation

वृथाभिमान - व्यर्थ का अभिमान

मनसा-वाचा-कर्मणा - मन, वचन और कर्म से

आरूढ़ रहना - दृढ़ होकर जमा रहना

13. नमक का दारोगा

दारोगा - inspector

ईश्वरदत्त - भगवान का दिया हुआ

निषेध - मनाही

पौ बारह - फ़ायदा ही फ़ायदा

बरकन्दाज़ी - पहरेदारी, सिपाहीगिरी

करारा - नदी का ऊँचा और सीधा किनारा

मालिक-मुख़्तार - सर्वेसर्वा, पूरा अधिकारी

ओहदा - पद

बरक़त - वृद्धि, बढ़ती

आचार - चाल-चलन, आचरण

गोलमाल - गड़बड़ी

वरदी - uniform

तमंचा - पिस्तौल

क़तार - पंक्ति

चलता-पुरजा - चालाक, व्यवहार-कुशल

सदाव्रत - अन्नदान का व्रत

लिहाफ़ - मोटी रजाई

नमक़हराम - मालिक के साथ छल करनेवाला

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हिरासत - क़ैद
क़ायदा - नियम
स्तम्भित - स्तब्ध
साभिमान - अभिमान के साथ
कातर - अधीर, व्यग्र
अमला - कर्मचारीगण
असाध्य-साधन करना - असम्भव को भी सम्भव करना, मुश्किल को भी सरल बनाना
अनन्य - अद्‌वितीय
वाचालता - भाषण देने की शक्ति
डाँवाडोल - अस्थिर
तजवीज़ - फ़ैसला, निर्णय
निर्मूल - बिना जड़ का, आधार रहित
भ्रमात्मक - भ्रम पैदा करनेवाला
अविचार - नासमझी
भलेमानस - gentleman
महकमा - विभाग
नमकहलाली - स्वामी के प्रति वफ़ादार रहना
मुअत्तली - suspension
परवाना - आज्ञापत्र
कुड़बुड़ाना - भीतर ही भीतर झुंझलाना
कलार - शराब बेचनेवाली एक जाति
अकारथ - व्यर्थ
पछहिया - पश्चिम का
अगुआनी - आगे चलकर स्वागत करना
लल्लोचप्पो - खुशामद, चापलूसी
कुलतिलक - वंश का गौरव
धर्मपरायण - धर्मानुसार आचरण करनेवाला
ठकुरसुहाती - चापलूसी की बातें
बेड़ी - पाँवों को बाँधनेवाले ज़ंजीर
बेमुरौवत - अनुदार

14. हमारी ताक़त और ज़िम्मेवारियाँ

तारीख़ - इतिहास, दिनांक
आरज़ू - इच्छा, चाह
जद्‌दोजहद - आंदोलन, दौड़-धूप
रूहानी - आत्मिक
मिसाल - उदाहरण
लफ्ज़ - शब्द
मिल्लत - एकता, मेल
जाया करना - नष्ट करना
ग़फ़लत - असावधानी
बुनियादी - fundamental
महज़ - सिर्फ़
फ़र्ज़ - कर्तव्य
उसूल - सिद्‌धांत

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

महरूम - वंचित
किश्ती - नाव
अन्दरूनी - भीतरी
तगड़ा - मज़बूत
फ़रिश्ता - देवदूत
गद्दारी - विश्वासघात
अमन - शांति
जिहालत - अज्ञान
हलक़ा-हलक़ा - इलाक़ा-इलाक़ा
सियासी - राजनीतिक
बाज़ - कोई-कोई
बशर्ते कि - इस शर्त के साथ कि
अपाहिज - निकम्मा, अकर्मण्य
ज़ाब्ते से - क़ायदे से, नियम के अनुसार
नुक्ताचीनी - दोष निकालना
बेशुमार - असंख्य
तजुर्बा - अनुभव
काबिलियत - योग्यता
दौलतमंद - संपत्तिशाली
बाहुबल - भुजबल, पुरुषार्थ
तर्ज़ - ढंग
ख़्यालात - विचार
फावड़ा - कुदाली, spade
हश्र - प्रलय, मुसलमानी विश्वास के अनुसार सृष्टि का वह दिन जब हर जीव के अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा-जोखा होता है।
इतमीनान - विश्वास
इक़रार लेना - प्रतिज्ञा करना या वचन देना
कुर्बानी - बलिदान
अमन-पसंद - शांतिप्रिय
माना - अर्थ
फ़तह करना - जीतना
हमसफ़र - सहयात्री, साथ चलनेवाला

15. एक कुत्ता और एक मैना

क्षीणवपु - दुर्बल शरीरवाला
प्रगल्भ - ढीठ, धृष्ट, बातचीत में चतुर
भीत - डरा हुआ
अस्तगामी - अस्त होनेवाला
ध्यानस्तिमित - ध्यानमग्न
परितृप्ति - पूर्ण तृप्ति या संतोष
तितल्ला - तीसरी मंज़िल (मकान की)
सर्वव्यापक - सब जगह रहनेवाला
बाध्य - विवश
यूथभ्रष्ट - सजातीय दल से निकाला हुआ
अनुकंपा - हमदर्दी, सहानुभूति
अम्बार - ढेर
विजयोद्घोषी - विजय की घोषणा करनेवाला

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बिडाल - बिलाव, he-cat
सेमल - silk-cotton
शिरीष - acacia tree

16. शेक्सपीअर के गाँव में

दुमंज़िला - दो मंज़िलोंवाला मकान
खपरैल - tiled
जुगाना - सँभालकर रखना
जीर्णता - शिथिलता
रंगमंच - stage
उद्धृत करना - to quote
बेलौस - सबसे अलग, खरा
सब्ज़ी - हरियाली
रंगामेज़ी - चित्रकारी
सपक्ष - पंखयुक्त
पर्यटक - यात्री, tourist
सूचनापट - notice-board
लखनदेई - बिहार की एक छोटी नदी
भरसाहा - किसी लटकती हुई चीज़ को गिरने से बचाने के लिए लगाया जानेवाला लोहे या लकड़ी का आधारस्तंभ
मसें भींगना - मूँछों का उगना
'गिरा अनयन, नयन बिनु वाणी' - वाणी की आँखें नहीं और आँखें वाणीरहित हैं (अर्थात् जो दृश्य दिखाई पड़ता है, वह वर्णनातीत है।)
सुखान्त - comedy

17. बन्दी

बुर्ज - मीनार, tower
खड्ड - गड्डा, खाई
अब्बाजान - पिताजी
तमीज़ - भले-बुरे की पहचान
हथियाना - अपने कब्ज़े में करना
हिमाक़त - नासमझी
क़हत - अकाल, दुर्भिक्ष
इमारत - भवन
मेह - मेघ
रिआया - प्रजा
रोज़ी - जीविका
औलाद - संतान, पुत्र
खुशहाल - संपन्न, सुखी
क़यामत - प्रलय, हश्र
अर्सा हो जाना - काफ़ी समय हो जाना
वाहियात - बेकार या बेहूदी (बात)
इत्तला - सूचना, ख़बर
हुनर - कारीगरी
इल्म - जानकारी, ज्ञान
गुस्ताख़ी - अशिष्टता
रुक्का - चिट्ठा, पुर्जा
बेरहम - निर्दय

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

काहे को - क्योंकर
मोहताज - चाह रखनेवाला, आश्रित
दीवानी-सी-पगली-सी
सूबेदार - गवर्नर, सूबे का शासक
तख़्त - सिंहासन
तमन्ना - कामना, इच्छा
बेसिर-पैर का - निराधार
शुबहा - शक, सन्देह
शिकस्त - हार, पराजय
गया-गुज़रा - ख़राब, निकृष्ट
भगदौड़ मचना - घबड़ाकर लोगों का इधर-उधर भागना
हिजड़ा - नपुंसक, क्लीब
कमीनापन - नीचता
अख़्तियार करना - ग्रहण करना, अपनाना
रोज़-ब-रोज़-दिन-प्रतिदिन
ज़ालिम - अत्याचारी, निर्दय
गवारा - रुचिकर
नज़ारा - दृश्य
बुत - प्रतिमा, मूर्ति
बुतपरस्ती - मूर्ति-पूजा
परस्त - पूजा करनेवाला
इबादतगाह - पूजा करने की जगह, मन्दिर
मकबरा - समाधि
मक्का - मुसलमानों का प्रसिद्ध तीर्थ
कम्बख़्त - अभागा
बेअदबी - अशिष्टता
सेहत - स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती
तौहीन - बेइज़्ज़ती, अप्रतिष्ठा
नज़रबन्द - जिसपर कड़ा पहरा हो
ग़मी - शोक के भाव
मलिका - साम्राज्ञी
बावजूद - इतना होने पर भी
नेस्तनाबूद - नष्ट
मज़ार - क़ब्र
सूबे-दक्खन - दक्षिण का प्रान्त
बहारे उम्र - जवानी
शक्लो-सूरत - मुखाकृति, रूप
कुदरतन - प्राकृतिक
परवाना - पतंग
चन्दा - चाँद
जिस्म - शरीर
रूह - आत्मा
महबूब - प्रेमी
सीकरी - आगरा के पास एक नगर
अरावली - राजस्थान की एक पहाड़ी
सदमा - चोट, आघात (हृदय का या मन पर)
पथरा जाना - पत्थर-जैसा हो जाना
अहमक़ - नासमझ

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ग़मग़ीन - दुखमय, शोकमय
पाक - पवित्र
इल्ज़ाम - आरोप, अभियोग
गारा - मिट्टी या चूने-सुर्खी आदि का लेप जिससे ईंटें जोड़-जोड़कर दीवार खड़ी की जाती है
दीवारें चुनना - ईंटों या पत्थरों को जोड़-जोड़कर दीवार खड़ी करना
तसल्ली - ढाढस, दिलासा
किलेदार - क़िले का प्रधान रक्षक
मुख़ालफ़त - विरोध
तहख़ाना - ज़मीन के नीचे बना कमरा
बग़ावत - विद्रोह
वहम - भ्रम
लियाक़त - योग्यता, सामर्थ्य
बरख़िलाफ़ - विरुद्ध
ख़ैरात - दान
मुमानियत - मनाही
फ़ख्र - अभिमान
यतीम - अनाथ

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras-17

GADYA-KUSUM-2

PRICE Rs. 2-50

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri